

परिमहण सं० 12.380

प्रम्थालय, के व ति रि। संस्थान

सारनाम, बारामसी



TO

HIS HOLINLSS SRI JAGADCURU
SRI SACHCHIDANANDA SIVABHINAVA

NRISIMHA BHARATI SWAMI

WHO ADORNS THE THRONE OF THE SRINGERI MUTT

18 THE WORTHY RI PRESENTALIVE OF THE

( RFA1 SANKARACH \R\ A

THAN WHOM IT IS IMPOSSIBLE

TO COMP ACROSS A HOLIER PERSONAGE

A TRUER MAHATMA A NOBLER SAINT

AND A MORF RICOROUS ASCITIC

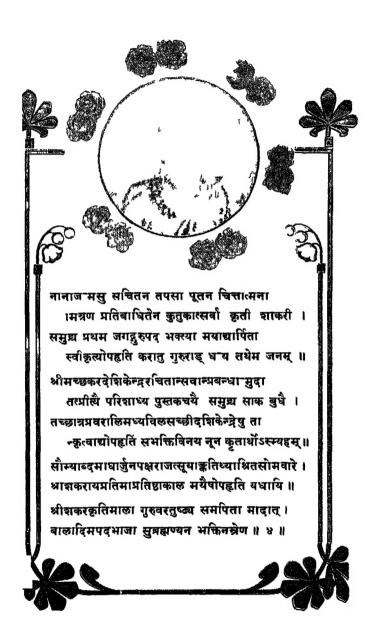
THIS POITION IS MOST RESIFCTFULIN INSCRIBED

15 A TOKEN OF UNBOUNDED ADMIRATION

BY THE HUMPLLST OF THE HIS DISCIPLES

T K BALASUBRAHMANYAM

ţ





	PAGE
Vishnu Ştotras	1
Miscellaneous Stotras	70
LALITA TRISATISTOTRA BHASHYA	161

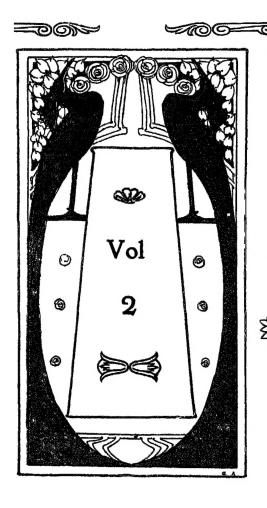




	वृष्ठम्
विष्णुस्तोत्राणि	8
सकीर्णस्तोत्राणि	৬০
ललितात्रिशतीस <del>्तो</del> त्रभाष्यम्	१६१







### ॥श्री॥

# ॥ विषयातुक्रमणिका ॥



	पृष्ठम्
<b>इ</b> नुमत्प <b>ञ्चरत्न</b> म्	8
श्रीरामभुजगप्रयातस्तोत्रम्	3
<b>लक्ष्मीनृसिंहपश्चरत्नम्</b>	११
<b>लक्ष्मीनृ</b> सिंहकरणारसस्तोत्रम्	१३
श्रीविष्णुभुजगप्रयातस्तोत्रम्	86
विष्णुपादादिकेशान्तस्तोत्रम्	२२
पाण्डुरङ्गाष्टकम्	३६
अच्युताष्ट्रकम्	३९
कृष्णाष्ट्रकम्	४२
हरिस्तुति	<b>ઝ</b> ५
गोविन्दाष्टकम्	५६
भगवन्मानसपूजा	49
मोह्मुद्गर	६२
कनकथारास्तोत्रम्	90
अञ्जपूर्णीष्टकम्	७५

### [ २ ]

मीनाक्षीप अवरत्नम्	७९
मीनाक्षीस्तोत्रम्	68
दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्	<b>78</b>
कालभैरवाष्ट्रकम्	19
नर्भदाष्ट्रकम्	९२
यमुनाष्ट्रकम्	९५
यमुनाष्ट्रकम्	96
गङ्गाष्ट्रकम्	१०१
मणिकर्णिकाष्टकम्	१०४
निर्गुणमानसपूजा	१०७
प्रात स्मरणस्तोत्रम्	११२
जगन्नाथाष्ट्रकम्	११४
षद्पदीस्तोत्रम्	११७
भ्रमराम्बाष्टकम्	११९
शिवपश्चाक्षरनक्षत्रमाळास्तोत्रम्	१२२
द्वादशिक्ष्यस्तोत्रम्	१३०
अर्धनारीश्वरस्तोत्रम्	१३४
शारदाभुजगप्रयाताष्ट्रकम्	१३७
गुर्वष्टकम्	१४०
काशीप अकम्	१४३





॥ श्रीमहाविष्णुः ॥

### ॥ हनुमत्पञ्चरत्नम् ।

Sourshunker Saneriwala वीताखिलविषयेच्छ जातानन्दाश्चपुलकमसच्छम् । स्रीतापतिदृतास

वातात्मजमच भावये हृखम् ॥ १ ॥

तदगारुणमुखकमल करुणारसपूरपूरितापाङ्गम् । सजीवनमाशासे मञ्जूलमहिमानमञ्जनाभाग्यम् ॥ २

शम्बरवैरिशरातिगसम्बुजदछविपुछछोचनोदारम् ।
कम्बुगछमनिछदिष्ट
बिम्बज्बछितोष्टमेकमवछम्बे ॥ ३ ॥
व व मा 1

दूरीकृतसीतार्ति

प्रकटीकृतरामवैभवस्फूर्ति ।
दारितदशमुखकीर्ति

पुरतो मम भातु इनुमतो मूर्ति ॥ १ ॥

वानरनिकराध्यक्ष दानवकुळकुमुदरविकरसदक्षम् । दीनजनावनदीक्ष पवनतप पाकपुर्जमद्राक्षम् ॥ ५ ॥

एतत्पवनसुतस्य स्तोत्र य पठति पश्चरत्नास्यम्। चिरमिह निस्तिछान्भोगा न्युक्कत्वा श्रीरामभक्तिभाग्भवति ॥ ६ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ हनुमत्पच्चरत्न सपूर्णम् ॥

#### ॥ श्री ॥

# ॥ श्रीरामभृष्टंग्रह्थातस्तोतम् ॥

विशुद्ध पर सिंबदानन्दरूप
गुणाधारमाधारहीन वरेण्यम् ।
महान्त विभान्त गुहान्त गुणान्त
मुखान्त स्वय धाम राम प्रपने ॥ १ ॥

शिव नित्यमक विभु तारकाख्य

सुखाकारमाकारशून्य सुमान्यम् ।

महेश कलेश सुरेश परेश

नरेश निरीश महीश प्रपद्ये ॥ २ ॥

यदावर्णयत्कर्णमूळेऽन्तकाळे शिवो राम रामेति रामेति काश्याम् । तदेक पर तारकन्नद्यरूप भजेऽह भजेऽह भजेऽह भजेऽहम् ॥ ३ ॥ महारत्नपीठे शुभे कल्पमूछे

सुखासीनमादिसकोटिप्रकाशम् ।

सदा जानकीलक्ष्मणोपेतमेक

सदा रामचन्द्र भजेऽह्म् ॥ ४ ॥

कणद्रत्नमः जीरपादारविन्द लसन्मेखलाचारुपीताम्बराह्यम् । महारत्नहारोलसस्कौस्तुभाङ्गः । नद्वश्वरीमः जरीलोलमालम् ॥ ५ ॥

खसबन्द्रिकास्मेरकोणाधराभ समुद्यत्पतङ्गन्दुकोटिप्रकाशम् । नमद्भग्रद्यादिकोटीररज्ञ स्फुरत्कान्तिनीराजनाराधिताङ्घिम् ॥ ६ ॥

पुर प्राचालीनाक्षनेयादिभक्ताः

न्खिचिन्मुद्रया भद्रया बोधयन्तम् ।

मजेऽह भजेऽह सदा रामचन्द्र

त्वदन्य न मन्ये न मन्ये न मन्ये ॥ ७॥

यदा मत्समीप क्रतान्त समेख प्रचण्डप्रकोपैभेटैर्भीषयेन्माम् । तदाविष्करोषि त्वदीय स्वरूप सदापत्प्रणाश सकोदण्डवाणम् ॥ ८ ॥

निजे मानसे मन्दिरे सनिधेहि
प्रसीद प्रसीद प्रभी रामचन्द्र ।
ससौमित्रिणा कैकयीनन्दनेन
स्वशक्यानुभक्या च समेठ्यमान ॥ ९ ॥

स्वभक्ताप्रगण्ये कपीशैर्महीशैरनीकैरनकैश्च राम प्रसीद ।
नमस्ते नमोऽस्त्वीश राम प्रसीद
प्रशाधि प्रशाधि प्रकाश प्रभो माम् ॥ १०॥

त्वमेवासि दैव पर मे यदेक

सुचैतन्यमेतत्त्वदन्य न मन्ये ।

यतोऽभूदमेय वियद्वायुतेजो

जलोठर्योदिकार्य चर चाचर च ॥ ११॥

नम सिदानन्दरूपाय तस्मै नमो देवदेवाय रामाय तुभ्यम् । नमो जानकीजीवितेशाय तुभ्य नम पुण्डरीकायताक्षाय तुभ्यम् ॥ १२ ॥

नमो भक्तियुक्तानुरक्ताय तुभ्य नम पुण्यपुश्चैकलभ्याय तुभ्यम्। नमो वेदवेद्याय चाद्याय पुसे नम सुन्दरायेन्दिरावल्लभाय ॥ १३ ॥

नमो विश्वकर्त्रे नमो विश्वहर्त्रे नमो विश्वभोक्ते नमो विश्वमात्रे। नमो विश्वनेत्रे नमो विश्वजेत्रे नमो विश्वपित्रे नमो विश्वमात्र॥ १४॥

नमस्ते नमस्त समस्तप्रपञ्च
प्रभागप्रयोगप्रमाणप्रवीण ।
मदीय मनस्त्वत्पद्द्वन्द्वसेवा
विधातु प्रवृत्त सुचैतन्यसिद्धयै ॥ १५ ॥

शिलापि त्वदङ्घिश्वमासङ्गिरेणु प्रसादाद्धि चैतन्यमाधत्त राम । नरस्त्वत्पदद्वनद्वसेवाविधाना-त्सुचैतन्यमेतीति किं चित्रमत्त ॥ १६॥

पवित्र चरित्र विचित्र त्वदीय

नरा ये स्मरन्त्यन्वह रामचन्द्र ।

भवन्त भवान्त भरन्त भजन्तो

स्थान्ते कृतान्त न पश्यन्यतोऽन्ते ॥ १७ ॥

स पुण्य स गण्य शरण्यो ममाय

नरो वेद यो देवचूडामणि त्वाम् ।

सदाकारमेक चिदानन्दरूप

मनोवागगम्य पर धाम राम ॥ १८ ॥

प्रचण्डप्रतापप्रभावाभिभृत
प्रभूतारिवीर प्रभो रामचन्द्र ।
बद्ध ते कथ वर्ण्यतेऽतीव बाल्ये
यतोऽखण्डि चण्डीशकोदण्डदण्डम् ॥ १९ ॥

दशत्रीवसुम सपुत्र समित्र
सिरद्वर्गमध्यस्थरक्षोगणेशम् ।
भवन्त विना राम वीरो नरो वा
सुरो वामरो वा जयेत्कक्षिकोक्याम् ॥ २० ॥

सदा राम रामेति रामामृत ते
सदारामभानन्दानिष्यन्दकन्दम् ।
पिबन्त नमन्त सुदन्त हसन्त
हनूमन्तमन्तभेजे त नितान्तम् ॥ २१॥

सदा राम रामेति रामामृत ते
सदाराममानन्दनिष्यन्दकन्दम् ।
पिबन्नन्वह नन्वह नैव मृत्यो
विभेमि प्रसादादसादात्त्वैव ॥ २२ ॥

असीतासमेतैरकोदण्डभूषे

रसौमित्रिवन्धैरचण्डप्रतापे ।
अल्ड्रेशकालैरसुमीविमित्रै
ररामाभिधेयैरल दैवतैर्न ॥ २३ ॥

अवीरासनस्थैरचिन्मुद्रिकाळ्ये रभक्ताश्वनेयादितस्वप्नकाशै । अमन्दारमूलेरमन्दारमाले । ररामाभिधेयैरल दैवतैर्न ॥ २४ ॥

असिन्धुप्रकोपैरवन्यप्रतापै
रवन्धुप्रयाणैरमन्दस्मिताह्यै ।
अदण्डप्रवासैरखण्डप्रबोधै
ररामाभिधेयैरल दैवतैन ॥ २५ ॥

हरे राम सीतापते रावणारे खरारे मुरारेऽसुरार परेति । खपन्त नयन्त सदाकालमेव समालोकयालोकयाशेषबन्धो ॥ २६ ॥

नमस्ते सुमित्रासुपुत्राभिवन्दा
नमस्ते सदा कैकयीनन्दनेड्य ।
नमस्ते सदा वानराधीशवन्द्य
नमस्ते नमस्ते सदा रामचन्द्र ॥ २७ ॥

#### श्रीरामभुजक्रप्रयातस्तोत्रम् ।

80

प्रसीद प्रसीद प्रचण्डप्रताप
प्रसीद प्रसीद प्रचण्डारिकालः ।
प्रसीद प्रसीद प्रपन्नानुकिन्पन्
प्रसीद प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ॥ २८ ॥

भुजङ्गप्रयात पर वेदसार

मुदा रामचन्द्रस्य भक्त्या च नित्यम् ।

पठन्सन्तत चिन्तयन्स्वान्तरङ्ग

स एव स्वय रामचन्द्र स धन्य ॥ २९ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कतौ श्रीरामभुजङ्गप्रयातसोत्रम् सपूर्णम् ॥



#### ॥ श्री ॥

# ॥ लक्ष्मीनृसिंहपञ्चरत्नम् ॥

त्वत्प्रभुजीविष्यिमिच्छिसि चेन्नरहिरिपूजा कुरु सतत प्रतिविम्बाङकृतिधृतिकुशलो विम्बालकृतिमातनुते। चेतोभृङ्ग भ्रमिस वृथा भवमरुभूमौ विरसाया भज भज लक्ष्मीनरसिंहानधपदसरसिजमकरन्दम्।।

बुक्ती रजतप्रतिभा जाता कटकाद्यर्थसमर्था चें दु खमयी ते सस्तिरेषा निर्वृतिदाने निपुणा स्यात् । चेतोभुक्क भ्रमसि वृथा भवमरुभूमौ विरसाया भज भज लक्ष्मीनरसिंहानघपदसरसिजमकरन्दम् ॥

आकृतिसाम्याच्छास्मि कुसुमे स्थलनि जन्दभममकरो गन्धरसाविह किसु विशेते विफल भ्राम्यसि भृशविरसेऽस्मिन्। चेतोभृक्क भ्रमसि वृथा भवमरूभूमौ विरसाया भज भज लक्ष्मीनरसिंहानघपदसरसिजमकरन्दम् ॥ ३ ॥ स्नक्चन्द्रनवनितादीन्विषयान् सुखदान्मत्वा तत्र विहरसे गन्धफळीसदृशा नतु तेऽमी भोगानन्तरदु खकृत स्यु । चेतोभुङ्ग भ्रमसि वृथा भवमकभूमौ विरसाया भज भज छक्ष्मीनरसिंहानघषद्वसरसिजमकरन्दम् ॥४॥

तव हितमेक वचन वक्ष्ये शृणु सुखकामो यवि सतत स्वप्ने दृष्ट सकल हि मृषा जामति च सार तद्वदिति । चेतोशृङ्ग भ्रमसि वृथा भवमरुभूमौ विरसाया भज भज लक्ष्मीनरसिंहानधपदसरसिजमकर्न्दम् ॥५॥

> इति श्रीमत्परमहसपरित्राजकाचायस्य श्रीगोविद्मगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ लक्ष्मीनृसिंहपश्चरत्न सपूर्णम् ॥



## ॥ लक्ष्मी चिसिंहकरुणारसस्तोत्रम् ॥

श्रीमत्पयोनिधिनिकेतनचक्रपाण भोगीन्द्रभोगमणिराजितपुण्यमूर्ते । योगीश शाश्वतः शरण्य भवाब्धिपोत छक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १ ॥

ब्रह्मेन्द्ररुद्रमरुद्किकिरीटकोटि सघटिताङ्ब्रिकमलामलकान्तिकान्त । लक्ष्मीलसत्कुचसरोरुह्रराजहस लक्ष्मीनृसिंह मम दहि करावलम्बम् ॥ २ ॥

ससारदावदहताकरभीकरोकज्वालावलीभिरतिदग्धतन्त्रहस्य ।
त्वत्पादपद्मसरसीकहमागतस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ३ ॥

ससारजारूपतितस्य जगित्रवास
् सर्वेन्द्रियार्थवाडिशाप्रझषे।पमस्य ।
प्रोत्कम्पितप्रचुरतालुकमस्तकस्य
लक्ष्मीनृसिंह् मम दृष्टि करावलम्बम् ॥ ४ ॥

ससारकूपमितघोरमागधमूल सप्राप्य दु खशतसपैसमाकुलस्य । दीनस्य देव कृपया पदमागतस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ५ ॥

ससारभीकरकरीन्द्रकराभिघात निष्पीड्यमानवपुष सकलार्तिनाश । प्राणप्रयाणभवभीतिसमाकुलस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ६ ॥

ससारसंपिववदिग्धमहोत्रतित्र दृष्ट्राप्रकोटिपरिदृष्टविनष्टमूर्ते । नागारिवाहन सुधाव्धिनिवास शौरे स्टब्सीनृसिंह मम देहि करावसम्बम् ॥ ७ ॥ ससारवृक्षमघबीजमनन्तकर्म-

शास्त्रायुत करणपत्रमनक्रपुष्पम् । ।
आरुद्य दु स्वफल्टित चिकत दयालो
लक्ष्मीनृसिंह सम देहि करावलम्बम् ॥ ८॥

ससारसागरविशालकरालकाल नकप्रहमसितनिमह्विष्ठस्य । ज्यमस्य रागनिचयोमिनिपीडितस्य लक्ष्मीनृसिंह् मम देहि करावलम्बम् ॥ ९ ॥

ससारसागरिनमज्जनसुद्धमान दीन विछोकय विभो करुणानिधे माम् । प्रह्कादखेदपरिहारपरावतार छक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावछम्बम् ॥ १०॥

ससारघोरगहने चरतो सुरारे मारोप्रभीकरसृगप्रचुरादितस्य । भार्तस्य मत्सरनिदाघसुदु खितस्य छक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावछम्बम् ॥ ११ ॥ बद्धा गले यमभटा बहु तर्जयन्त कर्षन्ति यत्र भवपाशशतैर्युत माम् । एकाकिन परवश चिकत दयालो लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १२ ॥

लक्ष्मीयते कमलनाभ सुरेश विष्णो यज्ञेश यज्ञ भधुसूदन विश्वरूप। ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव लक्ष्मीनृसिह मम देहि करावलम्बम् ॥ १३॥

एकेन चक्रमपरेण करेण शङ्खमन्येन सिन्धुतनयामवलम्ब्य तिष्ठन् ।
वामेतरेण वरदाभयपद्मचिह्न
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १४॥

अन्धस्य मे हृतविवेकमहाधनस्य चोरैर्महाबिलिभिरिन्द्रियनामधेये । मोहान्धकारकुहरे विनिपातितस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १५ ॥ प्रह्वादनारदपराश्चरपुण्डरीक-व्यासादिभागवतपुगवहृत्रिवास । भक्तानुरुक्तपरिपालनपारिजात लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १६ ॥

लक्ष्मीनृसिंहचरणाञ्जमधुत्रतेन स्तोत्र कृत ग्रुभकर भुवि शकरेण। ये तत्पठनित मनुजा हरिमक्तियुक्ता स्ते यान्ति तत्पदसरोजमखण्डरूपम्॥१७॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचायस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ स्वकृतिसहकरुणारसस्तोत्र सपूर्णम् ॥



### ॥ श्रीविष्णुभुजंगप्रयातस्तोत्रम् ॥

चिद्दश विभु निर्मेल निर्विकल्प निरीह निराकारमोंकारगम्यम् । गुणातीतमन्यक्तमेक तुरीय पर ब्रह्म य वेद तस्मै नमस्ते ॥ १ ॥

विशुद्ध क्षित्र शान्तमाद्यन्तशून्य
जगजीवन ज्योतिरानन्दरूपम् ।
अदिग्दशकालव्यवच्छद्नीय
त्रेयी वक्ति य वेद तस्मै नमस्तै ॥ १ ॥

महायागपीठे परिभ्राजमाने
धरण्यादितत्त्वात्मके शक्तियुक्त ।
गुणाहस्करे बह्निविम्बार्धमध्ये
समामीनमोंकर्णिकेऽष्टाक्षराज्जे ॥ ३ ॥

समानोदितानेकसूर्येन्दुकोटि-प्रभापूरतुल्यद्युति दुर्निरीक्षम् । न शीत न चाष्ण सुवर्णावदात-प्रसन्न सदानन्दसवित्स्वरूपम् ॥ ४ ॥

सुनासापुट सुन्दरभ्रू छलाट किरीटो चिताकु चितिकाग्धकेशम् । स्फुरत्पुण्डरीकाभिरामायताक्ष समुत्फु हरत्नप्रसूनावतसम् ॥ ४॥

खसत्कुण्डलामृष्टगण्डस्थलानत जपारागचोराघर चाहहासम् । अखिन्याकुलामोदिमन्दारमाछ महोरस्कुरत्कौस्तुभोदारहारम् ॥ ६ ॥

सुरत्नाङ्गदैरन्वित बाहुदण्डै-श्रदुर्भिश्चलकङ्कणालकृताप्रे । ददारीदरालकृत पीत्रवस पद्दहन्द्वनिर्धृतपद्माभिरामम् ॥ ७ ॥

#### श्रीविष्णुभुजगप्रयातस्तोत्रम् ।

20

स्वभक्तेषु सद्धिताकारमेव
सदा भावयन्सनिकद्धेन्द्रियाश्व ।
दुराप नरो याति ससारपार
परसमै परेभ्योऽपि तस्मै नमस्ते ॥ ८॥

श्रिया शातकुम्भद्युतिस्त्रिग्धकान्त्या धरण्या च दूर्वाद् छ श्यामलाङ्ग्या । कलत्रद्वयेनामुना तोषिताय विलोकीगृहस्थाय विष्णो नमस्ते ॥ ९ ॥

शरीर कलत्र सुत बन्धुवर्गं वयस्य धन सद्म भृत्य सुव च । समस्त परित्यस्य हा कष्टमेको ागिमध्यामि दुखेन दूर किल्लाहम् ॥ १०॥

जरेय पिशाचीव हा जीवतो मे
वसामित रक्त च मास बळ च ।
अहो देव सीदामि दीनानुकम्पि
निक्रमद्यापि इन्त त्वयोदासितव्यम् ॥ ११ ॥

कफव्याह्रतोष्णोल्बणश्वासवेग व्यथाविष्फुरत्सर्वमर्मास्थिबन्धाम् । विचिन्त्याहमन्त्यामसख्यामवस्था विभोमि प्रभो किं करोमि प्रसीद् ॥ १२ ॥

स्रपन्नच्युतानन्त गोविन्द विष्णो सुरारे हरे नाथ नारायणेति । यथानुसारिष्यामि भक्त्या भवन्त तथा मे दयाशील देव प्रसीद ॥ १३ ॥

भुजगप्रयात पठेशस्तु भक्त्या समाधाय चित्ते भवन्त मुरारे। स मोह विहायाशु युष्मत्प्रसादा त्समाश्रित्य योग ज्ञजलच्युत त्वाम्॥ १४॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभग वत्पूज्यपादिशाष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ श्रीविष्णुभुजगप्रयातस्तोत्र सपूर्णम् ॥

## ॥ विष्णुपादादिकेशान्तस्तोत्रम् ॥

लक्ष्मीभर्तुर्भुजामे कृतवसित सित यस्य रूप विशास्त्र नीलाद्रेस्तुङ्गशङ्कास्थितमिव रजनीनाथविम्ब विभाति । पायान्न पाञ्चजन्य स दितिस्रुतकुळत्रासने पूरयन्स्वे निध्वानैनीरदौषध्वनिपरिभवदैरम्बर कम्बुराज ॥ १ ॥

आहुर्यस्य स्वरूप क्षणमुखमिखल सूरय कालमेत ध्वान्तस्यैकान्तमन्त यदिप च परम सर्वधाम्रा च धाम । चक्र तक्कपाणेर्दितिजतनुगलद्रक्तधाराक्तधार श्रमनो विश्ववन्द्य वितरतु विपुल शर्म धर्मीशुशोभम् ॥

अव्यान्निर्घातघोरो हरिसुजपवनामर्शनाध्मातमूर्ते

रस्मान्त्रिस्मेरनेत्रत्रिदशतुतिवच साधुकारै सुतार ।
सर्वे सहर्तुमिच्छोररिकुछसुवन स्फारविष्फारनाद
सयत्कल्पान्तसिन्धौ शरसिछछघटावार्सुच कार्सुकस्य ॥

जीमूतद्यामभासा सुहुर्ए भगवद्वाहुना मोहयन्ती
युद्धेषूद्भ्यमाना झटिति तटिदिवाळक्ष्यते यस्य मृति ।
सोऽसिस्नासाकुळाक्षत्रिदशरिपुवपु शोणितास्वादतृप्तो
नित्यानन्दाय भूयान्मधुमथनमनोनन्दनो नन्दको न ॥

कन्नाकारा सुरारे करकमलतलेनानुरागाद्गृहीता सम्यग्वृत्ता स्थितात्र सपित् न सहते दर्शन या परेषाम् । राजन्ती दैस्रजीवासवमदसुदिता लोहितालेपनार्द्रा काम दीप्राञ्चकान्ता प्रदिशतु दियतेवास्य कौमोदकी न ॥

यो विश्वप्राणमृतस्तनुरिप च हरेर्यानकेतुस्वरूपो य सचिन्द्यैव सद्य स्वयमुरगवधूवर्गगर्भा पतन्ति। चश्चषण्डोरुतुण्डत्रुटितफणिवसारक्तपङ्काङ्कितास्य वन्दे छन्दोमय त स्वगपतिसमस्तर्भवर्णवर्ण सुपर्णम् ॥ ६॥

विष्णोविश्वेश्वरस्य प्रवरशयनकृत्सर्वलोकैकधर्ता सोऽनन्त सर्वभूत पृथुविमलयशा सर्ववेदैश्च वेदा । पाता विश्वस्य शश्वत्सकलसुररिपुध्वसन पापहन्ता सर्वज्ञ सर्वसाक्षी सकलविषभयात्पातु भोगीश्वरो न ॥ वाग्भूगौर्यादिभेदैविद्विरिह सुनयो या यदीयेश्च पुसा कारुण्याद्वें कटाक्षे सक्तदिप पतिते सपद स्यु समग्रा । कुन्देन्दुस्वच्छमन्दिसतमधुरसुखान्भोरुहा सुन्दराङ्गी वन्दे वन्नामशेषैरिप सुरभिदुरोमन्दिरामिन्दिरा ताम् ॥

या सूते सत्त्वजाल सकलमि सदा सनिधानेन पुसी धत्ते या तत्त्वयोगाश्वरमचरिमद भूतये भूतजातम् । धात्रीं स्थात्रीं जनित्रीं प्रकृतिमिवकृतिं विश्वशक्तिं विधासीं विष्णोविश्वात्मनस्ता विपुलगुणमर्यी प्राणनाथा प्रणीमि॥

येभ्योऽस्यद्भिष्यः सपदि पद्मुक लज्यते दैल्यवर्गे-र्येभ्यो धर्तु च मूर्फ्रो स्प्रह्यति सतत सर्वगीर्वाणवर्ग । नित्य निर्मूलयेयुर्निचिततरममी भक्तिनिन्नात्मना न पद्माक्षस्याङ्घिपद्मद्वयतलनिलया पासव पापपङ्कम् ॥

रेखा छेखादिवन्याश्चरणतलगताश्चक्रमत्स्यादिक्तपा हिनग्धा सूक्ष्मा सुजाता मृदुललिततरश्चौमसूत्रायमाणा । दशुनों मङ्गलानि भ्रमरभरजुषा कोमलेनाव्धिजाया कभ्रेणाम्नेड्यमाना किसलयमृदुना पाणिना चक्रपाणे ॥ यस्मादाकामतो द्या गरुडमणिशिलाकेतुदण्डायमाना दारच्योतन्ती बभासे सुरसरिदमला वैजयन्तीव कान्ता। भूमिष्ठो यस्तथान्यो भुवनगृहबृहत्सम्भशोभा दधौ न पातामेतौ पयोजोदरललिततलौ पङ्कजाक्षस्य पादौ॥

आक्रामद्भया त्रिलोकीमसुरसुरपती तत्क्षणादेव नीतौ याभ्या वैरोचनीन्द्रौ युगपदिष विषत्सपदोरेकधाम । ताभ्या ताम्रोदराभ्या सुहुरहमजितस्याश्विताभ्यासुभाभ्या प्राज्येश्वर्यप्रदाभ्या प्रणतिसुपगत पादपङ्केरहाभ्याम् ॥

येभ्यो वर्णश्चतुर्थश्चरमत उद्भूदादिसग प्रजाना साहस्री चापि सरया प्रकटमभिहिता मर्ववेदेषु येषाम् । प्राप्ता विश्वभरा यैरतिवितततनोर्विश्वमूर्तेर्विराजो विष्णोस्तेभ्यो महत्त्व सततमिष नमोऽस्त्विङ्गपङ्केरुहेभ्य ॥

विष्णो पादद्वयात्रे विमलनखमणिश्राजिता राजते या राजीवस्येव रम्या हिमजलकणिकालकृतात्रा दलाली। अस्माक विस्मयाहीण्यखिलजनमन प्रार्थनीया हि सेय द्यादाद्यानवद्या ततिरतिरुचिरा मङ्गलान्यङ्कृलीनाम्।। यस्या द्रष्ट्वामलाया प्रतिकृतिममरा सभवन्त्यानमन्त सेन्द्रा सान्द्रीकृतेर्व्यास्त्वपरसुरकुलाशक्कयातक्कवन्त । सा सद्य सातिरेका सकलसुलकरीं सपद साधयेत्र अञ्चलार्वश्चका चरणनलिनयोश्चकपाणेर्नलाली ॥

पादाम्भोजन्मसेवासमवनतसुरब्रातभास्वत्किरीट-प्रत्युप्तोचावचादमप्रवरकरगणैश्चित्रित यद्विभाति । नम्राङ्गाना हरेनों हरिदुपल्लमहाकूर्मसौन्दर्यहारि-च्छाय श्रेय प्रदायि प्रपद्युगमिद प्रापारपापमन्तम् ॥

श्रीमसौ चारुवृत्ते करपरिमलनानन्दहृष्टे रमाया सौन्दर्याक्येन्द्रनीलोपलरचितमहादण्डयो कान्तिचोरे। सूरीन्द्रै स्तूयमाने सुरकुलसुखदे सूदितारातिसघे जङ्के नारायणीये सुदुरिप जयतामस्मदहो हरन्सौ।।

सम्यक्साह्य विधातु समीमव सतत जङ्क्यो खिन्नयोर्थे भारीभूतोद्दरण्डद्वयभरणकृतोत्तम्भभाव भजेते। चित्ताद्दी निधातु महितमिव सता ते समुद्रायमान वृत्ताकारे विधत्ता हृदि मुद्मजितस्थानिश जातुनी न ॥ देवो भीति विधातु सपिद विद्धतौ कैटभाख्य मधु चा प्यारोप्यारूढगर्वाविधजल्लिध ययोरादिदेखौ जघान । वृत्तावन्योन्यतुल्यौ चतुरमुपचय विभ्रतावभ्रनीला वृक्त चाक्त हरेस्तौ मुदमतिशयिनीं मानस नो विधन्ताम्॥

पीतेन योतते यचतुरपिरिहितेनाम्बरेणात्युद्रार जाताळकारयोग जलमिव जलधेर्बाडवाग्निप्रभाभि । एतत्पातित्यदान्नो जघनमतिघनाटेनसो माननीय सातत्येनैव चेतोविषयमवतरत्पातु पीताम्बरस्य ॥ २१ ॥

यस्या दाम्ना त्रिधामो जघनकालितया भ्राजतेऽङ्ग यथाब्धे-मध्यस्थो मन्दराद्रिभुजगपतिमहाभागसनद्धमध्य । काश्वी सा काश्वनाभा मणिवरिकरणैरुक्षसद्भि प्रदीप्ता कल्या कल्याणदात्री मम मतिमनिश कम्रुरूपा करोतु ॥

रज्ञम्र कम्रमुचैरुपचितमुद्दभ् चत्र पत्रैिविचित्रै
पूर्व गीर्वाणपूज्य कमळजमधुपस्यास्पद् तत्पयोजम् ।
यस्मिन्नीलाइमनीलैस्तरलहचिजलै पूरिते केलिबुद्धधा
नालीकाक्षस्य नाभीसरसि वसत् नश्चित्तहसश्चिराय ॥

### २८ विष्णुपादादिकेशा तस्तोत्रम् ।

पाताल यस्य नाल वलयमि दिशा पत्रपङ्किनेगेन्द्रा-न्विद्वास केसरालीविंदुरिह विपुला कर्णिका स्वर्णशैलम् । भूयाद्रायत्स्वयभूमधुकरभवन भूमय कामद् नो नालीक नाभिपद्माकरभवमुक तन्नागशय्यस्य शौरे ॥

आदौ कल्पस्य यस्मात्प्रभवति वितत विश्वमेतद्विकल्पै कल्पान्ते यस्य चान्त प्रविश्वति सकल स्थावर जङ्गम च । अत्यन्ताचिन्त्यमूर्तेश्चिरतरमजितस्यान्तरिक्षस्वरूपे तस्मित्रस्माकमन्त करणमतिमुदा क्रीडतात्कोडभागे ॥

कान्त्यम्भ पूरपूर्णे लसदसितवलीभङ्गभास्वत्तरङ्गे गम्भीराकारनाभीचतुरतरमहावर्तगोभिन्युदारे । कीडत्वानद्वहेमोदरनहनमहाबाडवाग्निप्रभाक्ये काम दामोदरीयोदरसलिलनिधौ चित्तमत्स्यश्चिर न ॥

नाभीनालीकमूलाद्धिकपरिमलोन्मोहितानामलीना माला नीलेव यान्ती स्फुरति रुचिमती वक्त्रपद्मोन्मुखी या। रम्या सा रोमराजिमहितरुचिकरी मध्यभागस्य विष्णो-श्चित्तस्था मा विरसीचिरतरमुचिता साधयन्ती श्रीय न ॥ सस्तिणि कौस्तुभाशुप्रसरिकसलयैर्मुग्धमुक्ताफलाट्य श्रीवत्सोझासि फुछप्रतिनववनमालाङ्कि राजद्भुजान्तम् । वक्ष श्रीवृक्षकान्त मधुकरिनकरक्यामल शार्क्कपाणे ससाराध्वश्रमार्तैकपवनमिव यत्सेवित तत्प्रपर्थे ॥ २८ ॥

कान्त वक्षो नितान्त विद्धिद्व गळ काळिमा काळशत्रो रिन्दोविन्व यथाङ्को मधुप इव तरोर्म आर्री राजत य । श्रीमान्नित्य विधेयादाविर छमिलित कौस्तुभश्रीप्रतानै श्रीवत्स श्रीपत स श्रिय इव द्यितो वत्स उसै श्रिय न ॥

सभूयाम्भोधिमध्यात्सपिद महजया य श्रिया सिनधत्ते नीले नारायणोर स्थलगगनतले हारतारोपसेव्ये । आशा सर्वा प्रकाशा विद्धद्पिद्धश्चात्मभासान्यतेजा स्याश्चर्यस्याकरो नो धुमणिरिव मणि कौस्तुभ सोऽस्तुभूत्ये॥

या वायावानुकूल्यात्सरित मणिरुचा भासमाना समाना साक साकम्पमसे वसित विद्धती वासुभद्र सुभद्रम् । सार सारङ्गसधैर्मुखरितकुसुमा मेचकान्ता च कान्ता माळा माळाळितास्मान विरमतु सुखैर्योजयन्ती जयन्ती॥ हारस्योष्ठप्रभामि प्रतिनववनमाळाशुभि प्राशुक्ते श्रीभिश्चाप्यक्कदाना कबळितक्षचि यक्तिष्कभाभिश्च भाति। बाहुल्येनैव बद्धाश्वळिपुटमजितस्याभियाचामहे त द्वन्धार्ति बाधता नो बहुविहतिकरीं बन्धुर बाहुमूळम्॥

विश्वत्राणैकदीक्षास्तद्तुगुणगुणक्षत्रनिर्माणद्क्षा कर्तारो दुर्निरूपस्फुटगुणयशसा कर्मणामद्भुतानाम् । शाङ्गे बाण कृपाण फलकमरिगदे पद्मशङ्कौ सहस्र विश्राणा शस्त्रजाल मम द्वतु हर्र्बाह्वो मोहहानिम् ॥

कण्ठाकरपोद्गतैर्य कनकमयलस्कुण्डलोत्थेशदारे रह्योते कौरतुभस्याप्युरुभिरुपचितश्चित्रवर्णो विभाति । कण्ठाश्लेषे रमाया करवलयपदेर्भुद्रिते भद्ररूपे वैकुण्ठीयेऽत्र कण्ठे वसतु मम मति कुण्ठभाव विहाय ॥

पद्मानन्दप्रदाता परिलसद्रुणश्रीपरीताप्रभाग काले काले च कम्बुप्रवरश्रशधरापूरणे य प्रवीण । वक्काकाशान्तरस्थास्तिरयति नितरा दन्ततारीयशोभा श्रीभर्तुदेन्तवासोसुमणिरघतमोनाशनायास्त्वसौ न ॥ नित्य स्नेहातिरेकािन्नजकिमतुरस्य विप्रयोगाक्षमा या वक्त्रेन्दोरन्तरास्त्रे कृतवसितिरवाभाति नक्षत्रराजि । स्रक्ष्मीकान्तस्य कान्ताकृतिरतिविस्त्रसम्ग्रुग्धमुक्तावस्त्रिश्री-र्दन्तास्त्री सतत सा नितनुतिनिरतानक्षतान्रक्षतात्र ॥

त्रह्मन्त्रह्मण्यजिद्धा मितमिप कुरुषे देव सभावये त्वा शभो शक त्रिलोकीमवसि किममरैर्नारदाद्या सुख व । इत्थ सेवावनम्र सुरमुनिनिकर वीक्ष्य विष्णो प्रसन्न स्थास्येन्दोरास्रवन्ती वरवचनसुधाह्वाद्येन्मानस न ।।

कर्णस्थस्वर्णकम्रोज्ज्वस्नमकरमहाकुण्डस्त्रपोतदीय्य न्माणिक्यश्रीप्रताने परिमिस्तितमस्त्रियामस्त्र कोमस्य यत्। प्रोचत्सूर्यीशुराजन्मरकतमुकुराकारचोर मुरारे गाँढामागामिनीं न शमयतु विपद गण्डयोर्मण्डस्त्र तत्॥

वक्क्षाम्भोजे छसन्त मुहुरघरमणि पक्कविम्बाभिराम दृष्ट्वा दृष्ट्व सुकस्य स्फुटमवतरतस्तुण्डदण्डायते य । घोण शोणीकृतात्मा श्रवणयुग्गछसत्कुण्डलोस्त्रेर्भुरारे प्राणाल्यस्यानिकस्य प्रसरणसर्णि प्राणदानाय न स्यात् ॥ दिकालौ वेदयन्तौ जगित मुहुरिमौ मचरन्तौ रवीन्दू त्रैलोक्यालोकदीपावभिद्यति ययोरेव रूप मुनीन्द्रा । अस्मानब्जप्रभे ते प्रचुरतरक्रपानिर्भर प्रेक्षमाणे पातामाताम्रशुक्रासितरुचिरुचिरे पद्मनेत्रस्य नेत्रे ॥४०॥

पातात्पातालपातात्पतगपतिगते भ्रूयुग सुग्नमध्य येनेषचालितेन स्वपदानियमिता सासुरा देवसथा । नृत्यक्षालाटरङ्गे रजनिकरतनारर्धसण्डावदाते कालव्यालद्वय वा विलमति समया वालिकामातर न ॥

ळक्ष्माकारालकालिस्फुरदिलकश्चशाङ्कार्धसदर्शमील-नेत्राम्भोजप्रवोधोत्सुकिनभृततरालीनभृङ्गच्छटाभ । लक्ष्मीनाथस्य लक्ष्यीकृतविबुधगणापाङ्गबाणासनार्ध-च्छाये नो भूरिभूतिप्रमवकुशलते भ्रूलते पालयेताम् ॥

रूथसारश्चचापच्युतशरितकरश्चीणलक्ष्मीकटाश्च-प्रोत्फुल्जत्पद्ममालाविलसितमहितस्फाटिकेशानलिङ्गम । भूयाद्भूयो विभूले मम सुवनपतेभ्रूलताहुन्ह्यमध्या दुत्थ तत्पुण्ड्रमूर्ध्व जनिमरणतम खण्डन मण्डन च ॥ पीठीभूतालकान्त कृतमकुटमहादेवलिङ्गप्रतिष्ठे लालाटे नाट्यरङ्गे विकटतरतटे कैटभारेश्चिराय। प्रोद्धाट्यैवात्मतनद्रीप्रकटपटकुटी प्रस्फुरन्ती स्फुटाङ्ग पट्टीय भावनारया चटुलमितनटी नाटिका नाटयेल ॥

मालालीवालिधाम कुवलयकिता श्रीपते कुन्तलाली कालिन्द्याक्द्य मूर्झो गलित हरिशर स्वर्धुनीस्पर्धया नु । राहुर्वा याति वक्त्र सकलकाशिकलाभ्रान्तिलोलान्तरात्मा लोकैरालोक्यते या प्रदिशतु मतत साखिल मङ्गल न ॥

सुप्ताकारा प्रसुप्ते भगवति विबुधैरप्यदृष्टस्वरूपा व्याप्तव्योमान्तरालास्तरलमणिकचा रिक्तिता स्पष्टभास । देहच्छायोद्गमाभा रिपुवपुरगरुप्तोषरोषाप्तिधून्या केशा केशिद्विषो नो विद्धतु विपुलक्षेत्रशाशप्रणाशम्॥

यत्र प्रत्युप्तरत्नप्रवरपरिलसद्भृरिरोचिष्प्रतानस्फूर्त्यी मूर्तिर्भुरारेर्धुमणिशतचितन्योमवहुर्निरीक्ष्या ।
कुर्वत्पारेपयोधि ज्वलदकुशशिखामास्वदौर्वाग्निशक्का
शश्वत्र शर्म दिश्यात्कलिकलुषतम पाटन तरिकरीटम् ॥

s s II 3

भ्रान्त्वा भ्रान्त्वा यदन्तिस्भुवनगुरुर् यब्दकोटीरनेका गन्तु नान्त समर्थो भ्रमर इव पुनर्नीभनाळीकनाळात्। उन्मज्जन्नूर्जितश्रीक्षिभुवनमपर निममे तत्सदृक्ष देहाम्भोधि म देयान्निरवधिरमृत दैत्यविद्वेषिणो न ॥

मत्स्य कूर्मो वराहो नरहरिणपतिवामनो जामदग्न्य काकुत्स्थ कसघाती मनसिजविजयी यश्च कल्किभैविष्यन्। विष्णोरशावतारा सुवनहितकरा धर्मसस्थापनाथा पायासुमी त एते गुरुतरकरुणाभारखिन्नाशया ये ॥४९॥

यस्माद्वाचो निवृत्ता सममिप मनसा लक्षणामीक्षमाणा म्वार्थीलाभात्परार्थव्यपगमकथनऋाधिनो वेदवादा । नित्यानन्द स्वसवित्रिरविधिवमलस्वान्तसक्रान्तिबम्ब च्लायापत्यापि नित्य सुरायित यिमनो यत्तद्व्यान्महो न ॥

आपादादा च शीर्षाद्वपुरिदमनघ वैष्णव य खचित्ते धत्ते नित्य निरस्ताखिलकलिकलुष सततान्त प्रमोदम् । जुह्बज्जिह्वाकुशानौ हरिचरितहवि स्तोत्रमत्रानुपाठै न्तत्पादाम्भोकहाभ्या सततमपि नमस्कुर्महे निर्मलाभ्याम् ॥ मोदात्पादादिकेशस्तुतिमितिरचिता कीर्तायित्वा त्रिधाम्न पादाब्जद्व-द्वसेवासमयनतमित्रमेस्तकेनानमेख । उन्युच्येवात्मनेनोनिचयकवचक पश्चतामेत्य भानो-विम्बान्तर्गोचर स प्रविशति परमानन्दमात्मस्वरूपम् ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ विष्णुपादादिकेशान्तस्तोत्र सपूर्णम् ॥



## ॥ पाण्डुरङ्गाष्टकम् ॥

महायोगपीठे तटे भीमरथ्या वर पुण्डरीकाय दातु मुनीन्द्रै । समागत्य तिष्ठन्तमानन्दकन्द परत्रहालिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ १ ॥

तिटद्वासस नीलमेघावभास रमामन्दिर सुन्दर चित्प्रकाशम् । वर त्विष्टकाया समन्यस्तपाद परब्रह्मालिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ २ ॥

प्रमाण भवाब्धेरिद मामकाना नितम्ब कराभ्या घृतो यन तस्मात्। विधातुर्वस्रत्यै घृतो नाभिकोश परब्रह्माळिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ३॥ स्फुरत्कीस्तुभालकृत कण्ठदेशे श्रिया जुष्टकेयूरक श्रीनिवासम् । शिव शन्तमीड्य वर लोकपाल परम्हालिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ४ ॥

शरबन्द्रविम्बानन चारुहास लक्षत्कुण्डलाकान्तगण्डस्थलान्तम् । जपारागविम्बाधर कश्वनेत्र परब्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ५॥

किरीटोज्ज्वलस्पर्वदिक्प्रान्तभाग सुरैरर्चित दिञ्यरत्नैरनर्चे । त्रिभङ्गाकृतिं वर्हमाल्यावतस परत्रद्वालेङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ६ ॥

विभु वेणुनाद चरन्त दुरन्त स्वय छीलया गोपवेष द्धानम् । गवा बृन्दकानन्दद् चारुहास परत्रह्मालिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ७ ॥ अज रुक्मिणीप्राणसजीवन त
पर धाम कैवल्यमेक तुरीयम्।
प्रसन्न प्रपन्नार्तिह देवदेव
परब्रह्मिलेक्न भजे पाण्डुरक्नम्॥ ८॥

स्तव पाण्डुरङ्गस्य वै पुण्यद् ये
पठन्त्येकचित्तेन भक्त्या च नित्यम् ।
भवाम्भोनिधि ते वितीर्त्वान्तकाळे
हरेराळय शाश्वत प्राप्नुवन्ति ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रामच्छकरभगवत कृतौ पाण्डुरङ्गाष्टक सपूर्णम् ॥



#### ॥ श्री ॥

## ॥ अच्युताष्ट्रकम् ॥

अन्युत केशव रामनारायण
कृष्णदामोदर वासुदेन हरिम् ।
श्रीधर माधव गोपिकावस्त्रभ
जानकीनायक रामचन्द्र भन्ने ॥ १ ॥

भच्युत केशव सत्यभामाधव माधव श्रीधर राधिकाराधितम् । इन्दिरामन्दिर चेतसा सुन्दर देवकीनन्दन नन्दज सदधे ॥ २ ॥

विष्णवे जिष्णवे शिक्किने चिक्किणे
रुक्मणीरागिणे जानकीजानये।
वह्नवीवह्नभायार्चितायात्मने
कसविष्यसिने विश्वने ते नम ॥ ३॥

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे। अन्युतानन्त हे माधवाधोक्षज द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक॥ १॥

राक्षसक्षोभित सीतया शोभितो दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणम् । छक्ष्मणेनान्वितो वानरै सेवितो ऽगस्यसपूजितो राघव पातु माम् ॥ ५ ॥

भेनुकारिष्टहानिष्टकृद्देषिणा केशिहा कसहद्वशिकावादक । पूतनाकापक सूरजाखलनो बालगोपालक पातु मा सर्वदा॥ ६॥

विद्युद्धयोतवत्प्रस्फुरद्वासस प्रावृद्धम्भोदवत्प्रोह्णसद्विप्रहम् । वन्यया मालया शोभितोर स्थल लोहिताड्बिद्वय वारिजाश्च भजे ॥ ७ ॥ कु चिते कुन्तलै भ्रांजमानानन रक्षमौलिं लसत्कुण्डल गण्डयो । हारकेयूरक कङ्कणप्रोड्डवल किंकिणीमञ्जल स्थामल त भने ॥ ८॥

भच्युतस्याष्ट्रक य पठेदिष्टद प्रेमत प्रत्यह पूरुष सस्प्रहम्। वृत्तत सुन्दर वेद्यविश्वभर तस्य वश्यो हरिजीयते सत्वरम् ॥ ९ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरित्रजकाचायस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ अच्युताष्टक सपूर्णम् ॥



#### ॥ श्री ॥

## ॥ कृष्णाष्ट्रकम् ॥

श्रियाश्चिष्टो विष्णु स्थिरचरगुक्वेदविषयो धिया साक्षी शुद्धो हरिरसुरहन्ताब्जनयन । गदी शङ्की चक्री विमलवनमाली स्थिरक्चि शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽश्चिविषय ॥१॥

यत सर्व जात वियद्गिलमुख्य जगदिद्
स्थितौ नि शेष योऽवति निजसुखाशेन मधुहा ।
लये सर्वे स्वस्मिन्ह्रति कलया यस्तु स विभु
शर्णयो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥२॥

असूनायम्यादौ यमनियमसुरयै सुकरणै निरुद्धथेद चित्त हृदि विखयमानीय सकलम् । यमीड्य परयन्ति प्रवरमतयो मायिनमसौ शरण्यो छोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥ पृथिन्या तिष्ठन्यो यमयित महीं वेद न घरा यमित्यादौ वेदो वदित जगतामीशममलम् । नियन्तार ध्येय मुनिसुरनृणा मोक्षदमसौ , शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽश्विविषय ॥

महेन्द्रादिरेंवो जयित दितिजान्यस्य बळतो न कस्य स्वातन्त्र्य कचिदिप कृतौ यत्कृतिमृते। बळारातेर्गर्व परिहरित योऽसौ विजयिन शरण्यो छोकेशो मम भवतु कृष्णोऽश्चिविषय।।

विना यस्य ध्यान ब्रजित पशुता सूकरमुखा विना यस्त्र ज्ञान जिनमृतिभय याति जनता । विना यस्त्र स्मृत्या कृमिशतजिन याति स विभु शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥६॥

नरातङ्कोटुङ्क शरणशरणो भ्रान्तिहरणो धनश्यामो वामो व्रजशिशुवयस्योऽर्जुनस्ख । स्वयभूर्भूताना जनक उचिताचारसुखद शरण्यो छोकेशो मम भवतु कृष्णोऽश्चिविषय ॥७॥ यदा धर्मग्छानिर्भवति जगता श्लोभकरणी तदा छोकस्वामी प्रकटितवपु सेतुधृदज । सता घाता स्वन्छो निगमगणगीतो व्रजपति शरण्यो छोकेशो मम भवतु कृष्णोऽश्लिविषय ॥८॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यंशदशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ कृष्णाष्टक सपूर्णम् ॥



#### ॥ श्री ॥

# ॥ हरिस्तुतिः ॥

स्तोध्ये भक्त्या विष्णुमनादिं जगदादिं यसिन्नेतत्ससृतिचक श्रमतीत्थम् । यसिन्दष्टे नश्यति तत्ससृतिचक त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १ ॥

यस्यैकाशादित्थमशेष जगदेतत्प्रादुर्भूत येन पिनद्ध पुनरित्थम् ।
येन व्याप्त येन विबुद्ध सुखदु सै
स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २ ॥

सर्वज्ञो यो यश्च हि सर्व सक्छो यो यश्चानन्दोऽनन्तगुणो यो गुणधामा। यश्चान्यक्तो न्यस्तसमस्त सदसद्य स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे॥ ३॥ आचार्येभ्यो लब्धसुसूक्ष्मान्युततत्त्वा वैराग्येणाभ्यासबलाचैव द्रिक्ता । भक्त्यैकाग्र्यभ्यानपरा य विदुरीश त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ५ ॥

प्राणानायम्योमिति चित्त हदि रुध्वा नान्यत्समृत्वा तत्पुनरत्रैव विलाप्य । क्षीणे चित्त भानशारस्मीति विदुर्थ त ससारध्वानतविनाश हरिमीडे ॥ ६॥

य ब्रह्माख्य देवमनन्य परिपूर्ण हत्स्थ भक्तैर्लभ्यमज सूक्ष्ममतक्यम् । ध्यात्वात्मस्थ ब्रह्मविदो य विदुरीश त ससारध्वानतविनाश हरिमीडे ॥ ७ ॥ मात्नातीत स्वात्मविकासात्मविबोध
श्रेयातीत ज्ञानमय हृद्युपलभ्य।
भावग्राह्यानन्दमनन्य च विदुर्ये
त ससारध्वान्नविनाश हरिमीडे ॥ ८ ॥

यद्यद्वेद्य वस्तुसतस्व विषयाख्य तत्तद्वद्वौवेति विदित्वा तदह च । ध्यायन्त्येव य सनकाद्या मुनयोऽज त ससारध्वानतविनाश हरिमीडे ॥ ९ ॥

यद्यद्वेद्य तत्तदह नेति विहाय
स्वात्मज्योतिर्ज्ञानमयानन्दमवाप्य ।
तस्मित्रस्मीत्यात्मविदो य विदुरीश
त ससारम्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १० ॥

हित्वाहित्वा दृश्यमशेष सविकरप मत्वा शिष्ट भादशिमात्र गगनाभम् । त्यक्त्वा देह य प्रविशन्त्यच्युतभक्ता-स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ११॥ सर्वत्रास्त सर्वशरीरी न च सर्व सर्व वेत्त्येवेह न य वेत्ति च सव । सर्वत्रान्तर्यामितयेत्थ यमयन्य-स्त ससारध्वान्तविनाश हिर्गमीडे ॥ १२ ॥

सर्व दृष्ट्वा स्वात्मिन युक्त्या जगदेतदृष्ट्वात्मान चैवमज सर्वजनेषु ।
सर्वात्मैकोऽस्मीति विदुर्य जनहत्स्थ
त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १३ ॥

सर्वत्रैक पश्यित जिन्नत्यथ सुङ्के स्प्रष्टा श्रोता बुध्यित चेत्याहुरिम यम । साक्षी चास्ते कर्तृषु पश्यित्रिति चान्ये त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १४ ॥

पश्यक्रशृण्वन्नत्न विजानन्यसयन्स जिल्लद्भिन्नदेहमिम जीवतयेत्थम् । इत्यात्मान य विदुरीश विषयज्ञ त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १५ ॥ जाप्रदृष्ट्वा म्थूलपदार्थानथ माया

हष्ट्वा स्वप्नेऽथापि सुषुप्तौ सुखनिद्राम् ।

इत्यात्मान वीक्ष्य मुद्रास्त च तुरीये

त ममारध्वान्तविनाग हरिमीडे ॥ १६ ॥

पश्यञ्जुद्धोऽप्यक्षर एका गुणभेदा
न्नानाकारान्स्फाटिकवद्भाति विचित्र ।
भिन्नशिक्तश्रायमज कर्मफलैर्य
स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १७॥

त्रह्मा विष्णू रुद्रहुताशौ रिवचन्द्रा विन्द्रो वायुर्यज्ञ इतीत्थ परिकल्प्य । एक सन्त य बहुधाहुर्मतिभेदा त्त समाग्ध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १८ ॥

सस्य ज्ञान शुद्धमनन्त न्यतिरिक्त शान्त गृह निष्कलमानन्दमनन्यम् । इस्राहादौ य वरुणोऽसौ भृगवेऽज त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १९ ॥ कोशानेतान्पञ्च ग्सादीनतिहाय ब्रह्मास्मीति स्वात्मिनि निश्चित्य हिशस्थम् । पित्रा शिष्टो वेद सुगुर्य यजुरन्ते त समारध्वान्तविनाश हिरमीडे ॥ २०॥

येनाविष्टो यस्य च शक्ता यदधीन क्षेत्रज्ञोऽय कारयिता जन्तुषु कर्तु । कर्ता भोक्तात्मात्र हि यच्छक्त्यधिक्रढ स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २१ ॥

सृष्ट्वा सर्वे स्वात्मतयैवत्यमतक्यी

व्याप्याथान्त कृत्स्नमिद् सृष्टमशेषम् ।

सम त्यन्ताभूत्परमात्मा स य एक

स्त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २२ ॥

वेदान्तैश्राध्यात्मिकशास्त्रैश्च पुराणै शास्त्रेश्चान्ये सात्त्वततन्त्रैश्च यमीशम् । इष्ट्राथान्तञ्चेतसि बुद्धा विविशुर्ये त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २३ ॥ श्रद्धाभिक्तिध्यानशमादीर्यतमानै-श्रीतु शक्यो देव इहैवाशु य ईश । दुर्विक्रेयो जन्मशतैश्चापि विना तै-म्त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २४ ॥

यम्यातक्ये स्वात्मविभूत परमार्थे सर्वे खल्वित्यत्र निरुक्त श्रुतिविद्धि । तज्जातित्वादिधतरङ्गाभमभिन्न त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २५ ॥

द्वष्ट्वा गीतास्त्रक्षरतस्त्व विधिनाज मक्त्या गुर्च्या छभ्य हृदिस्थ दृशिमात्रम् । ध्यात्वा तस्मित्रस्म्यहमित्यत्न विदुर्ये त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २६ ॥

क्षेत्रज्ञत्व प्राप्य विभु पश्चमुखैयों भुद्धेऽजस्म भोग्यपदार्थान्त्रकृतिस्य । क्षेत्रे क्षेत्रेऽप्स्वनदुवदेको बहुधास्ते त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २७ ॥ युक्त्यालोक्य व्यामवचाम्यत्र हि लभ्य श्रमक्षत्रज्ञान्तरावद्भि पुरुषारय । याऽह माऽमी माऽम्म्यहमवात विदुर्य त समारभ्वान्नविनाम हिमीड ॥ २८॥

एकाक्रत्यानकशरीरम्थामम ज्ञ य विज्ञायहैव म एयाशु भवन्ति । यम्मिलॅलीना नह पुनजन्म लभन्त त ममारध्वान्तावनाश हरिमीड ॥ २९॥

द्रन्द्रैकत्व यच मधुत्राह्मणवार्क्य क्रत्वा शकापामनमासान्य विभ्त्या । योऽमी मोऽह माऽम्म्यहमेवेति विदुर्य त समारभ्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३० ॥

याऽय दह चेष्टियतान्त करणस्थ

मूर्ये चासौ तापायता सोऽम्म्यहमेव ।

इत्यात्मेक्यापामनया य विदुरीश

त समारध्वान्तावनाश हरिमीडे ॥ ३१ ॥

विज्ञानाशो यस्य सत शक्त्यधिरूढा
बुद्धिर्बुध्यत्यत्र बाहर्बोध्यपदार्थान ।
नैवान्त स्थ बुध्यति य बोधियतार
त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३२ ॥

कोऽय देह देव इतात्थ सुविचार्य ज्ञाता श्राता मन्तियता चैष हि देव । इत्यालोच्य ज्ञाश इहास्मीति विदुर्य त ससारध्वान्तिवनाश हिरमिडि ॥ ३३ ॥

का ह्यवान्यादात्मिन न म्यादयमष
ह्यवानन्द प्राणिति चाषानिति चेति ।
इत्यस्तित्व वक्त्युपपत्त्या श्रुतिरषा
त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३४ ॥

प्राणो वाह वाक्छ्वणादीनि मना वा बुद्धिबीह व्यस्त उताहोऽपि समस्त । इत्याखोच्य इप्तिरिहास्मीति विदुर्ये त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३५॥ नाह प्राणो नैव शरीर न मनोऽह
नाह बुद्धिर्नाहमहकारिधयौ च ।
योऽत्र ज्ञाश मोऽस्म्यहमेवेति विदुर्य
त ससारध्वान्तविनाश हरिमीड ॥ ३६॥

सत्तामात्र कवलिक्षानमज मत्सूक्ष्म नित्य तत्त्वमसीत्यात्मसुताय ।
साम्रामन्ते प्राह पिता य विभुमाद्य
त समारध्वान्तविनाज हरिमीड ॥ ३७ ॥

मृतीमूर्ते पूर्वमपाद्याथ समाघौ

हश्य सर्व नेति च नतीति विहाय ।
चैतन्याशे म्वात्मिन सन्त च विदुर्य

त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३८ ॥

श्रोत प्रत च मर्व गगनान्त योऽस्थूलानण्वादिषु सिद्धोऽक्षरसङ्ग । ज्ञातातोऽन्यो नेत्युपलभ्यो न च वेद्य स्त ससारध्वान्तविनाज्ञ हरिमीडे ॥ ३९ ॥ तावत्सर्व सत्यमिवाभाति यदेत-द्यावत्सोऽम्मीत्यात्मानि यो ज्ञो न हि दृष्ट । दृष्टे यस्मिन्सर्वमसत्य भवतीद् त ससारध्वान्तविनाज्ञ हरिमीबे ॥ ४० ॥

रागामुक्त लोह्युत हेम यथाग्री योगाष्ट्राक्केरुक्वलितज्ञानमयाग्री। दग्ध्वात्मान ज्ञ परिशिष्ट च विदुर्य त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे।। ४१॥

य विज्ञानज्योतिषमाद्य सुविभान्त
हृद्यकेन्द्रग्न्योकसमीड्य तटिदामम् ।
भक्त्याराध्येहैव विज्ञन्त्यात्मनि मन्त
त समारध्यान्तविनाज्ञ हरिमीड ॥ ४२ ॥

पायाद्भक्त स्वात्मनि सन्त पुरुष या
भक्त्या स्तौतीत्याङ्गिरम विष्णुरिम माम ।
इत्यात्मान स्वात्मनि महत्य सदैक
स्त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ४३ ॥
इति श्रीमत्परमहसपरित्राजकाचायस्य श्रीगोवि दमगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ
हरिस्तुति सपूर्णा ॥

#### ॥ श्री ॥

## ॥ गोविन्दाष्टकम् ॥

8

सत्य ज्ञानमनन्त नित्यमनाकाश परमाकाश
गोष्ठपाक्रणरिङ्खणलालमनायाम परमायामम् ।
सायाकित्पतनानाकारमनाकार भुवनाकार
क्मामानाथमनाथ प्रणमत गोविन्ट परमानन्दम् ॥ १ ॥

मृत्स्नामत्सीहेत यशोदाताडनशैशवसत्राम
व्यादितवक्राळाकितलाकालोकचतुदशलोकालिम् ।
लोकत्रयपुरमूळस्तम्भ लोकालाकमनालोक
लोकेश परमेश प्रणमत गोविन्द परमानन्तम् ॥ २ ॥

त्रैविष्टपरिपुर्वारत्र क्षितिभाग्त्र भवगान्त्र कैवल्य नवनीताहारमनाहार भुवनाहारम् । वैमल्यस्फुटचेतोवृत्तिविशेषाभासमनाभाम श्रीव केवळशान्त प्रणमत गोविन्द परमानन्दम् ॥ ३ ॥ गोपाल प्रभुलीलाविष्रह्मोपाल कुलमोपाल गोपीखेलनगोवधनधृतिलीलालालितगोपालम् । गोभिर्निगदितगोविन्दस्फुटनामान बहुनामान गोधीगोचरदूर प्रणमन गोविन्ट परमानन्दम् ॥ ४ ॥

गोपीमण्डलगोष्ठीभेद भदावस्थमभेदाभ शश्वद्गोखुरनिर्धूतोद्गतधूलीधूसरसौभाग्यम् । श्रद्धाभक्तिगृहीतानन्दमचिन्त्य चिन्तितसद्भाव चिन्तामणिमहिमान प्रणमत गोविन्द परमानन्दम् ॥

स्नानव्याकुलयोषिद्वस्त्रमुपादायागमुपारूढ व्यादित्सन्तीरथ दिग्वस्ता दातुमुपाकर्षन्त ता । निर्भूतद्वयक्षोकविमोह बुद्ध बुद्धेरन्त स्थ सत्तामात्रक्षरीर प्रणमत गोविन्द परमानन्दम् ॥ ६ ॥

कान्त कारणकारणमादिमनादि कालघनाभास कालिन्दीगतकालियशिरामि सुनृत्यन्त मुहुरस्रन्तम् । काल कालकलातीत कलिताशष कलिदोषन्न कालत्रयगतिहेतु प्रणमत गोविन्द परमानन्दम् ॥ ७ ॥ बृन्दावनभुवि बृन्दारकगणबृन्दाराधितवन्दाया कुन्दाभामलमन्दसमेरसुधानन्द सुमहानन्दम् । वन्दाशेषमहामुनिमानसवन्द्यानन्दपदद्वनद्व नन्द्याशेषगुणाव्धि प्रणमन गोविन्द परमानन्दम् ॥८॥

गोविन्दाष्टकमेतदधीत गोविन्दार्पितचता या गोविन्दाच्युत माधव विष्णा गोकुळनायक कृष्णेति । गोविन्दाङ्किसरोजध्यानसुधाजळधीतसमस्ताघा गोविन्द परमानन्दामृतमन्तम्थ स तमभ्येति ॥ ९ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमञ्झकरभगवत कृतौ गाविन्दाष्टक सपूर्णम् ॥



#### ॥ श्रीः ॥

# ॥ भगवन्मानसपूजा ॥

हृदम्भोजे कृष्ण सजळजळदश्यामलततु सरोजाश्च स्नग्वी मकुटकटकाद्याभरणवान् । श्चरद्राकानाथप्रतिमवदन श्रीमुरिक्षका वहन्ध्येयो गोपीगणपरिवृत कुङ्कमिचत ॥ १॥

पयोम्भोधेद्वीपान्मम हृद्यमायाहि भगव नमिणत्रातभ्राजत्कनकवरपीठ भज हरे। सुचिद्वौ ते पादौ यदुकुळज ननेजिम सुजलै ग्रेहाणेद दूर्वोफळजळवदर्ग्य मुरिपो ॥ २ ॥

त्वमाचामोपेन्द्र त्रिदशसरिदम्भोऽतिशिशिर
भजस्वेम पश्चामृतफलरसाप्नावमघहन ।
युनवा कालिन्या अपि कनककुम्भाश्चितमिद्
जल तेन स्नान कुरु कुरु कुरुवाचमनकम् ॥ ३ ॥

तिहर्षे वस्न भज विजयकान्ताधहरण प्रलम्बारिश्रातमृदुलमुपवीत कुरु गल। ललाट पाटीर मृगमन्युन धारय हरे गृहाणेद माल्य शतदलतुलस्यादिरचितम्॥ ४॥

दशाङ्ग धूप सद्धरद चरणात्रऽपितामद

मुख दीपनेन्दुप्रभविरज्ञस त्व कल्लय ।

इमी पाणी वाणीपतिनुत सकपूररजमा

विशोध्यामे त्त्र सलिलमिदमाचाम नृहरे ॥ ५ ॥

सदा तृप्तात्र षड्सवदिक्षिलव्यक्षनयुत सुवर्णामत्रे गोषृतचषकयुक्त ग्धितिमदम् । यज्ञादासूना तत्परमदययाज्ञान सिस्तिभ प्रमाद वाव्क् द्विस् मह तद्नु नार पर्व विभा ॥ ६ ॥

मचूर्ण ताम्बूळ मुख्युचिकर भक्षय हर फळ स्वादु शीत्या पारमळवदास्वादय ाचरम् । सपर्योपर्यास्य कनकमणिजात स्थितमिद प्रदीपैरारार्ति जळिधितनयाऋष्ठ रचये ॥ ७ ॥ विजातीयै पुष्पैगितसुरभिभिश्विस्वतुल्लमी
युतैश्चेम पुष्पाश्वालमजित त मूर्ग्नि निन्ध ।
तव प्रादक्षिण्यक्रमणमधिवध्विम रचित
चतुर्वोर विष्णा जिनपथगतश्चान्तिवदुषा ॥ ८ ॥

नमस्कारोऽष्टाङ्क सकलदुारतध्वसनपटु कृत नृत्य गीत म्तुानगिप रमाकान्त त इयम् । तव प्रीत्ये भूयादहमिप च टामस्तव विभा कृत छिद्र पूर्ण कुरु कुरु नमस्तऽस्तु भगवन ॥ ९॥

सदा सेव्य कृष्ण सजलघननील करतले दधाना दध्यन्न तदनु नवनीत मुरलिकाम । कदाचित्कान्ताना कुचकलकापत्रालिरचना समासक्त स्निग्धै सह शिञ्जविहार विरचयन् ॥१०॥

> इात श्रीमत्परमहसपारत्राजकाःचार्थस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृती भगवन्मानसपूजा सपूर्णा ॥

#### ॥ श्री ॥

### ॥ मोहमुद्भरः ॥

---

भज गाविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द मूढमते । सप्राप्ते सनिहिते काले न हि न हि रक्षति जुकुटकरण ॥ १ ॥

मूढ जहीहि धनागमतृष्णा
कुरु सहुद्धि मनासि वितृष्णाम् ।
यह्यभस निजकर्मीपात्त
वित्त तेन विनोदय चित्तम् ॥ २ ॥

नारीस्तनभरनाभीदेश
दृष्ट्वा मा गा माहावशम् ।
एतन्मासवसादिविकार
मनस्रि विचिन्तय वार वारम् ॥ ३ ॥

निल्नीद्रलगतजलमितरल तद्वजीवितमितशयचपलम् । विद्वि व्याध्यभिमानप्रसा लाक शोकहत च समस्तम् ॥ ४ ॥

यावद्वित्तोपार्जनसक्त स्ताविश्वजपरिवारो रकः। पश्चाज्जीवति जर्जरदेह वार्त्ती कोऽपि न प्रच्छिति गेहे॥ ५॥

यावत्पवनो निवसित देहे तावत्पृच्छिति कुशल गेहे। गतवित वायौ दहापाये भार्या विभ्यति तस्मिन्काये॥ ६॥

वास्तावत्क्रीडासक म्तरणस्तावत्तरणीसक । युद्धस्ताविष्टनासक परे ब्रह्मणि कोऽपि न सक्त ॥ ७॥ का ते कान्ता कस्त पुत्र
ससारोऽयमतीव । न।च न न
कस्य त्व क कुत आयात
स्तन्त्व चिन्तय यिन्द भ्रान्त ॥ / ॥

मत्सङ्गत्वे नि मङ्गत्व नि सङ्गत्व निर्मोहत्वम् । निर्मोहत्व निश्चछितत्व निश्चछितत्व जीय मुक्ति ॥ ९॥

वयिस गते क कामात्रकार शुष्क नीर क कासार । श्लीणे वित्त क परिवारो ज्ञात तत्त्वे क समार ॥ १०॥

मा कुरु धनजनयीवनगर्व

हरति निमेषात्काल सर्वम् ।

मायामयमिद्मखिल हित्वा

ब्रह्मपद त्व प्रविश्व विदित्वा ॥ ११ ॥

दिनयामिन्यौ साय प्रात शिशिरवसन्तौ पुनरायात । काल कीडिति गच्छत्यायु स्तदपि न सुभ्वत्याञावायु ॥ १२ ॥

का ते कान्ताधनगतचिन्ता वातुल किं तव नास्ति नियन्ता। त्रिजगति सज्जनसगतिरेका भवति भवार्णवतरणे नौका॥ १३॥

जटिली मुण्डी लुश्चितकेश काषायाम्बरबहुक्कतवेष । पश्यम्रपि च न पश्यति मूढो बुदरनिमित्त बहुकुतवेष ॥ १४ ॥

अङ्ग गिलत पिलत मुण्ड दशनविहीन जात तुण्डम् । वृद्धो याति गृहीत्वा दण्ड तदपि न मुख्यत्याशापिण्डम् ॥ १५ ॥ ८ ६ ४ ६ ६ भमे विद्व पृष्ठे भानू रात्री चुबुकसमर्पितजानु । करतलभिक्षस्तकतलवास स्तद्पि न मुचलाशापाश ॥ १६॥

कुरुत गङ्गासागरगमन व्रतपरिपालनमथवा दानम् । ज्ञानविद्वीन सर्वमतेन सुर्क्ति न भजति जन्मशतेन ॥ १७॥

सुरमन्दिरतरुमूळनिवास शय्या भूतळमजिन वास । सर्वपरिग्रहभोगत्याग कस्य सुख न करोति विराग ॥ १८॥

योगरतो वा भोगरतो वा सगरतो वा सगविद्दीन । यस्य ब्रह्माणि रमते चित्त नन्दति नन्दति नन्दस्येव ॥ १९॥ भगवद्गीता किंचिदधीता
गङ्गाजल्लवकणिका पीता।
सक्रदिप येन मुरारिसमर्चा
क्रियते तस्य यमेन न चर्चा।। २०॥

पुनरिप जनन पुनरिप मरण पुनरिप जननीजठरे शयनम् । इह ससारे बहुदुसारे कृपयापारे पाहि सुरारे ॥ २१ ॥

रध्याकर्पटविरचितकन्थ
पुण्यापुण्यविवर्जितपन्थ ।
योगी योगनियोजितचित्तो
रमते बालोन्मत्तवदेव ॥ २२ ॥

कस्त्व कोऽह कुत आयात का मे जननी को मे तात । इति परिभावय सर्वमसार विश्व त्यक्त्वा स्वप्नविचारम् ॥ २३ ॥ त्विय मिथ चान्यत्रैको विष्णु व्यर्थे कुप्यसि मन्यसिहण्णु । सर्वस्मित्रपि पश्यात्मान सर्वत्रोत्मुज भेदाज्ञानम् ॥ २४ ॥

शत्री मिन्ने पुत्रे बन्धी

मा कुरु यत्न विमहसन्धी।
भव समचित्त सर्वत्र त्व
वाञ्कस्यचिराद्यदि विष्णुत्वम् ॥ २५॥

काम क्रोध लोभ मोह त्यक्त्वात्मान भावय काऽहम । आत्मज्ञानविहीना मूढा स्ते पच्यन्ते नरकनिगृद्धा ॥ २६॥

गेय गीतानामसहस्र ध्यय श्रीपतिरूपमजस्रम् । नेय सज्जनसङ्गे चित्त देय दीनजनाय च वित्तम् ॥ २७ ॥ सुखत कियते रामाभोग पश्चाद्धन्त शरीरे रोग । यद्यपि छोके मरण शरण तद्दपि न सुश्चिति पापाचरणम् ॥ २८॥

भर्थमनर्थ भावय निस्य नास्ति तत सुखलेश सत्यम् । पुत्रादिप धनभाजा भीति सर्वेत्रैषा विहिता रीति ॥ २९॥

प्राणायाम प्रसाहार नित्यानित्यविवेकविचारम् । जाप्यसमेतसमाधिविधान कुर्वेवधान महदवधानम् ॥ ३०॥

गुरुचरणाम्बुजानिर्भरभक्त
ससारादिचराद्भव गुक्त ।
सेन्द्रियमानसनियमादेव
द्रक्ष्यिस निजहृदयस्थ देवम् ॥ ३१ ॥

इति मोहमुद्गर सपूर्ण ॥

### ॥श्री॥

### ॥ कनकधारास्तोत्नम् ॥

भक्त हरे पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृक्ताक्रनेव सुकुलाभरण तमालम् ।
भक्तीकृताखिलविभृतिरपाक्तलीला
माक्रलयदास्तु मम मक्तलदवताया ॥ १ ॥

मुग्धा मुहुर्विद्धती वदने मुरारे प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि । मालाहशोमधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रिय दिशतु सागरसभवाया ॥ २ ॥

विश्वामरन्द्रपद्विश्रमदानद्धः
मानन्दहेतुरिधक सुरविद्विषोऽपि ।
ईषित्रिषीद्तु मिय क्षणमीक्षणार्द्धे
मिन्दीवरोदरसहादरिमिन्दिराया ॥ ३ ॥

आमीलिताक्षमधिगम्य ग्रुदा गुकुन्द मानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् । आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्र भूत्ये भवेन्मम गुजगज्ञयाङ्गनाया ॥ ४॥

बाह्यन्तरे मधुजित श्रितकौस्तुभेया हारावळीव हरिनीलमयी विभाति। कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कर्याणमावहतु मे कमलालयाया ॥ ५॥

कालाम्बुदालिललितारिस कैटभार-र्घाराधरे स्फुरित यत्तिटिद्क्कनेव । मातु समस्तजगता महनीयमूर्ति भेद्राणि मे दिशतु भागवन दनाया ॥ ६ ॥

प्राप्त पद प्रथमत खळु यत्प्रभावा
नमाङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन ।

मच्यापतेत्तिदिह मन्थरमीक्षणार्धि

मन्दाळस च मकराळयकन्यकाया ॥ • ॥

दशाह्यानुपवनो द्रविणाम्बुधारा
मिसन्न किंचन विह्गिशिशौ विषण्णे।
दुष्कमेधर्ममपनीय चिराय दूर
नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाह ॥ ८॥

इष्टाविशिष्टमतयोऽपि यया द्याई-दृष्ट्या त्रिविष्टपपद सुलभ लभन्ते । दृष्टि प्रहृष्टकमलोद्रदीप्तिरिष्टा पुष्टि कृषीष्ट मम पुष्करविष्टराया ॥ ९ ॥

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति शाकभरीति शशिशेखरवस्त्रभेति । सृष्टिस्थितिप्रस्थकस्त्रिषु सस्थितायै तस्यै नमिक्सभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥ १० ॥

श्रुत्ये नमोऽस्तु श्रुभकर्मफछप्रसृत्ये
रत्ये नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवाये ।
शक्त्ये नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनाये
पुष्टये नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवङ्कभाये ॥ ११ ॥

नमोऽस्तु नाळीकनिभाननायै नमोऽस्तु दुग्धोद्धिजन्मभूम्यै । नमोऽस्तु सोमामृतसोद्दायै नमोऽस्तु नारायणवङ्गभायै ॥ १२ ॥

स्रपत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानिभवानि सरोक्हाश्चि । त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मातरनिश कलयन्तु मान्ये ॥ १३ ॥

यत्कटाश्चसमुपासनाविधि
सेवकस्य सकलार्थसपद ।
सतनोति वचनाङ्गमानसै
स्तवा सुरारिहृद्येश्वरी भजे ॥ १४ ॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतमाशुकगन्धमाल्यशोभे । भगवति हरिवल्लभे मनोक्षे त्रिभुवनभृतिकरि प्रसीद मह्मम् ॥ १५ ॥ दिघ्यस्तिभि कनककुम्भमुखावसृष्ट स्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्रुताङ्गीम् । प्रातनेमामि जगता जननीमश्रष लोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥ १६ ॥

कमल कमलाक्षवल्लभ त्व करुणापूरतरिक्ततैरपाङ्गे । अवलोकय मामिकंचनाना प्रथम पात्रमकृत्रिम दयाया ॥ १७॥

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमीभिरन्वह् त्रयीमयीं त्रिभुवनमातर रमाम् । गुणाधिका गुक्तरभाग्यभाजिनो भवन्ति त भुवि बुधभाविताशया ॥ १८॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकान्त्रायस्य श्रीगोवि दभग-वत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ कनकथारास्तोत्र सपूर्णम् ॥

### ॥ श्री ॥

# ॥ अन्नपूर्णाष्ट्रकम् ॥

निस्नानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी निर्भूताखिलदोषपावनकरी प्रसक्षमाहेश्वरी । प्रालयाचलवशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षा दिह कुपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ १ ॥

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी

मुक्ताह।रविडम्बमानविलमद्वश्लोजकुम्भान्तरी ।
काश्मीरागकवासिताङ्गरुचिर काशीपुराधीश्वरी
भिश्ला दाह कुपावलम्बनकरी माताञ्जपूर्णेश्वरी ॥ २ ॥

योगानन्दकरी रिपुश्चयकरी धर्मैकनिष्ठाकरी चन्द्राकीनलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी। सर्वैश्वयंकरी तप फलकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षा देहि कुपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥ ३॥ कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी ह्युमाशाकरी कौमारी निगमार्थगोचरकरी ह्योंकारबीजाक्षरी । मोक्षद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षा देहि कुपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ ४ ॥

रश्यारश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी लीलानाटकसूत्रखेलनकरी विज्ञानदीपाङ्क्ररी। श्रीविश्वेशमन प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षा देहि कुपावलम्बनकरी मातात्रपूर्णेश्वरी॥ ५॥

आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी श्रभुत्रिया शाकरी काश्मीरत्रिपुरेश्वरी त्रिनयनी विश्वेश्वरी शर्वरी । स्वर्गद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षा देहि कुपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ ६ ॥

वर्वीसर्वजनेश्वरी जयकरी माता कृपासागरी।
नारीनीलसमानकुन्तलधरी नित्याश्रदानेश्वरी
साक्षान्मोक्षकरी सदा शुभकरी काश्वीपुराधीश्वरी
भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी मातात्रपूर्णेश्वरी॥ ७॥

देवी सर्वेविचित्ररह्मरचिता दाश्वायणी सुन्दरी वामा खादुपयाधरा प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी । भक्ताभीष्टकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी भिश्वा देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।। ८ ॥

चन्द्राकीनलकोटिकोटिसहशी चन्द्राशुविम्बाधरी चन्द्राकीग्रिसमानकुण्डलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी। मालापुस्तकपाशसाङ्कृशधरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षा देहि कुपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥ ९॥

श्वत्रत्राणकरी महाभयहरी माता कुपासागरी सर्वानन्दकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी। दश्चाकन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षा देहि कुपावलम्बनकरी मातालपूर्णेश्वरी॥ १० ॥

> भन्नपूर्णे सद्दापूर्णे शकरप्राणवस्त्रभे । ज्ञानवैराग्यसिद्धार्थे भिक्षा देहि च पार्वति ॥ ११ ॥

माता च पार्वतीदेवी
पिता दवा महेश्वर ।
बान्धवा शिवभक्ताश्च
स्वदेशो सुवनत्रयम् ॥ १२ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ अन्नपूर्णाष्टक सपूर्णम् ॥



### ॥ श्रीः ॥

### ॥ मीनाक्षीपञ्चरत्नम् ॥

च्यद्भानुसहस्रकोटिसहशा केयूरहारोज्ज्वला विम्बोष्ठीं स्मितदन्तपङ्किरुचिरा पीताम्बरालकृताम् । विष्णुब्रह्मसुरेन्द्रसेवितपदा तत्त्वस्वरूपा शिवा मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सत्तमह कारुण्यवारानिधिम् ॥

सुक्ताहारलस्विकरीटकचिरा पूर्णेन्दुवक्कप्रभा शिः जन्नूपुरिकंकिणीर्माणघरा पद्मप्रभाभासुराम् । सर्वाभीष्ठफलप्रदा गिरिसुता वाणीरमासेविता मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सततसह कारुण्यवारानिधिम् ॥

श्रीविद्या शिववामभागनिख्या द्वींकारमन्त्रोज्ज्वला श्रीचकाङ्कितबिन्दुमध्यवसतिं श्रीमत्सभानायकीम् । श्रीमत्षणमुखविन्नराजजननीं श्रीमज्जगन्मोहिनीं मीनाश्चीं प्रणतोऽस्मि सततमह कारुण्यवारानिधिम् ॥ श्रीमत्सुन्दरनायकीं भयहरा ज्ञानप्रदा निर्मेखा इयामाभा कमलासनार्चितपदा नारायणस्यानुजाम् । बीणावेणुमृदङ्गवाद्यरसिका नानाविधाद्यम्बिका मीनाक्षी प्रणतोऽस्मि सततमह कारुण्यवारानिधिम् ॥

मानायोगिमुनीन्द्रहृष्ट्रिवसतीं नानार्थसिद्धिप्रदा नानापुष्पविराजिताष्ट्रियुगला नारायणेनार्चिताम् । नाद्मश्चमयी परात्परतरा नानार्थतत्त्वात्मिका मीनाश्ची प्रणतोऽस्मि सततमह कारुण्यवारानिधिम् ॥

> इति श्रीमत्परमइसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ मीनाक्षीपश्वरत्न सपूर्णम् ॥



### ॥ श्री ॥

# ॥ मीनाक्षीस्तोत्रम् ॥

श्रीविद्ये शिववामभागनिलये श्रीराजराजाचिते श्रीनाथादिगुरुखरूपविभवे चिन्तामणीपीठिके । श्रीवाणीगिगिजानुताङ्किममले श्रीशाभवि श्रीशिवे मध्योह्वे मल्यध्वजाधिपसुते मा पाहि मीनाम्बिके ॥१॥

चक्रस्थेऽचपछे चराचरजगन्नाथे जगत्पृजिते आर्ताळीवरदे नताभयकर वक्षोजभारान्विते। विद्ये वेदकळापमौळिविदिते विद्युद्धताविप्रहे मात पूर्णसुधारसार्द्रहृदये मा पाहि मीनाम्बिके ॥ २ ॥

कोटीराङ्गदरत्नकुण्डलधरे कादण्डवाणाश्विते कोकाकारकुचद्वयापरिलसः प्रालम्बहाराश्विते । शिक्षञ्जूपुरपादसारसमणीश्रीपादुकालकृते महारिद्यसुजगगारुडखगे मा पाहि मीनाम्बिके ॥ ३ ॥

s s 11 6

ब्रह्मेशान्युतगीयमानचिरते प्रतासनान्तस्थिते
पाशोदङ्कशचापबाणकिलत बालनदुचूडािचत ।
बाले बालकुरङ्गलालनयन बालाककाटचुङ्ग्वल
मुद्राराधितदैवते मुनिसुत मा पाहि मीनान्बिके ॥ ४ ॥

गन्धर्वामरयक्षपन्नगनुत गङ्गाधरालिङ्गित गायत्रीगरुडासन कमलजे सुदयामले सुन्धित । खातीते खलदारुपावकशिखे खद्यातकोटगुड्डवले मन्त्राराधितदैवते मुनिसुते मा पाहि मीनान्बिके ॥ ५॥

नादे नारदतुम्बुराद्यविनुते नादान्तनादात्मिक नित्ये नीळळतात्मिके निरुपम नीवारश्कोपम । कान्त कामकळ कदम्बनिळय कामश्वराङ्कस्थित माद्विद्य मदभीष्टकस्पळतिके मा पाहि मीनाम्बिके ॥६॥

वीणानादिनिमीलिताधनयन विस्नस्तचूलीभर ताम्बूलारुणपल्लवाधरयुते ताटङ्कहारान्वित । इयामे चन्द्रकलावतसकलित कस्तूरिकाफालिक पूर्णे पूर्णकलाभिरामवदने मा पाहि मीनाम्बिक ॥ ७ ॥ शब्द श्रह्म मयी चराचर मयी ज्योतिर्मयी वाड्यायी नित्यानन्द मयी निरश्वन मयी तत्त्व मयी चिन्मयी। तत्त्वातीत मयी परात्परमयी मायामयी श्रीमयी सर्वेश्वयमयी सदाशिव मयी मा पाहि मीना म्बिके ॥८॥

> इति श्रीमत्परमहसपरित्राजकाचायस्य श्रीगोवि दभग वत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ मीनाक्षीस्तोत्र सपूर्णम् ॥



#### ॥ श्री ॥

### ॥ दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् ॥

-- **8**8 -----

वपासकाना यदुपासनीय गुपात्तवास वटशास्त्रिमूळे । तद्धाम दाक्षिण्यजुषा म्वमूर्या जागर्तु चित्ते मम बोधरूपम् ॥ १ ॥

अद्राक्षमधीणद्यानिधान-माचार्यमाद्य बटमूलभागे । मौनेन मन्दस्मितभूषितन महाषलोकस्य तमो नुदन्तम् ॥ २ ॥

विद्राविताशषतमोगणन
सुद्राविशेषण सुद्वसुनीनाम् ।
निरस्य माथा द्यया विधन्ते
देवो महास्तत्त्वससीति बोधम् ॥ ३ ॥

भपारकारण्यसुषातरङ्गे
रपाङ्गपातैरवलोकयन्तम् ।
कठोरस्रसारनिदाघतप्ता
नसुनीनह नौमि गुरु गुरूणाम् ॥ ४ ॥

ममाचदेवो वटमूळवासी कुपाविशेषात्कृतसनिषान । ओंकाररूपासुपदिश्य विद्या माविद्यकथ्यान्तमपाकरोतु ॥ ५ ॥

कळाभिरिन्दोरिव कल्पिताङ्ग मुक्ताकळापैरिव बद्धमूर्तिम् । भाळोकये देशिकमप्रमेय मनाधविद्यातिमिरप्रभातम् ॥ ६ ॥

स्वदक्षजानुस्थितवामपाद पादोदराळकृतयोगपट्टम् । अपस्मृतेराहितपादमक्के प्रणौमि देव प्रणिधानवन्तम् ॥ ७ ॥ तस्वार्थमन्तेवसतामृषीणा
युवापि य सन्नुपदेष्टुमीष्टे ।
प्रणौमि त प्राक्तनपुण्यजालै
राचार्थमाश्चर्यगुणाधिवासम् ॥ ८ ॥

एकेन सुद्रा परशु करेण
करेण चान्येन मृग दधान ।
स्वजानुविन्यस्तकर पुरस्ता
दाचायचूडामणिराविरस्तु ॥ ९ ॥

आर्छपवन्त मदनाङ्गभृत्या शार्दूछकुत्त्या परिधानवन्तम् । आर्छोक्षये कचन देशिकेन्द्र मञ्चानवाराकरबाडवाग्निम् ॥ १०॥

चारुस्थित सोमक्छावतस वीणाधर व्यक्तजटाकछापम् । उपासते केचन योगिनस्त्व सुपात्तनादानुभवप्रमोदम् ॥ ११ ॥ चपासते य सुनय शुकाद्या निराणिषो निर्ममताधिवासा । त दक्षिणामृतितनु महेश सुपास्मह मोहमहातिशान्स्यै ॥ १२ ॥

कान्त्या निनिद्तकुन्दकदळवपुनर्थशोधमूळे वस नकारुण्यामृतवारिभिमुनिजन सभावयन्वीक्षिते । मोह्ध्यान्तविभेदन विरचयन्बोधेन तत्तादृशा देवस्तस्वमसीति बोधयतु मा मुद्रावता पाणिना ॥ १३॥

भगौरनेत्रैरळळाटनेत्रै
रज्ञान्तवेषैरभुजगभूषै ।
भवोधसुद्रैरनपास्तनिद्रै
रपुरकामैरमरैरळ न ॥ १४ ।

देवतानि कति सन्ति चावनी नैव तानि मनसो मतानि मे । दीक्षित जडधियामनुमहे दक्षिणाभिमुखमव दैवतम् ॥ १५ ॥ मुदिताय मुग्धशिकानावतिसने
भिक्तावलेपरमणीयमूर्तये ।
जगदिन्द्रजालरचनापटीयसे
महसे नमोऽस्तु वटमूलवासिने ॥ १६ ॥

व्यासम्बनीभि परितो जटाभि कलावश्षेण कलाधरेण । पद्यस्रलाटेन मुखेन्दुना च प्रकाशसे चेतसि निर्मलानाम् ॥ १७ ॥

उपासकाना त्वमुमासहाय पूर्णेन्दुभाव प्रकटीकरोषि । यद्द्य ते दर्शनमात्रता मे द्रवत्यहो मानसचन्द्रकान्त ॥ १८॥

यस्त प्रसन्तामनुसद्धानो
मृर्ति सुदा सुग्धशशाङ्कमौछे ।
ऐश्वर्थमायुलभत च विद्या
मन्त च वेदान्तमहारहस्यम् ॥ १९॥

इति दक्षिणामूर्तिस्तोल संपूर्णम् ॥

### ॥ श्री ॥

## ॥ कालभैरवाष्ट्रकम् ॥

देवराजसेन्यमानपावनाङ्किपङ्कज न्यालयज्ञसूत्रविन्दुशेखर कृपाकरम् । नारदादियोगिवृन्दवन्दित दिगम्बर काशिकापुराधिनाथकालभैरव भजे ॥ १ ॥

भानुकोटिभास्तर भवाव्धितारक पर नीलकण्डमीप्सिताथदायक त्रिलोचनम् । कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षर काशिकापुराधिनाथकालभैरव भजे ॥ २ ॥

भू उटक्कपाशदण्डपाणिमादिकारण भ्यामकायमादिदेवमक्षर निरामयम् । भीमविक्रम प्रभु विचित्रताण्डवप्रिय काशिकापुराधिनाथकाळभैरव भजे ॥ ३ ॥ मुक्तिमुक्तिदायक प्रशस्त्रचारुविग्रह्

भक्तवत्म् स्थिर समस्त्रलाकाविग्रहम् ।

निकणन्मनोङ्गहेमिकिङ्किणीलसत्किटिं

काशिकापुराधिनाथकालभैरव भज ॥ ४ ॥

धर्मसेतुपालक त्वधममागनाशक कर्मपाशमोचक सुशर्मदायक विसुम् । स्वर्णवर्णकशपाशशोभिताङ्गनिर्मल काशिकापुराधिनाथकालभैरव भन्ने ॥ ५ ॥

रत्नपादुकाप्रभाभिरामपाद्युग्मक नित्यमद्वितीयभिष्टदैवत निरञ्जनम् । मृत्युद्पनाञ्चन कराळद्ष्ट्रभूषण काशिकापुराधिनाथकाळभैरव भज ॥ ६ ॥

अट्टहासभित्रपद्मजाण्डकोशसतति दृष्टिपातनष्टपापजालमुत्रशासनम् । अष्टिसिद्धदायक कपालमालिकाधर काशिकापुराधिनाथकालभैरव भजे ॥ ७ ॥ मूतसङ्घनायक विशासकीर्तिदायक काशिवासिस्रोकपुण्यपापशोधक विभुम् । नीतिमार्गकोविद पुरातन जगत्पतिं काशिकापुराधिनाथकास्त्रमैरव मजे ॥ ८ ॥

कालभैरवाष्ट्रक पठिन्त ये मनोहर ज्ञानमुक्तिसाधक विचित्रपुण्यवर्धनम् । शोकमोहलोभदैन्यकोपतापनाशन ते प्रयान्ति कालभैरवाङ्गिसनिधि ध्रुवम् ॥ ९ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ कालभैरवाष्ट्रक सपूर्णम् ॥



#### ॥ श्री ॥

# ॥ नर्मदाष्टकम् ॥

स्रविन्दुसिन्धुसुस्खलतरङ्गभङ्गरिकत द्विषत्सु पापजातजातकादिवारिसयुतम् । कृतान्तदूतकालभूतभीतिहारिवर्भदे त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्भदे ॥ १ ॥

त्वदम्बुलीनदीनमीनदिन्यसप्रदायक
कलौ मलौघभारहारिमवतीर्थनायकम् ।
सुमच्छकच्छनकचकवाकचक्रशमेदे
त्वदीयपादपङ्कल नमामि दवि नमेदे ॥ २ ॥

महागभीरनीरपूरपापधृतभृतल
ध्वनत्समस्तपातकारिदारितापदाचलम् ।
जगक्कये महाभये मृकण्डुसूजुहर्म्यदे
त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नमेदे ॥ ३ ॥

गत तदैव मे भय त्वदम्बु बीक्षित यदा
मृकण्डुसूनुशौनकासुरारिसेवित सदा।
पुनर्भवाब्धिजन्मज भवाब्धिदु खवर्मदे
त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मदे॥ ४॥

अलक्ष्यलक्षिकत्ररामरासुरादिपूजित सुलक्षनीरतीरधीरपश्चिलक्षकृजितम् । वसिष्ठशिष्टपिष्पलादिकर्दमादिशमेद त्वदीयपादपङ्कज नमामि द्वि नमेदे ॥ ५॥

सनत्कुमारनाचिकेतकश्यपात्रिषट्पदै

र्धृत स्वकीयमानसेषु नारदादिषट्पदै ।

रवीन्दुरन्तिदेवदेवराजकर्मशर्मदे

त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मद् ॥ ६ ॥

अब्धाब्धाब्धापायब्धासारसायुध ततस्तु जीवजन्तुतन्तुभुक्तिमुक्तिदायकम् । विरिश्विविष्णुशकरस्वकीयधामवर्भदे स्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्भदे ॥ ७॥ अहो धृत स्वन श्रुत महेशिकेशजातट किरातसूतवाडवेषु पण्डित शठ नटे। दुरन्तपापतापहारि सर्वजन्तुशर्मद त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नमद्॥ ८॥

इद तु नर्भदाष्टक त्रिकालमेव ये सदा
पठन्ति ते निरन्तर न यन्ति दुगतिं कदा।
सुलभ्यदेहदुर्लभ महशधामगौरव
पुनर्भवा नरा न वे विलोकयन्ति रौरवम्॥ ९॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोविद्मगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत क्रतौ नर्भदाष्टक सपूर्णम् ॥



#### ॥श्री ॥

### ॥ यमुनाष्ट्रकम् ॥

मुरारिकायकालिमाललामवारिधारिणी

तृणीकृतित्रिविष्ठपा त्रिलोकशोकहारिणी।

मनोनुकूलकुलकुलपुश्वधूतदुर्भदा

धुनोतु नो मनामल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ १ ॥

मळापहारिवारिपूरिभूरिमण्डितामृता

भृज्ञा प्रवातकप्रपञ्चनातिपण्डितानिज्ञा ।

सुनन्दनन्दिनाङ्गसङ्गरागरिज्जता हिता

धुनोतु ने। मनोमळ कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ २ ॥

लसत्तरङ्गसङ्गधूतभूतजातपातका नवीनमाधुरीधुरीणभक्तिजातचातका । तटान्तवासदासहससवृताहिकामदा धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ३ ॥ विहाररासखेदभद्धीरतीरमाहता

गता गिरामगोचरे यदीयनीरचाहता।

प्रवाहसाहचर्यपूतमेदिनीनदीनदा

धुनोतु नो मनोमल कलिन्दननिदनी सदा ॥ ४॥

तरक्कसक्कसैकतान्तरातित सदासिता शरिक्रशाकराशुमञ्जुमञ्जरी सभाजिता । भवार्चनाप्रचारुणाम्बुनाधुना विशारदा धुनातु नो मनोमळ कळिन्दनन्दिनी सदा ॥ ५ ॥

जलानतकेलिकारिचारराधिकाङ्गरागिणी स्वभर्तुरन्यदुलभाङ्गताङ्गताशभागिनी स्वदत्तसुप्रसप्तसिन्धुभेदिना।तकोविदा धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ६ ॥

जलच्युताच्युताङ्गरागलम्पटालिशालिनी विलोलराधिकाकचान्तचम्पकालिमालिनी । सदावगाहनावतीर्णभर्तृभृत्यनारदा धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ७॥ सदैव निद्नन्दकेलिशालिकु जम जुला तटोत्थफुलमिलकाकदम्बरेणुस् ज्वला । जलावगाहिना नृणा भवाविधसिन्धुपारदा धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ८ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ यमुनाष्टक सपूर्णम् ॥



### ॥ श्री ॥

### ॥ यमुनाष्ट्रकम् ॥

कुपापारावारा तपनतनया तापशमना

मुरारिप्रेयस्या भवभयद्वा भक्तिवरदाम् ।
वियज्ज्वालोन्मुक्ता श्रियमपि सुखाप्ते परिदिन

सदा धीरो नून भजति यमुना निखफलदाम् ॥ १ ॥

मधुवनचारिणि भारकरवाहिनि जाह्नविसिङ्गिनि सिन्धुसुते
मधुरिपुभूषणि माधवतोषिणि गोकुछभीतिविनाशकृते ।
जगद्द्यमोचिनि मानसदायिनि केशवकिष्ठिनदानगते
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम् ॥

आय मधुरे मधुमोदिविळासिनि शैलिविदारिणि वेगपरे परिजनपालिनि दुष्टानेषूदिनि वाञ्चितकामविळासधरे। व्रजपुरवासिजनार्जितपातकहारिणि विश्वजनोद्धरिके जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम्।। अतिविपदाम्बुधिमग्नजन भवतापश्चताकुळमानसक
गतिमतिहीनमशेषभयाकुळमागतपादसरोजयुगम् ।
ऋणभयभीतिमानिष्कृतिपातककोटिशतायुतपुश्जतर
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम् ॥

नवजलद्युतिकोटिलसत्ततुहेमभयाभररिकतके
तिल्द्वहेलिपदाश्वलचश्वलकोभितपीतसुचेलघर ।
मणिमयभूषणिचत्रपटासनरिकतगिकतभानुकरे
जय यसुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम्॥

शुभपुष्ठिने मधुमत्तयदूद्भवरासमहोत्सवकेष्ठिभरे चबकुळाचळराजितमौक्तिकहारमयाभररोदसिके । नवमणिकोटिकमास्करकञ्जुिकशोभिततारकहारयुते जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम् ॥

करिवरमौक्तिकनासिकभूषणवातचमत्कृतचञ्चलके
मुखकमलामलसौरभचञ्चलमत्तमधुत्रतलोचनिक ।
मणिगणकुण्डललोलपरिस्फुरदाकुलगण्डयुगामलके
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम्॥

कल्डरवन् पुरहेममयाचितपादसरोहहसाहणिके धिमिधिमिधिमिधिमतालविनोदितमानसमञ्जूलपादगते । तव पदपङ्कजमाश्रितमानविच्तसदाखिलतापहर जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम्।।

भवोत्तापाम्भोधौ निपतितज्ञनो दुर्गतियुता यदि स्तौति प्रात प्रतिदिनमनन्याश्रयतया । इयाहेषै काम करकुसुमपुर्ज रविसुता सदा भोका भोगान्मरणसमये याति हरिताम् ॥ ९॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचायस्य श्रागोविद्भगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ यगुनाष्टक सपूर्णम् ॥



### ॥श्री॥

# ॥ गङ्गाष्ट्रकम् ॥

भगवित भवलीलामौलिमाल तवाम्भ
कणमणुपरिमाण प्राणिनो य स्पृशन्ति ।
अमरनगरनारीचामरप्राहिणीना
विगतकलिकलङ्कातङ्कमङ्के लुठन्ति ॥ १॥

बद्धाण्ड खण्डयन्ती हरशिरसि जटाविश्वमुद्धासयन्ती स्वर्शेकादापतन्ती कनकगिरिगुहागण्डशैलात्स्खलन्ती। क्षोणीपृष्टे लुठन्ती दुरितचयचमूनिभेर भत्सयन्ती पाथोधि पूरयन्ती सुरनगरसरित्पावनी न पुनातु॥२॥

मजन्मातङ्गकुम्भन्युतमदमदिरामादमत्तालिजाल स्नाने सिद्धाङ्गनाना कुचयुगविगलःकुङ्कुमासङ्गपिङ्गम् । साय प्रातर्भुनीना कुगकुसुमचयैदिल्जतीरस्थनीर पायाञ्चो गाङ्गमम्भ करिकरमकराकान्तरहस्तरङ्गम् ॥

पार विषय स प्रिडेट्डिंड स्थालय, क उ ति शि **संस्था**य सार नाथ, बारानसी भादावादिपितामहस्य नियमच्यापारपाते जल पश्चात्पन्नगशायिनो भगवत पादोदक पावनम् । भूय शभुजटाविभूषणमणिर्जेह्वोर्भहर्षेरिय कन्या कल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी पातु माम् ॥

शौछन्द्राद्वतारिणी निजजल मजजनोत्तारिणी पारावारिवहारिणी भवभयश्रणीसमुत्सारिणी। श्रावाङ्गैरनुकारिणी हरिहारोवझीद्लाकारिणी काशीप्रान्तिवहारिणी विजयत गङ्गा मनोहारिणी।।५॥

कुतो वीची वीचिस्तव यदि गता छोचनपथ त्वमापीता पीताम्बरपुरानिवास वितरसि । त्वदुत्सङ्गे गङ्गे पतित यदि कायस्तनुभृता तदा मात शान्तकतवपदछाभाऽप्यतिछघु ॥ ६ ॥

> भगवति तव तीरे नीरमात्राशनोऽह विगतविषयतृष्ण कृष्णमाराधयामि । सकळकळुषभक्के स्वर्गसोपानसक्के तरळतरतरक्के देवि गक्के प्रसीद् ॥ ७ ॥

मातर्जाहृति श्रभुसङ्गामिछिते मौछौ निधायाश्वछि
त्वत्तीरे वपुषोऽवमानसमये नारायणाङ्किद्वयम् ।
सानन्द स्मरतो भविष्यति मम प्राणप्रयाणोतसवे
भूयाद्विकरविच्युता हरिहराद्वैतात्मिका शाश्वती ॥ ८॥

गङ्गाष्ट्रकमिद पुण्य य पठेत्प्रयतो नर । सर्वपापविनिर्भुको विष्णुलोक स गच्छति ॥ ९ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रामच्छकरभगवत कृतौ गङ्गाष्टक सपूर्णम् ॥



### ॥श्री॥

# ॥ मणिकर्णिकाष्ट्रकम् ॥

त्वत्तीरे मणिकणिके हरिहरौ सायुज्यमुक्तिप्रदौ
वादन्तौ कुरुत परस्परमुभौ जन्तो प्रयाणोत्सवे।
मद्रूपो मनुजोऽयमस्तु हरिणा प्रोक्त शिवस्तत्क्षणा
त्तनमध्याद्भगुलाञ्छनो गरुडग पीताम्बरो निगत ॥

इन्द्राद्यास्त्रिदशा पतिन्ति नियत भोगक्षये ये पुन जीयन्त मनुजास्ततोपि पशव कीटा पतङ्गादय । ये मातर्मणिकणिके तव जल्ले मज्जन्ति निष्कल्मषा सायुज्यऽपि किरीटकौस्तुभधरा नारायणा स्युनरा ॥

काशी धन्यतमा विमुक्तनगरी सालकृता गङ्गया तत्रेय मणिकणिका सुखकरी मुक्तिहिं तर्तिकरी। स्वलोकस्तुलित सहैव विबुधै काश्या सम ब्रह्मणा काशी भ्रोणितल स्थिता गुरुतरा स्वर्गो लघुत्व गत ॥ गङ्गातीरमनुत्तम हि सकछ तत्रापि काश्युत्तमा तस्या सा मणिकणिकोत्तमतमा यत्रेश्वरो मुक्किद । देवानामपि दुर्छभ स्थळमिद पापौधनाशक्षम पूर्वोपाजितपुण्यपुत्तगमक पुण्यैजेनै प्राप्यते ॥ ४ ॥

दु खाम्भोधिगतो हि जन्तुनिवहस्तेषा कथ निष्कृति ज्ञात्वा तद्धि विरिश्चिना विरिश्चिता वाराणसी कर्मदा । लोका स्वगसुखास्ततोऽपि लघवो भोगान्तपातप्रदा काशी सुक्तिपुरी सदा शिवकरी धर्माथमोक्षप्रदा ॥ ५॥

एको वेणुधरो धराधरधर श्रीवत्सभूषाधर योऽप्येक किल शकरो विषधरो गङ्गाधरो माधव । ये मातर्मणिकणिके तव जले मज्जन्ति ते मानवा कद्रा वा हरयो भवन्ति बहुवस्तेषा बहुत्व कथम् ॥ ६॥

त्वत्तीरे मरण तु मङ्गलकर देवैरिप श्लाघ्यते शकस्त मनुज सहस्रनयनैद्रष्टु सदा तत्पर । आयान्त सविता सहस्रकिरणै प्रत्युद्रतोऽभूत्सदा पुण्योऽसौ वृषगोऽथवा गरुडग किं मदिर यास्पति ॥ मध्याह्वे मणिकणिकास्तपनज पुण्य न वक्तु क्षम
स्वीयैरब्धशतैश्चतुर्भुखधरो वेदाथदीक्षागुरु ।
योगाभ्यासबळेन चन्द्रशिखरस्तत्पुण्यपारगत
स्वत्तीरे प्रकराति सुप्तपुरुष नारायण वा शिवम् ॥ ८॥

कुच्छ्रै कोटिशते खपापनिधन यद्याश्वमेधे फल तत्सर्व मणिकणिकास्त्रपन जे पुण्ये प्रविष्ट भवेत्। स्नात्वा स्तोत्रमिद् नर पठित चेत्ससारपाथोनिधिं तीर्त्वो परुवलवत्प्रयाति सद्न तेजोमय ब्रह्मण ॥ ९ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरित्राजकाचायस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ मणिकोणिकाष्टक सपूर्णम् ।।



### ॥ श्री ॥

## ॥ निर्ग्रणमानसपूजा ॥

शिष्य खवाच--

अखण्डे सिच्चानन्दे निर्विकल्पैकरूपिणि। स्थिते ऽद्वितीय भावे ऽपि कथ पूजा विधीयते ॥ १ ॥ पूर्णस्यावाहन कुत्र सर्वोधारस्य चासनम् । खच्छस्य पाद्यमध्ये च शुद्धस्याचमन कुत ॥ २ ॥ निर्मलस्य कुत स्नान वासो विश्वोदरस्य च। अगोत्रस्य त्ववर्णस्य कुतस्तस्योपवीतकम् ॥ ३ ॥ निर्छेपस्य कुता गन्ध पुष्प निर्वासनस्य च। निर्विशेषस्य का भूषा कोऽलकारो निराकृते ॥ ४ ॥ निरञ्जनस्य किं धूपैर्दिपैर्वा सर्वसाक्षिण निजानन्दैकतृप्तस्य नैवेद्य कि भवेदिह ॥ ५ ॥ विश्वानन्द्यितुस्तस्य किं ताम्बूछ प्रकल्पते । स्वयप्रकाशिचद्रूपा योऽसावकीदिभासक ॥ ६॥

गीयते श्रुतिभिस्तस्य नीराजनविधि कुत । प्रदक्षिणमनन्तस्य प्रमाणोऽद्वयवस्तुन ॥ ७॥

वेदवाचामवेद्यस्य किं वा स्तोत्र विधीयते । अन्तर्वेहि सस्थितस्योद्वासनविधि कुत ॥ ८॥

#### श्रीगुरुरुवाच----

आराधयामि मणिसनिभमात्मिछङ्ग मायापुरीहृद्यपङ्कजसनिविष्टम् । श्रद्धानदीविमस्यचित्तजस्याभिषेकै निस्य समाधिकुसुमैरपुनभेवाय ॥ ९ ॥

भयमेकोऽवशिष्टोऽस्मीत्येवमावाह्येच्छिवम् । आसन कल्पयेत्पश्चात्स्वप्रतिष्ठात्मचिन्तनम् ॥ १० ॥

पुण्यपापरज सङ्को मम नास्तीति वेदनम् । पाद्य समर्पयेद्विद्वान्सवकल्मषनाशनम् ॥ ११ ॥

अनादिकल्पविधृतमूळाज्ञानजळा खाळिम् । विसृजेदात्मळिङ्गस्य तदेवार्घ्यसमर्पणम् ॥ १२ ॥

ब्रह्मानन्दाब्धिकल्लोलकणकोट्यशलेशकम् । पिबन्तीन्द्रादय इति भ्यानमाचमन मतम् ॥ १३ ॥ ब्रह्मानन्द्जलेनैव लोका सर्वे परिप्रुता । अच्छेद्योऽयमिति ध्यानमभिषचनमात्मन ॥ १४॥

निरावरणचैतन्य प्रकाशाऽस्मीति चिन्तनम् । आत्मलिङ्गस्य सद्वस्त्रमित्येव चिन्तयेनमुनि ॥ १५॥

त्रिगुणात्माञ्चेषळोकमाळिकासूत्रमस्म्यहम् । इति निश्चयमेवात्र द्युपवीत पर मतम् ॥ १६ ॥

अनेकवासनामिश्रप्रपश्चोऽय घृतो यया । नान्येनेत्यनुसंघानमात्मनश्चन्दन सवेत् ॥ १७ ॥

रज सत्त्वतमोवृत्तित्यागरूपैस्तिङाश्चते । आत्माङिङ्ग यजेन्नित्य जीवनमुक्तिप्रसिद्धये ॥ १८॥

ईश्वरो गुरुरात्मेति भेदत्रयविवर्जिते । विल्वपत्रैरद्वितीयैरात्मिळङ्ग यजेच्छिनम् ॥ १९ ॥

समस्तवासनात्याग धूप तस्य विचिन्तयेत् । ज्योतिर्मयात्मविज्ञान दीप सदर्शयेद्वुध ॥ २०॥

नैवेद्यमात्मिळक्कस्य ब्रह्माण्डारय महोदनम् । पिवानन्दरस स्वादु मृत्युरस्यापसचनम् ॥ २१ ॥

अज्ञानोिन्छष्टकरस्य भ्राउन ज्ञानवारिणा। विश्रद्धस्यात्मलिङ्गस्य इस्तप्रश्वालन म्मरेत् ॥ २२ ॥ रागादिगुणशून्यस्य शिवस्य परमात्मन । सरागविषयाभ्यासत्यागस्ताम्बृळचवणम् ॥ २३ ॥ अज्ञानध्वान्तविध्वसप्रचण्डमतिभास्करम् । आत्मनो ब्रह्मताज्ञान नीराजनमिहात्मन ॥ २४ ॥ विविधनद्वासदृष्टिमीलिकाभिरलकृतम् । पूर्णानन्दात्मतादृष्टिं पुष्पाश्वाखिमतुस्मरेत् ॥ २५ ॥ परिश्रमन्ति ब्रह्माण्डसहस्राणि मयीश्वरे। कूटस्थाचलरूपोऽहमिति ध्यान प्रदक्षिणम् ॥ २६ ॥ विश्ववन्द्योऽहमेवास्मि नास्ति वन्धो मदन्यत । इत्यालोचनमेवात्र स्वात्मलिङ्गस्य वन्दनम् ॥ २७॥ आत्मन सिक्किया श्रोक्ता कर्तव्याभावभावना । नामरूपव्यतीतात्मचिन्तन नामकीर्तनम् ॥ २८ ॥ श्रवण तस्य द्वस्य श्रोतव्याभावचिन्तनम् ।

मनन त्वात्मिळिङ्गस्य मन्तव्याभावचिन्तनम् ॥ २९ ॥

ध्यातव्याभावविज्ञान निद्धियासनमात्मन । समस्तभ्रान्तिविक्षेपराहिस्रेनात्मनिष्ठता ॥ ३० ॥

समाधिरात्मनो नाम नान्यिचित्तस्य विश्वम । तत्रैव ब्रह्मणि सदा चित्तविश्रान्तिरिष्यते ॥ ३१ ॥

एव वेदान्तकस्पोक्तसात्मिळङ्गप्रपूजनम् । कुर्वन्ना मरण वापि क्षण वा सुसमाहित ॥ ३२॥

सर्वेदुर्वासनाजाल परपासुमिव स्वजेत् । विधूयाज्ञानदु खौष मोक्षानन्द समदनुते ॥ ३३ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचायस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमञ्ज्ञकरभगवत कृतौ निगुणमानसपूजा सपूणो ॥



### ॥ श्री ॥

### ॥ प्रातःस्मरणस्तोत्रम् ॥

प्रात स्मरामि हृदि सस्फुरदात्मतत्त्व सिचत्सुख परमहस्मगतिं तुरीयम् । यस्तु प्रजागरसुषुप्रमवैति नित्य तद्भवा निष्कलमह न च भूतसङ्ख ॥ १ ॥

श्रातभजामि मनसा वससामगम्य बाचो विभान्ति निखिला यद्तुमहेण। यभ्रेति नेति वचनैर्निगमा अवीच स्त देवदेवमजमच्युतमाहुरप्रयम्॥ २॥

श्रातनेमामि तमस परमर्कवर्ण पूर्ण सनातनपद पुरुषोत्तमारयम् । यस्मिन्निद् जगद्शेषमश्लेषमूतौ रङ्खा भुजगम इव प्रतिभासित वै ॥ ३ ॥ ऋोकत्रयमिद पुण्य छोकत्रयविभूषणम् । प्रात काळे पठेचस्तु स गच्छेत्परम पदम् ॥ ४ ॥

> इति श्रीमत्परमइसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोविद्भगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ श्रात स्मरणस्तोल सपूर्णम् ॥



#### ॥ श्रीः ॥

### ॥ जगन्नाथाष्ट्रकम् ॥

कदाचित्कालिन्दीतटविपिनसगीतकवरो गुदा गापीनारीवद्नकमलास्वादमधुप । रमाशभुबद्धामरपतिगणशार्चितपदो जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामा भवतु मे ॥ १ ॥

भुजे सन्ये वेणु शिरसि शिखिपिञ्छ कटितटे

दुकूछ नेत्रान्त सहचरकटाक्ष विदधत्।

सदा श्रीमद्भृन्दावनवस्रतिलीलापरिचयो

जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ २ ॥

महाम्भोधेस्तीरे कनकरुचिर नीळाशिखरे वसन्त्रासादान्त सहजबळभद्रेण बळिना । सुभद्रामध्यस्य सक्छसुरसेवावसरदो जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ३ ॥ कुपापारावार सजळजळदश्रेणिकचिरो रमावाणीसोमस्कुरदमळपद्मोद्भवमुखे । सुरेन्द्रेराराध्य श्रुतिगणशिखागीतचरितो जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ४ ॥

रथारूढो गच्छन्पथि मिलितभूदेवपटलै स्तुतिप्रादुर्भाव प्रतिपद्मुपाकण्यं सद्य । द्यासिन्धुर्बन्धु सकलजगता सिन्धुसुत्तया जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ५ ॥

परब्रह्मापीड कुवलयदलोत्फुल्लनयनो निवासी नीलाद्रौ निहितचरणोऽनन्तशिरसि। रसानन्दो राधासरसवपुरालिङ्गनसुखो जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ६ ॥

न वै प्रार्थ्य राज्य न च कनकता भोगविभवे न याचेऽह रम्या निखिछजनकाम्या वरवधूम् । सदा काळे काळे प्रमथपतिना गीतचरितो जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ७ ॥ हर त्व ससार द्वृततरमसार सुरपते
हर त्व पापाना विततिमपरा यादवपते।
अहो दीनानाथ निहितमचळ पातुमनिश
जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे।। ८॥

इति श्रीमत्परमद्दसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोविद्मगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमञ्ज्ञकरमगवत कृतौ जगन्नाथाष्टक सपूर्णम् ॥



### ॥श्री॥

# ॥ षट्पदीस्तोत्रम् ॥

अविनयमपनय विष्णो
दमय मन शमय विषयमृगतृष्णाम् ।
भूतद्या विस्तारय
तारय ससारसागरत ॥ १॥

दिव्यधुनीमकरन्दे
परिमलपरिभोगसिद्दानन्द्।
श्रीपतिपदारविन्दे
भवभयखेदच्छिदे वन्दे॥ २॥

सत्यपि भेदापगमे

नाथ तवाह न मामकीनस्त्वम् ।
सामुद्रो हि तरङ्ग

कचन समुद्रो न तारङ्ग ॥ ३ ॥

दढूतनग नगभिदनुज दनुजकुछामित्र मित्रशशिदष्टे । दृष्टे भवति प्रभवति न भवति किं भवतिरस्कार ॥ ४ ॥

मत्स्यादिभिरवतारै-रवतारवतावता सदा वसुधाम् । परमेश्वर परिपाल्यो भवता भवतापभीतोऽहम् ॥ ५ ॥

दामोदर गुणमन्दिर
सुन्दरवदनारविन्द गोविन्द ।
भवजलिधमथनमन्दर
परम दरमपनय त्व मे ॥ ६ ॥

नारायण करुणामय श्वरण करवाणि तावकौ चरणौ। इति षट्पदी मदीये वदनसरोजे सदा वसतु॥ ७॥

इति षद्पदीस्तोत्र सपूर्णम् ॥

#### ॥ श्री ॥

### ॥ भ्रमराम्बाष्टकम् ॥

चाश्वस्यारुणछोचनाश्वितक्वृपाचनद्राकचूडामणि
चारुस्मेरमुखा चराचरजगत्सरक्षणीं तत्पदाम् ।
चश्वचम्पकनासिकाप्रविळसनमुक्तामणीरिकता
श्रीशैळस्थळवासिनीं भगवतीं श्रीमात्र भावये ॥ १ ॥

कस्तूरीतिलकाि चतेन्दुविलसःशोद्धासिफालस्थली कर्पूरद्रविमश्रचूर्णखिदरामोदोल्लसद्वीटिकाम् । लोलापाङ्गतरङ्गितैरधिक्ठपासारैनेतानिन्दनीं श्रीशैलस्थलवासिनी भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ २ ॥

राजन्मत्तमरालमन्दगमना राजीवपत्रेक्षणा
राजीवप्रभवादिदेवमकुटै राजत्पदाम्भोरुहाम् ।
राजीवायतमन्दमण्डितकुचा राजाधिराजेश्वरीं
श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ३ ॥

षट्तारा गणदीपिका शिवसती षड्वैरिवर्गापहा षट्चक्रान्तरसस्थिता वरसुधा षड्योगिनीवेष्टिताम् । षट्चक्राञ्चितपादुकाञ्चितपदा षड्भावगा षोडशीं श्रीशैलस्थलवासिनी भगवती श्रीमातर भावये ॥ ४ ॥

श्रीनाथादृतपालितत्रिभुवना श्रीचकसचारिणीं ज्ञानासक्तमनोजयौवनलसद्गन्धर्वकन्यादृताम् । दीनानामतिवेलभाग्यजननीं दिव्याम्बरालकृता श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवती श्रीमातर भावये ॥ ५ ॥

खावण्याधिकभूषिताङ्गछितिका लाक्षालसद्रागिणीं सेवायातसमस्तदेवविता सीमन्तभूषान्विताम् । भावोक्षासवशिक्तप्रियतमा भण्डासुरच्छेदिनी श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ६ ॥

धन्या सोमविभावनीयचरिता धाराधरश्यामला

गुन्याराधनमेधिनीं सुमवता मुक्तिप्रदानव्रताम् ।

कन्यापूजनसुप्रसन्नद्दया काश्वीलसन्मध्यमा

श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ७ ॥

कर्पूरागरकुङ्कमाङ्कितकुचा कर्पूरवर्णस्थिता कृष्टोत्कृष्टसुकृष्टकमदहना कामेश्वरीं कामिनीम् । कामाश्वीं करुणारसार्द्रहृदया कल्पान्तरस्थायिनीं श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ८ ॥

गायत्रीं गरुडध्वजा गगनगा गान्धवैगानिषया
गम्भीरा गजगामिनीं गिरिसुता गन्धाक्षतालकृताम् ।
गङ्गागौतमगर्गसनुतपदा गा गौतमीं गोमतीं
श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमह्सपरिवाजकाचार्यस्य श्रागोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ भ्रमराम्बाष्टकं सपूर्णम् ॥



#### ॥ श्री ॥

# ॥ शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्रोत्रम् ॥

श्रीमदात्मने गुणैकसिन्धवे नम शिवाय धामछेशधूतकोकबन्धवे नम शिवाय । नामशेषितानमद्भवान्धवे नम शिवाय पामरेतरप्रधानबन्धवे नम शिवाय ॥ १ ॥

कालभीतिविप्रवालपाल ते नम शिवाय शुलिभनदुष्टदक्षफाल ते नम शिवाय। मूलकारणाय कालकाल ते नम शिवाय पालयाधुना द्यालवाल ते नम शिवाय॥ २॥

इष्टवस्तुमुख्यदानहेतवे नम शिवाय दुष्टदैत्यवशधूमकेतवे नम शिवाय । सृष्टिरक्षणाय धर्मसेतवे नम शिवाय अष्टमूर्तये वृषेन्द्रकेतवे नम शिवाय ॥ ३ ॥ आपद्दिभेदटङ्कहस्त ते नम शिवाय पापद्दारिदिव्यसिन्धुमस्त ते नम शिवाय । पापद्दारिणे छसन्नमस्तते नम शिवाय शापद्दोषखण्डनप्रशस्त ते नम शिवाय ॥ ४॥

व्योमकेश दिव्यभव्यरूप ते नम शिवाय हेममेदिनीघरेन्द्रचाप ते नम शिवाय। नाममात्रदग्धसर्वपाप ते नम शिवाय कामनैकतानहृहुराप ते नम शिवाय॥ ५॥

ब्रह्ममस्तकावलीनिबद्ध ते नम शिवाय जिह्मगेन्द्रकुण्डलप्रसिद्ध ते नम शिवाय । ब्रह्मणे प्रणीतवेद्पद्धते नम शिवाय जिह्नकालदेहद्त्तपद्धते नम शिवाय ॥ ६ ॥

कामनाशनाय शुद्धकर्मणे नम शिवाय सामगानजायमानशर्मणे नम शिवाय। हेमकान्तिचाकचक्यवर्मणे नम शिवाय सामजासुराङ्गळब्धचर्मणे नम शिवाय॥ ७॥

### १२४ शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम् ।

जन्ममृत्युघोरदु खहारिणे नम शिवाय । चिन्मयैकरूपदेहधारिणे नम शिवाय । मन्मनोरथावपूर्तिकारिणे नम शिवाय सन्मनोगताय कामनैरिणे नम शिवाय ॥ ८ ॥

यक्षराजवन्धवे दयालवे नम शिवाय दक्षपाणिशोभिकाश्चनालवे नम शिवाय। पक्षिराजवाहहृच्छयालवे नम शिवाय अश्विफाल वेदपूततालवे नम शिवाय॥ ९॥

दश्चहस्तिनिष्ठजातवेदसे नम शिवाय अश्वरात्मने नमद्विडोजसे नम शिवाय । दीक्षितप्रकाशितात्मतेजसे नम शिवाय उश्वराजवाह ते सता गते नम शिवाय ॥ १०॥

राजताचछेन्द्रसातुवासिने नम शिवाय राजमाननिद्यमन्द्हासिने नम शिवाय। राजकोरकावतसभासिने नम शिवाय राजराजमित्रताशकाशिने नम शिवाय॥ ११॥ दीनमानवालिकामधेनवे नम शिवाय सुनवाणदाहकुत्कुशानवे नम शिवाय। स्वानुरागभक्तरत्रसानवे नम शिवाय दानवान्धकारचण्डभानवे नम शिवाय ॥ १२ ॥

सर्वमङ्गळाकुचाप्रशायिने नम शिवाय सबदेवतागणातिज्ञायिन नम शिवाय पूर्वदेवनाशसविधायिने नम शिवाय सर्वमन्मनोजभद्भदायिने नम शिवाय ॥ १३ ॥

स्तोकभक्तितोऽपि भक्तपोषिणे नम शिवाय माकरन्दसारवर्षिभाषिणे नम शिवाय। एकबिरुवदानतोऽपि तोषिणे नम शिवाय नैकजन्मपापजालकोषिणे नम शिवाय ॥ १४ ॥

सर्वजीवरक्षणैकशीछिने नम शिवाय पार्वतीप्रियाय भक्तपालिने नम शिवाय। दुर्विद्ग्धदैत्यसैन्यदारिण नम शिवाय जर्बरीजधारिणे कपालिने नम जिवाय ॥ १५ ॥ पाहि मामुमामनोज्ञदेह ते नम शिवाय देहि मे वर सिताद्रिगेह ते नम शिवाय। मोहितर्षिकामिनीसमूह ते नम शिवाय स्वेहितप्रसन्न कामदोह ते नम जिवाय ॥ १६ ॥

मङ्गलप्रदाय गोतुरग ते नम शिवाय गक्रया तरक्रितोत्तमाङ्ग ते नम शिवाय। सङ्गरप्रवृत्तवैरिभद्ग त नम शिवाय अङ्गजारय करेकुरङ्ग त नम शिवाय ॥ १७ ॥

ईहितक्षणप्रदानहेतवे नम जिवाय आहितामिपाळकोक्षकेत्रे नम शिवाय। देहकान्तिधूतरौष्यधातवे नम शिवाय गेहदु खपुर्वधूमकेतवे नम शिवाय ॥ १८ ॥

ज्यक्ष दीनसत्क्रपाकटाक्ष ते नम शिवाय दक्षसप्ततन्त्रनाशदक्ष ते नम शिवाय। ऋक्षराजभानुपावकाक्ष त नम शिवाय रक्ष मा प्रपन्नमात्ररक्ष ते नम शिवाय ॥ १९॥ न्यङ्कपाणये शिवकराय ते नम शिवाय सकटाव्धितीर्णिकंकराय ते नम शिवाय। पद्रभीषिताभयकराय ते नम शिवाय पङ्कजाननाय शकराय ते नम शिवाय ॥ २० ॥

कर्मपाञनाञ नीलकण्ठ ते नम शिवाय शर्मदाय नर्यभस्मकण्ठ ते नम शिवाय। निर्ममर्षिसेवितोपकण्ठ ते नम शिवाय कुर्महे नतीर्नमद्विकुण्ठ ते नम शिवाय ॥ २१ ॥

विष्टपाधिपाय नम्नविष्णवे नम शिवाय शिष्टविप्रहृद्धहाचरिष्णवे नम शिवाय। इष्टवस्तुनित्यतुष्टजिष्णवे नम शिवाय कष्टनाज्ञनाय लोकजिष्णवे नम शिवाय ॥ २२ ॥

अप्रमेयदिव्यसुप्रभाव ते नम शिवाय सत्प्रपन्नरक्षणस्वभाव ते नम शिवाय। स्वप्रकाश निस्तुलानुभाव ते नम शिवाय विप्रडिम्भदर्शितार्दभाव ते नम शिवाय ॥ २३ ॥

### १२८ शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम् ।

सेवकाय मे मृड प्रसीद ते नम शिवाय
भावलभ्य तावकप्रसाद ते नम शिवाय।
पावकाक्ष देवपूज्यपाद ते नम शिवाय
तावकाक्षिभक्तदत्तमोद ते नम शिवाय।। २४॥

भुक्तिमुक्तिदिव्यभोगदायिने नम शिवाय शक्तिकित्पतप्रश्वभागिने नम शिवाय। भक्तसकटापहारयोगिने नम शिवाय युक्तसन्मन सरोजयोगिने नम शिवाय॥ २५॥

अन्तकान्तकाय पापहारिण नम शिवाय शान्तमायदन्तिचर्मधारिणे नम शिवाय। सतताश्रितव्यथाविदारिणे नम शिवाय जन्तुजातनित्यसौख्यकारिणे नम शिवाय।। २६॥

शूलिने नमो नम कपालिने नम शिवाय पालिने विरिश्वितुण्डमालिने नम शिवाय। लीलिने विशेषरुण्डमालिने नम शिवाय शीलिने नम प्रपुण्यशालिने नम शिवाय॥ २७॥ शिवपश्चाश्वरमुद्रा चतुष्पदोञ्जासपद्यमणिघटिताम् । नश्चत्रमास्टिकामिह द्यदुपकण्ठ नरो भवेत्सोम ॥ २८॥

इति श्रीमत्परमइसपरिवाजकाचायस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्र सपूर्णम् ॥



# ॥ द्वादशलिङ्गस्तोत्रम् ॥



सौराष्ट्रदेशे वसुधावकाशे
ज्योतिमय चन्द्रकछावतसम्।
भक्तिप्रदानाय कृतावतार
त सोमनाथ शरण प्रपद्ये ॥ १ ॥

श्रीशैळशृक्क विविधप्रसङ्गे शेषाद्रिशृङ्केऽपि सदा वसन्तम् । तमर्जुन मिक्किपूर्वमेन नमामि ससारसमुद्रसेतुम् ॥ २ ॥

अवन्तिकाया विहितावतार

मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम्।
अकालमृत्यो परिरक्षणार्थ

वन्दे महाकालमह सुरेशम्॥ ३॥

कावेरिकानमेदयो पवित्रे
समागमे सज्जनतारणाय।
सदैव मान्धातृपुरे वसन्तः
मोकारमीश शिवमेकमीढे॥ ४ ॥

पूर्वोत्तरे पारिकामिधाने
सदाक्षित त गिरिजासमेतम् ।
सुरासुराराधितपादपद्यः
श्रीवैद्यनाथ सतत नमामि ॥ ५ ॥

आमर्दसङ्गे नगरे च रम्ये विभूषिताङ्ग विविधेश्व भोगै । सङ्गुक्तिमुक्तिप्रदमीशमेक ,श्रीनागनाथ शरण प्रपद्ये ॥ ६ ॥

सानन्दमानन्दवने वसन्त मानन्दकन्द हर्तपापबृन्दम् । वाराणसीनाथमनाथनाथ श्रीविश्वमाथं शर्रणं श्रवस्ति । ७११ यो डाकिनीशाकिनिकासमाजे
निषेव्यमाण पिशिताशनैश्च।
सदैव भीमादिपदप्रसिद्ध
त शकर भक्तिहत नमामि ॥ ८॥

श्रीताम्रपर्णीजलराशियोगे निबद्धय सेतु निशि बिल्वपत्रै । श्रीरामचन्द्रेण समर्वित त रामेश्वराख्य सतत नमामि ॥ ९ ॥

सिंहाद्रिपार्श्वेऽपि तट रमन्त
गोदावरीतीरपवित्रदेशे ।
यद्शेनात्पातकजातनाश
प्रजायते ज्यम्बकमीशमीडे ॥ १०॥

हिमाद्रिपार्श्वेऽपि तटे रमन्त सपूज्यमान सतत सुनीन्द्रे । सुरासुरैर्यक्षमहोरगाचै केदारसङ्ग शिवमीशमीढे ॥ ११ ॥ पळापुरीरम्यशिवाळयेऽस्मि
न्समुक्कसन्त त्रिजगद्धरेण्यम् ।
वन्दे महोदारतरस्वभाव
सदाशिव त धिषणेश्वराख्यम् ॥ १२ ॥

एतानि लिङ्गानि सदैव मर्त्या प्रात पठन्तोऽमलमानसाश्च । ते पुत्रपौत्रेश्च धनैहदारै सत्कीर्तिभाज सुखिनो भवन्ति ॥ १३॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमञ्छकरभगवत कृतौ द्वादशालिक्सस्तोत्र सपूर्णम् ।



#### ॥ आ ॥

# ॥ अर्धनारीश्वरस्तोत्रम् ॥



चाम्पेयगौरार्घशरीरकायै
कर्पूरगौराधशरीरकाय।
धिममहकायै च जटाधराय
नम' शिवायै च नम शिवाय॥ १॥

करतूरिकाकुकुमचर्चितायै
चितारज पुश्विचर्चिताय।
कृतस्मरायै विकृतस्मराय
नम शिवायै च नम शिवाय॥ २॥

झणत्कणत्कङ्कणन् पुराये
पादाब्जराजत्कणिन् पुराय ।
देमाङ्गदाये भुजगाङ्गदाय
नम शिवाये च नम शिवाय ॥ ३ ॥

विशासनी होत्पर स्थापनाये विकासिपक्के कहरो चनाय । समेक्षणाये विषमेक्षणाय नम शिवाये चनम शिवाय ॥ ४ ॥

मन्दारमाळाकिळिताळकायै
कपाळमाळाङ्कितकन्धराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय
नम शिवायै च नम शिवाय।। ५ ॥

अम्भोधरद्वयामलकुन्तलायै

तिस्त्रभाताम्रजटाधराय ।

निरीश्वरायै निखिलेश्वराय

नम शिवायै च नम शिवाय ॥ ६ ॥

प्रपश्चसृष्ट्युन्मुखलास्यकाये
समस्तसहारकताण्डवाय ।
जगज्जनन्ये जगदेकपित्रे
नम शिवाये च नम शिवाय ॥ ७ ॥

प्रदीप्तरत्नोड्ज्वलकुण्डलायै स्फुरन्महापन्नगभूषणाय । शिवान्वितायै च शिवान्विताय नम शिवायै च नम शिवाय ॥ ८॥

एतत्पठेदष्ठकमिष्टद् या
भक्त्या स मान्यो भुवि दीघजीवी ।
प्राप्नोति सौभाग्यमनन्तकाल
भूयात्सदा तस्य समस्तसिद्धि ॥ ९ ॥

इति भीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ अर्धनारीश्वरस्तोलम् सपूर्णम् ॥



# ॥ शारदाभुजंगप्रयाताष्ट्रकम् ॥



सुवक्षोजकुम्भा सुधापूर्णकुम्भा प्रसादावलम्बा प्रपुण्यावलम्बाम् । सदास्येन्दुविम्बा सदानोष्ठविम्बा भजे शारदाम्बामजस्र मदम्बाम् ॥ १ ॥

कटाश्चे दयाद्री करे ज्ञानमुद्रा कलाभिविनिद्रा कलापै सुभद्राम् । पुरस्त्री विनिद्रा पुरस्तुङ्गभद्रा भजे ज्ञारदाम्बामजस्त्र मदम्बाम् ॥ २ ॥

ख्छामाङ्कफृाला छसद्रानछोला स्वभक्तैकपाला यश श्रीकपोलाम् । करे त्वक्षमाला कनत्त्रत्नछोला भजे शारदाम्बामजस्र मदम्बाम् ॥ ३ ॥ सुसीमन्तवेणीं दशा निर्जितैणीं रमत्कीरवाणीं नमद्भजपाणीम् । सुधामन्थरास्या सुदा चिन्त्यवेणीं भजे शारदाम्बामजस्र मदम्बाम् ॥ ४ ॥

सुशान्ता सुदेहा हगन्ते कचान्ता

ळसत्सङ्कताङ्गीमनन्तामचिन्त्याम् ।

स्मरेत्तापसै सङ्गपूर्वस्थिता ता

भजे शारदान्यामजस्र मदम्बाम् ॥ ५ ॥

कुरक्के तुरगे मृगेन्द्रे खगेन्द्रे मराले मदेभे महोक्षेऽधिक्तलाम् । महत्या नवस्या सदा सामक्रपा भजे शारदास्वामजस्र मदस्वाम् ॥ ६ ॥

उवलकान्तिवहिं जगन्मोहनाङ्गी भजे मानसाम्भोजसुभ्रान्तभृङ्गीम् । निजस्तोत्रसगीतनृत्यप्रभाङ्गी भजे शारदाम्बामजस्य मदम्बाम् ॥ ७ ॥

#### शारदाभुजगप्रयाताष्टकम्।

भवाम्भोजनेत्राजसपूज्यमाना

छसन्मन्द्रासप्रभावकत्रचिहाम् ।

चछश्रकाचारताटङ्कर्णा

भजे शारदाम्बामजस्न मदम्बाम् ॥ ८॥

इति श्रीमत्परमहसपिष्वाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ शारदासुजगप्रयाताष्टक सपूर्णम् ॥



# ॥ गुर्वष्टकम् ॥

श्रारीर सुरूप तथा वा कलत्र यशश्चार चित्र धन मेरुतुल्यम्। मनश्चेत्र लग्न गुरोरङ्घिपदा तत किंतत किंतत किंतत किंतत किम्॥ १॥

कलत्र धन पुत्रपौत्रादि सर्वे
गृह बान्धवा सर्वमेतद्धि जातम्।
मनश्चेत्र लग्न गुरोरङ्ग्रिपद्ये
तत किं तत किं तत किं तत किम्॥ २॥

पडक्कादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या कवित्वादि गद्य सुपद्य करोति । मनश्चेत्र लग्न गुरोरङ्ग्रिपद्मे तत्त किंतत किंतत किंतत किम्॥ ३॥ विदेशेषु मान्य स्वदेशेषु धन्य सदाचारवृत्तेषु मत्तो न चान्य । मनश्चेत्र छप्न गुरोरङ्घिपदा तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ४॥

श्वमामण्डले भूपभूपालवृन्दै

सदा सेवित यस्य पादारविन्दम् ।

मनश्चेत्र लम गुरोरङ्घिपद्मे

तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ५ ॥

यशो मे गत दिक्षु दानप्रतापा जगद्वस्तु सर्व करे यत्प्रसादात्। मनश्चेत्र लग्न गुरोरङ्घिपद्ये तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ६॥

न भोगे न योगे न वा वाजिराजी न कान्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम् । मनश्चेष्ठ छम्न गुरोरङ्घिपद्ये तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ७ ॥ भरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये न देहे मनो वर्तते मे त्वनध्ये। मनश्चेत्र छम्न गुरोरङ्घिपद्ये तत किंतत किंतत किंतत किम्॥ ८॥

गुरोरष्टक य पठेःपुण्यदेही
यतिर्भूपतिर्ज्ञद्वाचारी च गेही।
लभेद्वाञ्चितार्थ पद ज्ञद्वासज्ञ
गुरोहक्तवाक्ये मनो यस्य लग्नम् ॥ ९॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ गुर्वेष्टक सपूर्णम् ॥



## ॥ काशीपञ्चकम् ॥



मनो निवृत्ति परमोपशान्ति सा तीर्थवर्या मणिकणिका च। ज्ञानप्रवाहा विमळादिगङ्गा सा काशिकाह निजवोधरूपा ॥ १॥

यस्यामिद् कल्पितमिन्द्रजाल चराचर भावि मनोविलासम् । सिचत्सुर्खेका परमात्मरूपा सा काशिकाह निजनोधरूपा ॥ २ ॥

कोशेषु पश्चस्वधिराजमाना बुद्धिर्भवानी प्रतिदेहगेहम् । साक्षी शिव सर्वगतोऽन्तरात्मा सा काशिकाह निजवोधकपा ॥ ३ ॥ काश्या हि काशत काशी काशी सर्वप्रकाशिका। सा काशी विदिता येन तेन प्राप्ता हि काशिका॥ ४॥

काशिक्षेत्र शरीर त्रिभुवनजननी व्यापिनी ज्ञानगङ्गा
भक्ति श्रद्धा गयेय निजगुरुचरणध्यानयोग प्रयाग ।
विश्वेशोऽय तुरीय सकळजनमन साक्षिभूतोऽन्तरात्मा
देहे सर्व मदीये यदि वसति पुनस्तीर्थमन्यत्किमस्ति ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रागोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ काशीप अक संपूर्णम् ॥





॥ श्रीः ॥

# ॥ श्लोकातुक्रमणिका ॥



	वृष्ठम्		पुष्ठम्
अ		अनादिकल्प	306
अखण्डे सचिदान दे	909	अनेकवासनामिश्र	908
अगौरनेत्रै	69	अतकातकाय	926
अग्रे विह्न	६६	अ धस्य मे हृतविवेक	98
अङ्ग गलित	ह्रष	अन्नपूर्णे सदापूर्णे	00
अङ्ग इरे पुलक	190	अपारकारुण्य	64
अच्युत केशव राम	39	अप्रमेयदि य	970
अच्युत केशव सत्य	39	अम्भोधरश्यामल	934
अच्युतस्याष्टक य	89	अयमेकोऽवशिष्टो	१०८
अज रुक्मिणीप्राण	36	अयि मधुरे	36
अज्ञानध्वान्त	99	अरण्ये न वा स्वस्य	१४२
अज्ञानो च्छिष्टकरस्य	990	अर्थमनर्थे	89
अदृहासभिन्न	९०	अलक्षलक्ष	83
अतिविपदाम्बुधि	99	अलक्ष्यलक्ष	53
अद्राक्षमक्षीण	68	अवन्तिकाया	**

### १४८ ऋोकानुकमणिका।

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
अविनयमपनय	990	आहुयस्य स्वरूप	२२
अवीरासनस्यै •	9	इ	
अव्यान्निर्घात	२२	इद तु नमदाष्टक	98
असि-धुपकोपै ०	9	इदायास्त्रिदशा	१०४
असीतासमेतै •	1	इष्टवस्तुमुर्य	१२२
असूनायम्यादौ	४२	इष्टाविशिष्टमतयो ०	७२
अहो धृत खन	88	ई	
आ		ईश्वरो गुरुरात्मेति	१०९
आकृतिसाम्याच्छाल्म ०	99	ईहितक्षणप्रदान	१२६
आकामद्रया त्रिलोकी	२५	ख	
आचार्येम्यो लब्ध	YE	उद्भतनग	996
आत्मन सिक्कया	990	उचदानुसहस्र	७९
आदावादिपितामहस्य	१०२	उन्नम्र कम्रमुचै०	२७
आदिक्षान्त	७६	उपासकाना त्व०	66
आदौ कल्पस्य	26	उपासकाना य०	42
आपदद्रिभेद	923	उपासते य	69
आपादादा च शीर्षात्	3.	उर्वी <b>सर्वजनेश्वरी</b>	७६
आमर्दसरो	939	ų	
आमीलिताक्ष०	99	एकीकृत्यानेक	५२
आराधयामि	206	एकेन चक्रमपरेण	9 &
आलेपत्रन्त	८६	एकेन मुद्रा	28

	श्लोकानुक्रमणिका ।		186	
	पृष्ठम्		वृष्ठम्	
एको वेणुधरो	904	कलाभिरिदो ०	164	
एतत्पठे <b>दष्टक</b> मिष्टद	१३६	कस्त्रिकाकुङ्कम	8 3 8	
एतत्पवनसुतस्य	२	कस्त्रीतिलका०	115	
एतानि लिङ्गानि	933	कस्त्व कोऽह	६७	
एलापुरीरम्य	9 3 3	का ते कान्ता क॰	६४	
एव वेदान्त०	999	काते काताघ०	६५	
ओ		कात कारणकारण	40	
ओत प्रोत	48	कात वक्षा नितान्त	25	
क		कान्त्यम्भ पूरपूर्णे	26	
कटाक्षे दयाद्री	0 \$ \$	कान्त्या निदित	60	
कण्ठाकल्पोद्गतैर्य	30	काम कोध	86	
कदाचित्कालि दी	998	कामनाशनाय	983	
कफ॰याइतोब्ण	२१	कालभीतविप्र	122	
कमले कमलाक्ष	७४	कालभैरवाष्ट्रक	89	
<b>कम्राकारा</b>	२३	कालाम्बुदालिललितो •	99	
करिवरमौक्तिक	99	कावेरिकानर्भदयो	139	
कर्णस्यस्वर्णकम्रोः	39	काशीक्षेत्र शरीर	988	
कर्पूरागरकुङ्कमा०	929	काशी धन्यतमा	908	
कर्मपाशनाश	920	काश्या हि काशते	988	
कलत्र धन	980	किरीटोज्ज्वलत्सर्व	३७	
कलरवन्पुर	200	कुञ्चिते कुन्तले	89	

## १५० श्लोकानुक्रमणिका ।

	पृष्ठम्		वृष्ठम्
कुतो वीची	१०२	ग-धवामर	८२
कुरक्ने तुरग	136	गायत्रीं गरुडध्वजा	121
कुरते गङ्गा	६६	गायते श्रुतिभि	906
कुच्छ्रै कोटिशते	908	गीदेंवति	७२
<b>क</b> ुपापारावार	994	गुरुचरणाम्बुज	६९
<del>क</del> ुपापारावारा	96	गुरोरष्टक य	982
कुण्ण गोविद हे	80	गेय गीतानाम	६८
कैलासाचल	७६	गोपाल प्रमुलाला	५७
कोटीराङ्गदरत	69	गोपीमण्डलगोष्ठी	५७
कोऽय देहे देव	५३	गोवि दाष्टकमेतत्	40
कोशानेता पञ्च	40	च	
कोशेषु पञ्चस्वधि •	983	चक्रस्थेऽचपले	4.5
	188	771773770	<b>८</b> ٩
को ह्येवा यादात्मनि	५३	च द्राकीनल	99
को ह्येवा यादात्मनि	4 ३	च द्राकीनल	99
को ह्येवा यादात्मनि क्रणद्रवमङ्गीर	43	च द्राकीनल चाञ्चल्यारुण	99
को ह्येवा यादात्मनि कणद्रत्तमङ्जीर क्षत्रत्राणकरी	4 <del>3</del> 8 99	च द्रार्कानल चाञ्चल्यारण चाम्पेयगौरार्ध	99 119 138
को होवा यादात्मनि कणद्रवमञ्जीर क्षत्रत्राणकरी क्षमामण्डले	4 ₹ 8 9 9	च द्रार्कानल चाञ्चल्यारण चाम्पेयगौरार्ध चारुस्थित सोम	99 919 838 25
को होवा यादात्मनि कणद्रवमञ्जीर क्षत्रत्राणकरी क्षमामण्डले क्षेत्रक्षत्व प्राप्य	4 ₹ 8 9 9	च द्रार्कानल चाञ्चल्यारण चाम्पेयगौरार्ध चारुस्थित सोम चिदशे विभु	99 919 838 25
को होवा यादात्मनि कणद्रतमञ्जीर श्वत्रत्राणकरी श्वमामण्डले श्वेत्रज्ञत्व प्राप्य	4	च द्रार्कानल चाञ्चल्यारण चाम्पेयगौरार्घ चारुस्थित सोम चिदशे विभु ज	99 999 238 25 96

	श्लोकानुक	मणिका ।	१५१
	पृष्ठम्		पृष्ठम्
जलच्युताच्युता ०	98	त्वदम्बुलीन	98
जलान्तकेलि	98	त्वमाचामोपे द्र	49
जाग्रहुष्ट्वा स्थूल	४९	त्वमेवासि दैव पर	ų
जीमूतश्यामभासा	२३	त्विय मिय चा॰	81
<b>ज्वलत्कान्तिव</b> ह्नि	358	द	
झ		दद्याद्दयानुपवनो	७२
झणत्कणत्कङ्कण	938	दशग्रीवमुग्र	4
त		दशाङ्ग धूप	६०
तटिद्वर्णे वस्त्र	६०	दक्षहस्तनिष्ठ	928
तटिद्वासस नील	३६	दामोदर गुणमदिर	996
तत्त्वार्थम तेवस०	८६	दिकाली वेदय ती	३२
तरङ्गसङ्ग	98	दि <b>घ्घ</b> स्तिभि	98
तरुणारुणमुखकमल	9	दिनयामि यौ	६५
तव हितमेक वचन	92	दि यधुनीमकर द	999
तावत्सव सत्य	५५	दीनमानवालि ०	924
<b>लिगुणात्माशेष</b>	908	दु खाम्भोधिगतो	१०५
त्रैविष्टपारि <b>पुवीर</b> घ्न	५६	दूरीञ्च तसीतार्ति	ર
न्यक्ष दीनसःकृपा०	१२६	<b>ह</b> श्याहश्य ०	७६
त्वत्तीरे मणिकर्णिके	908	दृष्टा गीतास्वक्षरतस्व	५९
त्वत्तीरे मरण	904	देवराजसे यमान	68
त्वत्प्रभुजीवप्रिय ०	99	देवी सर्वविचित्र	৩৩

### १५२ क्षोकानुक्रमणिका।

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
देवो भीतिं विधातु	२७	नादे नारद•	८२
दैक्तानि कति	60	नानायोगिमुनी द्र	60
द्वाद्वैकत्व यच	५२	नानारत्नविचित्र	७५
ঘ		नाभीनालीकमूलात्	26
घन्या सोमविभावनीय	920	नारायण करणामय	196
<b>धर्मसेतुपालक</b>	90	नारीस्तनभर	६२
धेनुकारिष्ट <b>हा</b> ०	80	नाइ प्राणो नैव	48
ध्यात याभाव	999	निजे मानसे मदिरे	ų
न		नित्य स्नेहातिरेकात्	31
न भोगे न योगे	989	नित्यान दकरी	७५
नम सचिदानन्द	Ę	निरञ्जनस्य किं	900
नमस्कारोऽष्टाङ्ग	89	निरावरणचैत य	909
नमस्ते नमस्ते	Ę	निर्मलस्य कुत	900
नमसो सुमित्रासुपुत्रा०	9	निर्लेपस्य कुतो	600
नमो भक्तियुक्तानुरक्ताय	Ę	नैवेद्यमात्मलि <b>ङ्गस्य</b>	908
नमो विश्वकर्त्रे	Ę	न्यङ्कपाणये	120
नमोऽख नालीक	७३	प	
नरातङ्कोटङ्क	83	पद्मानं दप्रदाता	३०
निलनीदलगत	83	पयोग्भोधेद्वीपात्	५९
नवजलदयुति	99	परब्रह्मापीड	994
नं वै प्रार्थ्य	994	परिश्रमन्ति ब्रह्मा॰	110

	स्रोकानुव	मणिका ।	848
	पृष्ठम्		पृष्ठम्
पवित्र चरित्र	9	प्रह्वादनारदपराशर	20
पश्यञ्शुद्धोऽप्यक्षर	89	प्राणानायम्योमिति	85
परयञ्शृष्वस्नत्र	86	प्राणायाम	६९
पातात्पातास्रपातात्	३२	प्राणी वाह वाक्	५३
पाताल यस्य नाल	२८	प्रात स्मरामि	992
पादाम्भोज मसेवा	२६	प्रातनेमामि	११२
पायाद्वक्त स्वात्मनि	५५	प्रातर्भजामि	117
पाहि मामुमामनोज्ञ	978	प्राप्त पद प्रथमत	99
पीठीभूतालकान्त	33	ब	
पीतेन द्योतते	२७	बद्धा गले यमभटा	98
पुण्यपापरज सङ्गो	906	बालस्तावत्	६३
पुनरपि जनन	६७	बाह्यतरे मधुजित	9
पुर पाञ्जलीनाञ्जनेया ॰	X	बृ दावनभुवि	46
पूर्णस्यावाइन	१०७	ब्रह्म-ब्रह्मण्याजिह्या	<b>३</b> 9
पूर्वोत्तरे पारलिका०	939	ब्रह्ममस्तकावली	१२३
पृथिया तिष्ठयो	83	ब्रह्माण्ड खण्डयन्ती	909
प्रचण्डप्रतापप्रभावा ०	9	ब्रह्मान दजलेनैव	909
प्रदीप्तरत्नोज्ज्वल	१३६	ब्रह्मान दाब्धि	906
प्रपञ्चसृष्ट्युन्मुख	१३५	ब्रह्मा विष्णू रुद्र	84
प्रमाण भवाब्धे॰	३६	ब्रह्मेन्द्ररद्रमरुदक	93
प्रसीद प्रसीद प्रचण्ड	20	ब्रह्मेशाच्युत	૮ર

### १५४ ऋोकानुक्रमाणका।

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
भ		मध्याह्र मणि०	908
भगवति तव	१०२	मनोनिवृत्ति	183
भगवति भवलीला	909	मदारमाला	934
भगवद्गाता	६७	मभाचदेवो	८५
भज गोवि द	६२	मलापहारि	९५
भवाम्भोजनेत्रा०	१३९	महागभीर	९२
भवोत्तापाम्भोधौ	800	महाम्भोधेसीरे	998
भानुकोटिभास्वर	19	महायोगपीठे तटे	<b>३</b> ६
<b>भुक्तिमुक्तिदायक</b>	90	महायोगपीठ परि॰	36
मुक्तिमुक्तिदि य	986	महारत्नपीठ	Y
मुजगप्रयात पठ •	२१	महे द्रादिर्देवो	ΥĘ
भुजगप्रयात पर	90	मा कुरु धनजन	६४
भुज स ये वेणु	998	मातर्जोह्नवि	903
<b>भूतसङ्खनायक</b>	99	माता च पार्वती	50
भूत्वा भूत्वा यदन्त०	38	मात्रातीत स्वात्म०	80
म		मालालीवालि <b>धाम्न</b>	₹ ₹
मङ्गलप्रदाय	४२५	मुक्ताहारलसत्कि ०	98
मजन्मातङ्ग	909	मुग्धा मुहुर्विद्धती	90
मत्स्य कूर्मी वराहो	38	मुदिताय मुग्ध०	66
मत्स्यादिभिरवतारै	996	मुरारिकाय कालिमा	94
मधुवनचारिणि	86	मूढ' जहाहि	६२

	स्रोकानुक्रमणिका ।		१५५	
	<b>पृष्ठम्</b>		वृष्टम	
मूर्तामूर्ते पूर्व०	48	यस्यातक्यं स्वात्म०	49	
मृत्स्नामत्सी <b>हे</b> ति	५६	यस्था दाम्ना	२७	
मोदात्पादादिकेश	३५	यस्यामिद कल्पित०	983	
य		यस्यैकाशादित्थ०	४५	
य ब्रह्मारय	४६	यावत्पवनो	६३	
य विज्ञानज्योतिष	44	यावद्वित्तोपार्जन०	६३	
यक्षराजब घवे	928	या वायावानुक्ल्यात्	२९	
यत सर्व जात	४२	या सूते सत्त्वजाल	२४	
यत्कटाक्षसमुपासना ०	७३	युक्त्यालोड्य व्यास	५२	
यत्र प्रत्युप्तरत	<b>₹ ₹</b>	येनाविष्टा यस्य	५०	
यदा घमग्लानि	<b>४</b> ४	येभ्यो वर्णश्चतुर्थ	२५	
यदा मत्समीप	فو	येम्योऽस्यद्भिरुषै	२४	
यदावणयत्कर्णमूळे	ą	योगरतो वा	६६	
यद्यद्वेद्य तत्तदह	89	योगान दकरी	७५	
यद्यद्वेद्य वस्तु	80	यो डाकिनीशाकिनि ०	932	
यशो मे गत	989	योऽय देहे चेष्टियता०	५२	
यस्ते प्रसन्ना०	66	यो विश्वप्राणभूत•	२३	
यस्माद यन्नास्त्यपि	४६	₹		
यस्मादाकामतो द्या	२५	रज सस्वतमो ०	908	
यस्माद्वाचो निवृत्ता	₹8	रत्नपादुकाप्रभा०	९०	
यस्या दृष्ट्वामलाया	२६	रथारूढो	990	

## १५६ ऋोकानुक्रमणिका।

	वृष्ठम्		पृष्ठम्
रथ्याकर्पट	६७	वयसि गते	EX
रागादिगुणश्चन्यस्य	990	वाग्भ्गौर्यादिभेदै	38
रागामुक्त	५५	वानरनिकराध्यक्ष	२
राजताचले द्र	928	विजातीयै पुष्पै	६१
राजन्मत्तमराल	198	विज्ञानाचो यस्य	५३
राक्षसक्षोभित	80	विदेशेषु मान्य	289
<b>रुक्षस्मा</b> रेक्षुचाप	३२	विद्युदुद्योतवस्य०	80
रेखा लेखादिव चा	२४	विद्राविताशेष	8
छ		विना यस्य ध्यान	83
लक्ष्माकारालकालि ०	<b>३</b> २	विभु वेणुनाद	३७
लक्ष्मीनृसिंहचरणाञ्ज	90	विविधब्रह्म	११०
लक्ष्मीपते कमलनाथ	25	विशालनीलोत्पल	934
<b>ल</b> क्ष्मीभर्तुर्भुजाप्रे	२२	विशुद्ध पर सिचदा•	ą
लपन्नच्युतानन्त	२१	विशुद्ध शिव	26
<b>छसच</b> िद्रकास्मेर	8	विश्वत्राणैकदीक्षा०	30
लस <b>्कु</b> ण्डलामृष्ट	१९	विश्ववन्द्योऽह०	110
लसत्तरङ्ग	९५	विश्वानन्दयितु	900
ललामा <b>ड्</b> कपाला	130	विश्वामरेद्र	9.
लावण्याधिक	920	विष्णवे जिष्णवे	39
व		विष्णो पादद्वयाग्रे	२५
वक्राम्भोजे लस त	£ 9	विष्णोविश्वश्वरस्य	२३

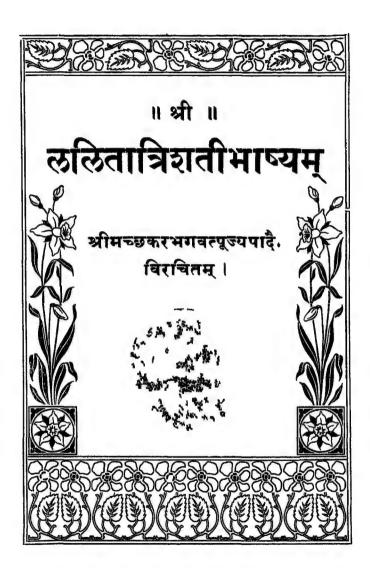
;	श्रोकानुक	मणिका।	१५७
	पृष्ठम्		वृष्ठम्
विष्ठपाधिपाय	120	शूळिने नमी नम	926
विद्वाररासखेद	9 8	शैले द्रादवतारिणी	902
वीणानादनिमीलिता०	८२	श्रद्धाभक्तिध्यान	49
वीता <b>खिलविषये</b> च्छ	9	श्रवण तस्य देवस्य	990
वेदवाचामवेद्यस्य	306	श्रिया शातकुम्भग्रुति	२०
वेदान्तैश्चाध्यात्मिक	40	श्रियाश्विष्टो विष्णु	XZ
ब्यालभ्बनीभि	66	श्रीताम्रपर्णी	932
व्योमकेश दिव्य	923	श्रीनाथादृत	920
श		श्रीमत्पयोनिधिनिकेतन	93
शत्री मित्रे	66	श्रीमत्यौ चारहत्ते	२६
शब्दब्रह्ममयी	13	श्रीमत्सु दरनायकीं	60
शम्बरवैरिशरातिग ०	१	श्रीमदात्मने	922
शरच द्रविम्बानन	थ इ	श्रीविद्या शिववाम ०	9
शरीर कलत्र	२०	भीविद्य शिववाम ०	61
शरीर सु <b>रूप</b>	280	श्रीरौलश्क्षे	930
शिलापि त्वदङ्घिक्षमा	•	श्रुत्यै नमोऽस्तु	७२
शिव नित्यमेक	3	श्लोकत्रयमिद	993
शिवपञ्चाक्षरमुद्रा	929	d	
शुक्तौ रजतप्रतिमा	99	षट्तारा गणदीपिका	१२०
शुभपुलिने	99	षडक्कादिवेदी	380
शूलटङ्कपाश	68	स	

### १५८ श्रोकानुक्रमणिका।

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
सपत्कराणि सकले॰	७३	सदा से य कुष्ण	<b>६</b> १
सभ्याम्भोधिमध्यात्	२	सदैव नान्दिन द०	90
ससारकूपमतिघोर	98	सनत्कुमार	93
ससारघोरगहने	94	स पुण्य स गण्य	9
ससारजालपतितस्य	98	सबि दुसि धु	92
ससारदावदहना०	93	समस्तवासनात्याग	108
ससारमीकरकरी द्र	98	समाधिरात्मनो	999
संसारवृक्षमखबीज	94	समानोदितानेक	25
ससारसर्पविषदिग्ध	28	सम्यक्साह्य	२६
ससारसागरनिमजन	94	सरसिजनिलये	७३
संसारसागरविशास	94	सव दृष्ट्वा स्वात्मनि	86
सस्तीर्ण कौस्तुभाशु	29	सर्वजीवरक्षणैक	924
संचूण ताम्बूल	६	सवज्ञो यो यश्च	184
सत्तामात्र केवल	68	सर्वत्रास्ते सर्वशरीरी	86
सत्य ज्ञान शुद्ध	89	सर्वेत्रैक पश्यति	86
सत्य ज्ञानमन त	५६	सर्वदुर्वासमाजाल	222
सत्यपि मेदापगमे	999	सर्वमङ्गलाकुचा०	१२५
सत्सङ्गत्वे	६४	सान दमान दवने	१३१
सदा तृतान	६०	सिंहाद्रिपार्श्वेऽपि	१३२
सदा राम पिवत	0 6	सुखत ऋियते	89
सदा राम पिबन्न	6	सुनासापुट सुद्दर॰	99

	श्लोकानुक	१५९	
	पृष्ठम्		वृष्ठम्
सुप्ताकारा प्रसुप्ते	३ ३	स्नानव्याकुलयोषित्	५७
सुर <b>ताङ्गदै</b> रवित	95	स्फरत्कौरतुभालकृत	३७
<b>सुरम</b> िद्दत्तरु	६६	सक्च दनवनितादीन्	92
सुवक्षोजकुम्भा	१३७	स्वदक्षजानु०	८५
सुशा ता सुदेहा	936	स्वभक्ताग्रगण्यै	U
सुसीम तवेणीं	936	स्वभक्तेषु सदर्शिताकार	२
सुष्ट्वा सर्व स्वात्म०	ų	ह	
सेवकाय मे	926	इर त्व ससार	998
सौराष्ट्रदेशे	130	हरे राम सीतापते	9
स्तव पाण्डुरङ्गस्य	36	हारस्योरुप्रभाभि	30
स्तुवति य	७४	हित्वा हित्वा	४७
स्तोकभक्तितोऽपि	920	हिमाद्रिप्रार्श्वेऽपि	132
स्तोष्ये भक्त्या	४५	हृदम्भोज कृष्ण	49





# ॥ लिलतात्रिशतीभाष्यम्॥



वन्दे विशेश्वर दव सर्वसिद्धिप्रदायिनम् । वामाङ्कारूडवामाक्षीकरपञ्जवपूजितम् ॥ १ ॥

पाशाङ्करोश्चसुमराजितपञ्चशासा पाटल्यशालिसुषुमाञ्चितगासवल्लीम् । प्राचीनवाक्स्तुतपदा परदवता त्वा पञ्चायुधार्चितपदा प्रणमामि देवीम् ॥ २ ॥

छोपासुद्रापतिं नत्वा हयग्रीवमपीश्वरम् । श्रीविद्याराजससिद्धिकारिपकजवीक्षणम् ॥ ३ ॥

विस्तारिता बहुविधा बहुिम कृता च टीकां विकोकयितुमक्षमता जनानाम् । तत्तस्यसवपदयोगविवकमानु तुष्ट्यं करामि छक्ति।पद्भक्तियोगात् ॥ ४ ॥ ९ ॥ भारा 11 अगस्य उवाच-

हयग्रीव द्यासिन्धो भगवन् शिष्यवत्सल । त्वत्त. श्रुतमशेषेण श्रोतव्य यद्यदस्ति तत्॥ रहस्यनामसाहस्रमपि त्वत्तः श्रुत मया। इतः पर मे नास्त्येव श्रोतव्यामिति निश्चयः ॥ तथापि मम चित्तस्य पर्यासिनैव जायते। कात्स्न्यीर्थ प्राप्य इत्येव शोचयिष्याम्यह प्रभो॥

किमिद् कारण ब्रुहि ज्ञातच्याज्ञोऽस्ति वा पुन । अस्ति चेन्मम तहूहि ब्रूहीत्युक्तवा प्रणम्य तम्॥

स्रुत उवाच-

समाललम्बे तत्पाद्युगल कलद्योद्भव'। ह्याननो भीतभीत किमिद् किमिद् त्विति ॥

मुश्र मुश्रेति त चोक्तवा चिन्तान्नान्तो बभूव सः। चिर विचार्य निश्चिन्वन्वक्तव्य न मयेत्यसौ ॥ तृष्णीं स्थित स्मरन्नाज्ञां ललिताम्बाकृता पुरा। प्रणम्य विष्र स मुनिस्तत्पादावत्यजन्स्थत ॥७॥ वर्षत्रयावधि तथा गुरुशिष्यौ तथा स्थितौ । तच्छुण्वन्तश्च पदयन्त सर्वे लोका सुविस्मिताः॥ तत. श्रीललितादेवी कामेश्वरसमन्विता। प्रादुर्भूय हयग्रीव रहस्येवमचोद्यत्॥९॥

श्रीदेव्युवाच—
अश्वाननावयोः प्रीति शास्त्रविश्वासिनि त्विय।
राज्य देय शिरो देय न देया षोडशाक्षरी॥१०॥
स्वमातृजारवद्गोप्या विद्येषेत्यागमा जगुः।
ततोऽतिगोपनीया मे सर्वपूर्तिकरी स्तुति ॥
मया कामेश्वरेणापि कृता सगोपिता भृशम्।
मदाज्ञया वचो देव्यश्चक्रनीममहस्त्रकम्॥१२॥
आवाभ्या कथिता मुख्या सर्वपूर्तिकरी स्तुतिः।
सर्विक्रियाणा वैकल्यपूर्तिर्यज्ञपतो भवेत्॥१३॥
सर्वपूर्तिकर तस्मादिद नाम कृत मया।

तहूहि त्वमगस्त्याय पात्रमेव न सद्याय ॥ १४॥ पत्न्यस्य लोपामुद्राख्या मामुपास्तेऽतिभक्तितः। अय च नितरा भक्तस्तसाद्ख वदस्व तत्॥ अमुश्रमानस्त्वत्पादौ वर्षत्रयमसौ स्थित । एतज्ज्ञातुमतो भक्त्या हीदमेव निद्द्यीनम् ॥

चित्तपर्याप्तिरेतस्य नान्यथा सभविष्यति । सर्वपूर्तिकर तस्मादनुज्ञातो मया वद ॥ १७॥ स्त उवाच—

इत्युक्त्वान्तरधादम्बा कामेश्वरसमन्विता । अथोत्याप्य हयग्रीव पाणिभ्या कुम्भसभवम् ॥

सस्थाप्य निकटे वाचमुवाच भृशविस्मित । हयग्रीव उवाच—

कृतार्थोऽसि कृतार्थोऽसि कृतार्थोऽसि घटोद्भव॥ त्वत्समो ललिताभक्तो नास्ति नास्ति जगञ्जये।

येनागस्य स्वय देवी तव वक्तव्यमन्वज्ञात्॥

साच्छिष्येण त्वया चाह द्रष्टवानस्मि ता शिवाम्। यतन्ते द्र्शनार्थाय ब्रह्मविष्णवीशपूर्वकाः ॥

अत पर ते वक्ष्यामि सर्वपूर्तिकर स्तवम्। यस्य स्मरणमात्रेण पर्याप्तिस्ते भवेडृदि॥२२॥

रहस्यनामसाहस्राद्पि गुद्धतम मुने । आवश्यक ननोऽप्येतस्राहिता समुपासितुम् ॥

तदह सप्रवक्ष्यामि ललिताम्बानुशासनात्। श्रीमत्पञ्चद्शाक्षयी कादिवणीन्क्रमान्मुने॥

पृथिग्विशितिनामानि कथितानि घटोद्भव । आहत्य नाम्ना त्रिशती सर्वसपूर्तिकारिणी ॥

रहस्यातिरहस्यैषा गोपनीया प्रयक्षत । ता शृणुष्य महाभाग सावधानेन चेतसा ॥

केवल नामबुद्धिस्ते न कार्या तेषु कुम्भज। मन्त्रात्मकत्वमेतेषा नाम्ना नामात्मतापि च॥ तस्मादेकाग्रमनसा श्रोतब्य च त्वया सदा। स्रत उवाच-

इत्युक्त्वा त हयग्रीव प्रोचे नामशतत्रयम् ॥

बहुकाल सुभक्तिमहिम्ना गुरुपादाम्बुजमवलम्ब्य स्थिताय कुम्भयोनिमुनये शिवदपतिकृतनामशतत्रयोक्त्या प्रेरितो हय प्रीव डवाच—

#### ककाररूपा कल्याणी कल्याणगुणशालिनी। कल्याणशैलानिलया कमनीया कलावती॥

ककाररूपेति। ककार कवर्ण रूप ज्ञापकविशेषण यस्या सा, कादिविद्याविम्रह्त्यर्थ। अथवा ककार रूप वाचक येषा त ककाररूपा हिरण्यगर्भे उदकम् उत्तमाङ्ग सुखादयश्च। हिरण्यगर्भेनिष्ठजगद्धारकजगत्कर्तृत्वादिगुण वत्त्व ककारस्य व्यञ्जनादिमवर्णत्वेन वतत इति तद्वाच्य तया तथा। उदकनिष्ठान्नादिद्वारा जगत्सजीवनहेतुत्वमपि ककारस्य विद्याप्रिमवर्णतयास्तीति तद्वूपा वा। सर्वेषा प्राणिना शिरस्यमृतमस्तीति योगमार्गेण कुण्डलिनीगमने तत्रत्यतत्त्रवाहाप्रुतयोगिनामीश्वरसाम्य जायत इति योगशा स्रोषु प्रसिद्धम्। तद्वत् कवर्ण मन्त्रादिमभागस्थ तत्यु- रश्चर्यापरायणाना शिवभावमेव यच्छतीति वा तद्र्पत्यर्थ, 'क ब्रह्म ख ब्रह्म ' इति श्रुते । दहराकाशस्य सुखस्त्ररूप त्वेन परमप्रेमास्पद्तया अभिलाषविषयत्ववत् ककारोऽप्य तिप्रीतिविषयमूलमन्त्वादिमाक्षरतया अभ्यहितत्वाद्वा तद्र्षे सर्थ ॥ अ ककार्रुष्यो नम् ॥

कल्याणी । कल्याणानि सुखानि । युवसार्वभौमानन्दा-दारभ्य ब्रह्मानन्दपर्यन्त तैत्तिरीयकादौ प्रतिपादितानि । तत्तदुपाधिभेदेष्वविष्ठस्वक्षपतया तानि कल्याणशब्दवा च्यानि, 'एतस्यैवानन्दस्य अन्यानि भूतानि मान्नामुपजी वन्ति 'इति श्रुते । समष्टिच्यष्टिवस्वमुपहितस्वरूपेण सम वतीति मतुप्समामोपपत्ति । तथा च राहो शिर इतिवत् समासान्तर्गतषष्ट्रवर्थभेदस्याविवश्चिततया आनन्दैकविष्मह्व तीत्यर्थ , 'विज्ञानमानन्द ब्रह्म ' इति श्रुत्युक्तब्रह्मस्वरूपल श्रुणवतीत्यर्थ ॥ ॐ कल्याण्ये नम् ॥

कल्याणगुणशालिनी। कल्याणा सुखकर्तार ये गुणा सत्यकामसत्यसकल्पसर्वाधिपत्यसर्वेशानत्ववामनीत्वसयद्वाम-त्वाद्य, ते अस्या शालयन्त इति, तथा एना शोभयन्ती ति वा, ते शाल्यत इति वा कल्याणगुणशालिनी। तथा च कल्याणाश्च ते गुणाश्च कल्याणगुणा शालयन्त्येनामिति कल्याणगुणशास्त्रिनी, अस्मिन समासे देवताया पराधीन
गुणवत्त्व स्वत शुद्धचैतन्यत्व च स्फुरितम्। कल्याणगुणै
शाल्यत इत्यत्र गुणवत्त्वमात्र देवताया चोत्यते। तस्त्रौपा
धिकत्व वैदिकमपि स्तुतौ तद्शकटन न दोषाय। यदि
गुणानामारोपितत्वेन तत्सकीर्तनस्य भेद्बुद्धिसमये तत्कृपा
शाप्तिहेतुत्वेनावश्यकत्वम्, तथापि तद्यवादपुर सग् शुद्ध
चैतन्याभेद्ध्यानरूपमुख्यभजन मुख्यमवति सपाद्यितु स्वगुरूपदिष्टमार्गेण सुकरमेवेति नातिविस्तार्थते।। ॐ कल्या
णगुणशास्त्रिन्ये नम् ॥

कस्याणशैलिनलया। शिलाना विकार शैल शिलाघन इत्यर्थ, कस्याण सुखमेव शैल घनीमूत इत्यर्थ, तिमान् कस्याणशैले स्वस्वरूप आनन्दघने निलयित तिष्ठतीति कस्याणशैलिनलया, 'स भगव कस्मिन प्रतिष्ठित इति स्वे महिम्नीति होवाच' इति श्रुते, देवदत्त म्वस्मिन्नेव स्वय वर्तते इति लौकिकप्रयागाच, देवताया स्वस्वरूपे स्वावस्थान युज्यत इति। कस्याणमेव शैलवत् घनीमूत कस्याणशैल आनन्दमयकोश कस्याणशैलो निलय यस्या सा इति बहु व्रीहिसमास न विरुद्ध, 'ब्रह्म पुच्छ प्रतिष्ठा' इति उक्त श्रुतिप्रामाण्यात्। अथवा कस्याणशैल महामेरु निलय गृह यस्या सातथा, सुमेरुमध्यश्रद्भस्थेत्यर्थ ॥ ॐ कल्या णशैलनिलयायै नम ॥

कमनीया । परमान-दस्वरूपत्वन परमप्रेमास्पदा, 'को ह्येवान्यात्क प्राण्यात् । यदष आकाश आनन्दो न स्यात् 'इति श्रुते । सुखस्य मनोहरत्वेन सर्वेप्साविषयत्ववत् मायावृता-ना सुखप्रापकत्वेन स्वस्वेष्टदेवतासु प्रीत्यतिशयेन तत्पूजादौ प्रवर्तता तत्फलदानेन मनोहरत्वाद्वा कमनीया । ज्ञानिनामा नन्द्यनीभावात्मकसुन्दरमूनिमत्तया वा कमनीया ॥ ॐ कमनीयायै नम ॥

कलावती । कला शिर पाण्याद्यवयवा , चतु षाष्ट्रकला विद्यारूपा वा, चन्द्रकला वा, भक्तध्यानाय अम्या सन्ती- ति कलावती ॥ ॐ कलावत्ये नम ॥

## कमलाक्षी कल्मषप्ती करुणामृतसागरा। कदम्बकाननावामा कदम्बक्कसुमप्रिया।।

कमलाक्षी। कमले इव अक्षिणी यस्या सा तथा। कमलाया लक्ष्म्या अक्षिशब्देन तिम्निमत्तक ज्ञान लक्ष्यते विषयतासब धेन तद्वतीति वा। कमलाया ऐहिकासुध्मि कश्रिय हेतुभूते अक्षिणी यस्या सा— इति स्वकीयेक्षणमा तेण महदैश्वयप्रापिकेति भाव ।। ॐ कमलाक्ष्ये नम ।।

कल्मवन्नी। कल्मवाणि पापानि हन्ति नाशयतीति क-लमवन्नी, 'अह त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्य।मि इति भग बद्धचनात्। अथवा वेदान्तमहावाक्यजन्यसाक्षात्काररूप-बद्धविद्या 'ज्ञानामि सर्वकर्माणि मस्मसात्कुरुते तथा' इति स्मृते, 'न स पाप स्रोकर् शृणोति' इति श्रुतेश्च॥ ॐ कल्मवघन्ये नमः॥

करुणामृतसागरा। करुणया कुपया जात यदमृत मोक्षरूप तस्य सागर इव सागरा। यथा अमृतसमुद्र स्वयममृतस्वरूप सन् अन्यानिप लोकान् अमृतपायिमेघाद्विमुक्तामृतेन सजी-वयति, तथा 'ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति ' 'ब्रह्मविदाप्नोति परम् ' इत्यादिश्रुत्या स्वयममृतस्वरूपा सती। 'लभते च तत कामान्मयैव विहितान्हितान् 'इति भगवद्वचनेन तत्तद्धि कारिकृतकर्मोपासनादिफलस्य देवताप्रापणीयस्य सप्राप्तौ त-त्तद्धिकारिणा तत्तत्फल स्थितमिति सभाव्यत इति सागरो पमा। अमृतवत्सर्वभजीवनी करुणामृतस्य अभिन्नाश्रयत्वात् सागरा, करुणा च भक्तविषयकपरिपाल्यताबुद्धि। यद्दा, करुणया कृपया अमृता शाश्वतकीर्तिमन्त्वेन ब्रह्मादिलोक गता सागरा सगरराजवर्द्या यस्या सा तथा, यद्दा, करुणया दयया हेतुना अमृताय प्राप्त सागर समुद्रो यया सा भागीरथी, करुणामृतसागरा ॥ ॐ करुणामृतसाग-राये नम ॥

कदम्बकाननावासा । कदम्बनामककल्पवृक्षयुक्त यत्का-नन वन तत्रावासो गृह यस्या सा तथा ॥ ॐ कदम्बकान-नावासायै नम• ॥

कदम्बकुसुमित्रया। कदम्बाना कुसुमानि कदम्बकुसुमानि तेषु प्रिया प्रीतिमतीति यावत्। यद्यपि प्रियशब्द प्रीतिनि-षयवाचक , तथापि कुसुमजन्यप्रीतरभावेन तद्विषयताया वक्तमशक्यत्वात् तथोक्तम्॥ ॐ कदम्बकुसुमित्रयायै नम्॥

# कर्पविद्या कर्पजनकापाद्गवीक्षणा। कर्पूरवीटीसौरभ्यकल्लोलितककुप्तटा॥३॥

कद्रपिवद्या । कद्रपेस्य विद्या तिश्चष्ठप्रत्यम्बद्धीक्यज्ञान-मित्यर्थ । अथवा विद्याप्रापकत्वात्तदृष्टमूलमन्त्रवर्णममुनायो विद्येत्युच्यत वेदवाक्येषु उपनिषत्पदवत् । तद्वाच्यार्थत्वात् तथा देवी सूच्यते ॥ ॐ कद्रपेविद्याये नम् ॥

कदर्पजनकापाङ्गवीक्षणा । अपाङ्गाभ्या वीक्षणमपाङ्गवी क्षणम्, ईषद्दर्शनमिति यावत् । कदर्पस्य जनक अपाङ्ग

वीक्षण यस्या सा। अनेन नाम्ना येषा जडानामपि कुरू-पिणा जनाना उपरि सक्चदीषद्वीक्षणमिकायते, ते कद्र्प-वद्रूपयौवनसामर्थ्यलक्ष्मीभाजो भवन्तीति ध्वनितम् । यद्वा कद्रपेस्य जनक श्रीनारायण स यम्या अपाङ्गवीक्षणे ईषद्भृविक्षिचलन वर्तते, यस्या आज्ञामात्रवश्यतया महा विष्णु जगद्रक्षादिकार्यं करोतीति सा तथा इति । अथवा, कदर्पजनका महालक्ष्मी यस्त्रा अपाङ्गवीक्षणे प्रयेतया व र्तते सा तथा। कदपस्य मन्मथस्य जनका उत्पादका स्रक्चन्दनादिभाग्यविषया ते यस्या अपाङ्गवीक्षणात् भ-वन्ति सा तथा । अथवा, चन्द्रस्य वामनेत्रतया अपाक् वीक्षण चन्द्रिकोच्यते । कद्पजनक अपाङ्गवीक्षण यस्या सा तथा । कदर्पजनकाशब्देन छक्ष्मीनिवासकमछ छ क्ष्यते, तद्वत् अपाङ्क कमलाक्षीत्यथ तत्रिक्पितवीक्षण लोकसजीवन यम्या सा तथा ॥ ॐ कद्र्पेजनकापाङ्ग वीक्षणायै नम ॥

कर्पूरवीटीसौरभ्यकङ्कोलितककुप्तटा। कर्पूरयुक्ताश्च ता वीटयश्च ताम्बूलकबलानि तासा मौरभ्य सौगन्ध्य तै कल्लोलितानि असकुत्परिमालितानि ककुमा दिशा तटानि प्रदेशा यस्या मा। मुखवासितपरिमलेन जगन्मात्र सुर- भीकृतमिति खरूपातिशयोक्ति अस्मित्राम्नि व्यव्यत , महा राजभोगवतीत्यर्थ । ॐ कर्पूरवीटीसौरभ्यकङ्घोलितककुप्त टायै नम ॥

### किल्रोषहरा कजलोचना कम्रविग्रहा। कर्मादिसाक्षिणी कारियत्री कर्मफलपदा॥४॥

किल्होषहरा। कले निन्धा जायमानाना पुरुषाणा जन्ममात्रण ये दोषा पापानि आयाति, तान दृष्टा श्रुता कीर्तिता सस्तुता पूजिता ध्याता सती हरतीति तथा। कले अन्योन्यवादिना कल्लहात्तत्तन्मताभिनिवेशवशाज्जायमाना ये दोषा परत्रद्वाविषये अस्तित्वनास्तित्वदेहादिव्यतिरिक्तत्वभि अत्वाभित्रत्वगुणित्वादिसाधकयुक्त्याभासतद्वुगुणसमत्याभा सश्रुतितात्पर्यविघटनान्यथाकरणदुराग्रहजन्यकामकोधपरुष परवशिक्यमाणनिन्दासहनादिरूपा बहुविधा दोषा, तान-द्वेतत्रद्वानसाधनमुक्तिरूपेण हरतीति कलिदोषहरा।। ॐ कलिदोषहराये नम ।।

कजलोचना । केभ्य जायन्त इति कजानि, कजशब्द न अरविन्द्नीलोत्पलानि लक्ष्यन्ते तद्वल्लाचने यस्या सा तथा। अथवा कज ब्रह्माण्डम् । 'अय पूर्वमप सृष्ट्वा तासु वीर्यम पास्रजत् तदण्डमभवद्धैमम 'इति वचनात् कजानि अनेक कोटिब्रह्माण्डानि लोचनयो लोचनकृतवीक्षणात् यस्या सा तथा, 'सेय देवतैक्षत' इति श्रुते ॥ ॐ कजलोच नायै नम् ॥

कम्नविष्रहा । कम्न अतिमनोज्ञ , गाम्भीर्यधैर्यमाधुर्यादि-बहुगुणोदितत्वात् , विष्रह मूर्ति यस्या मा तथा, 'आ नन्दरूपममृत यहिभाति' इति श्रुते । आनन्दस्वरूपत्वाद्वा कम्नविष्रहा , छछितारूपेत्यर्थ ।। ॐ कम्नविष्रहायै नम ॥

कर्मादिसाक्षिणी । कर्म आदियें षा तानि कर्मादीनि उपासनायोगश्रवणमनननिदिध्यासनानि । तेषा साक्षिणी अ-सबन्धी द्रष्ट्री, 'साक्षी चेता' इति श्रुते । अथवा कर्मा दय साक्षिभूता जीवनिष्ठा तदनाश्रयतया आत्मद्द्रीन साधनानि सृज्यमानजगदुपादानभूतानि यस्या सा तथा ॥ अ कर्मादिसाक्षिण्ये नमः॥

कारियत्री कारियतृत्व नाम कुर्वित्याज्ञापियतृत्व जाय मानकार्यगोचरकृत्युत्पित्तहेतुकर्मोद्वोधकत्वरूपिलङ्कोट्तव्य प्रत्ययाना धर्म विधिनिष्ठभावनेत्युच्यते । तेषा शब्दा त्मकतया जडाना तथात्वासभवात्तद्धिष्ठानचैतन्यरूपतया 'सर्वे वेदा यत्रैक भवन्ति' इति श्रुत्या वेदस्यात्माभेदेन ख प्रकाशकतया अर्थप्रकाशनद्वारा प्रामाण्यविधीनामपि वेदैक देशतया प्रेरणरूपत्वात् तद्दधिष्ठानचैतन्यात्मनाकारयतीति तथा, 'एष होव साधु कर्म कारयति' इति श्रुते ॥ ॐ कारयित्रये नम ॥

कर्मफलप्रदा । कृताना कर्मणा कालान्तरभाविफलप्र-दाने अदृष्ट कारणमिल्यनीश्वरमीमासकादिमतम्, तन्न । जडाना सूक्ष्माणामदृष्टाना चतनधर्मकर्मफलप्रदानसामध्यो योगात् कृताना कर्मणा फलावदयभावे 'कर्माध्यक्ष ' इति श्रुते, 'मयैव विद्वितान्हितान्' इति स्मृतेश्च, 'फल्पमत उप पत्ते ' इति न्यायाच परदेवता कर्मफलप्रदा ॥ ॐ कर्म फलप्रदाये नम ॥

एकाररूपा चैकाक्षर्यकानेकाक्षराकृतिः। एतत्तदित्यनिर्देश्या चैकानन्द्चिदाकृतिः।

ण्काररूपा । एकार रूप मन्त्रद्वितीयावयवसज्ञापक यस्या सातथा ॥ अ**ॅ एकाररूपायै नम** ॥

एकाक्षरी । एक मुख्यम् ईश्वरोपाधित्वेन । न क्षरित आत्मज्ञानेन विनामुक्ते न नश्यतीति अक्षर कृटस्थशब्दवाच्य

माया । तत्प्रतिबिम्बनिष्ठसर्वज्ञत्वाद्याधायकविशेषणत्वेन अ स्या अस्तीति एकाक्षरी । एकम् अक्षर सवप्रकृतित्वात्परा-परब्रह्मप्रतीकतया तदुपासनया तदुभयप्राप्तिसाधनत्वेन शब्द ब्रह्मरूपलक्षितलक्षकशब्द प्रणव अस्या अस्तीति वा। एक अखण्डैकचैतन्यरूप अक्षर अनश्वर अविनाशी परमश्वर अर्धशरीरत्वन अस्यामस्तीति वा। एकान्यक्ष राणि मायाबीजादीनि तदुपासनाप्रतीकत्वेन अस्या सन्ती ति वा। 'अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते' इति श्रुत अखण्डाकारवृत्तिप्रतिफल्लनयोग्यचैतन्यरूपतया तद्वृत्तिव्याप्ति मात्रेण अक्षरपदलक्ष्यचैतन्य विषयतासबन्धेन अस्या अस्तीति एकाक्षरी। चकार निर्गुणबद्धाणोऽपि सगुणबद्धाविशेषणसद्धा वसमुचयपर सर्वतापि द्रष्टव्य । 'सचिन्मय शिव सा क्षात्तस्यानन्दमयी शिवा 'इति वचनेन, 'स्नीरूपा चिन्त येदेवीं पुरूपामथवेश्वरीं । अथवा निष्कळ ध्यायत्सचिदान न्दविमहाम् 'इति स्मृत्या च, 'त्व स्त्री त्व पुमान् 'इति श्वेताश्वतरोपनिषदि उपाधिकृतनानारूपसभवोक्तेश्च । अत एव 'सेय देवतैक्षत ' इत्यादौ 'तत्सत्य स आत्मा ' इत्यन्ते च श्रुतौ स्त्रीलिङ्गान्तदेवतादिपदाना तत्सत्यमिति नपुसका-न्तस्य स आत्मेति पुँछिङ्गात्मशब्दस्य एकार्थत्वम् अविवक्षि

तापाधिमत्तया तत्त्वपद्रुक्ष्यार्थस्यैकत्वात् । तसात् तत्त्व पद्रुक्ष्यार्थे सर्वेऽपि गुणा वर्णितु सभवन्तीति हय भीवेण अस्या त्रिश्चत्या बहव चकारा उपात्ता । तेन वय सर्वेषा सर्वत्र न पार्थक्यन प्रयोजनान्तर पद्माम ॥ ॐ एकाक्षयें नमः॥

एकानेकाश्चराकृति । एकम् ईश्वरप्रतिबिम्बोपाधितया शु द्धसत्त्वप्रधानम् अक्षरमङ्गानम् । अनेकानि मिल्लनसत्त्वप्रधान तया जीवोपाधिभूतान्यश्चराणि अङ्गानानि, 'माया चाविद्या च स्वयमेव भवति' इति श्रुते । एक चानेकानि च एकानकानि तानि च अक्षराणि च तानि तथा 'माया तु प्रकृतिम् ' इति श्रुते । तेष्वाकृतय प्रतिबिम्बान्यवान्छिन्नानि वा चैतन्यानि घटस्थोदकावन्छिन्नप्रतिबिम्बिताकाश्चवद्या सा तथा । अथवा एकानि च प्रणवाद्यानि अनेकानि च अकारादि श्वकारान्तानि अक्षराणि वर्णा आकृति स्वरूप यस्या सा, मातृकास्वरूपत्वेन वा। 'अकारादिश्वकारान्ता मा त्रकेत्यभिधीयते ' इति वचनात् । अथवा एच कश्च एकार-ककारौ तौ चेतराण्यनेकाक्षराणि च सर्व मिल्लित्वा पश्चद शवर्णात्मका मृ्लिवद्या आकृति स्वरूप यस्या सा। साक्षि तया एकीभूता अनेकाक्षरेषु अनेकाङ्गानेषु आकृति स्वरूप शोधिततस्वपदार्थसामरस्यात्मक यन्या सा तथा ॥ ॐ एकानेकाक्षराकृतये नम ॥

एतत्तिदित्यनिर्देश्या । एतत् एतत्कालेऽपि इयत्तापरिच्छे-दवद्वस्तु तत् परोक्षमनिश्चितस्वरूपम् । एतच तच एतत्तत् । इतिकार इत्थभावेतृतीयार्थे। तथा च एतस्वतस्वाभ्यामि त्यर्थ । एतत्तदित्यनेन निर्देष्ट्र निर्वक्तु योग्या निर्देश्या सा न भवतीति अनिर्देश्या । लोके सविशेषो हि पदार्थ परोक्षत्वापरोक्षत्वादिधर्मविशेषेण तद्गतेन निर्वक्तु शक्य । शब्दप्रवृत्तिनिमित्तजातिगुणिकयाषष्ट्रचर्थाना यत्र सबन्धो नास्ति, 'अज्ञाब्दमस्पर्शमरूपमन्ययम्', 'तिर्शुण निष्क छम् ' इत्यादिश्रुत्या, तादृग्वस्तु केन करणेन केन वा वचनेन निर्देष्ट्र शक्यम् । 'यद्वाचानभ्युदितम्' इति श्रुते । अत एतत्तिद्वित्यनिर्देश्या वाकानसातीतेत्यर्थ । अथवा, एतत् प्रत्यक्षादिप्रमाणसिद्ध कार्य पश्चाद्भावि । तत् परोक्षत्वादि-विशिष्ट पूर्वकालसमनिध व्यवहित कारणमुच्यते । इति-शब्द उभयत्र सबन्धनीय । कार्यमिति कारणमित्यपि शुद्धचैतन्यरूपा अनिर्देश्या, कार्यत्वकारणत्वघटकोपाधिवि-रहितत्वेन कार्यकारणभावाभावे तद्वाचकशब्दैविषयीकर्तुमश-क्यत्वात्। अथवा, एतत् अपरोक्षतया अहमिति प्रती

यमान जीवचैतन्य त्वपद्वाच्यार्थ । तत् परोक्षतया प्रती यमानमीश्वरचैतन्य तत्पद्वाच्यार्थ । इति शब्द एव कारार्थ । तथा च वादिभेद्सिद्धान्त अनुद्ति । सा ख्यमते प्रकृतिर्जगत्कत्रीं, जीवो नानाचतन भोक्ता इत्यत ईश्वर एव नास्तीत्यङ्गीकृतम् । भागवतमते तु 'गुणी सववित्' इति श्रुत नित्यगुणविशिष्टात् परमेश्वराद्विष्णो र्जीवानामुत्पित्तविनाशवत्त्वेन अनित्यत्वात् स एव भगवान् पारमार्थिक एक इत्यङ्गीकृतम् । तदुभयवादिसिद्धान्त स्य औपनिषद्मते निरस्तत्वात् तदुभयविधया अनिर्दे इया । परमार्थसचिदानन्दरूपतया छान्दाग्यगतदेवता शब्दार्थस्य प्रतिपादनादिति भाव । अथवा, तटस्थे श्वरवादिकाणादादिसिद्धान्तवत् व्यवस्थितभववज्जीवेश्वरह पतया अनिर्देइया । भेदव्यवस्थाया एव साधितुमञ्च-क्यत्वादिति एतत्तदित्यनिर्देश्या ॥ ॐ एतत्तदित्यनिर्दे-इयाये नम् ॥

एकानन्द्चिदाकृति । एका मुख्या मोक्षरूपत्वेन प्रापि त्सिता । आनन्द सुखम् । चिन् चैतन्य प्रकाशज्ञानम् । आनन्दश्चासौ चिश्व आनन्द्चित् एका चासावानन्द्चिश्व एकानन्द्चित् आकृति स्वरूप यस्या सा । सचिदानन्द ब्रह्मरूपलक्षणवतीत्यर्थ । 'विज्ञानमानन्द ब्रह्म ' आनन्दो ब्रह्मित व्यजानात हित श्रुते 'आनन्दादय प्रधानस्य दित न्यायाच दीप्तिस्वरूपप्रकाशात्मकपरमानन्दस्वरूपस्य जीव न्युक्त्यवस्थाया परमात्मज्ञानवन् पुरुषानुभवरूपप्रत्यक्षप्रमा णगोचरत्वमस्या इति वा तथा । अथवा, एकेषा आनुभा विकाना योगिनामानन्दसाक्षात्काररूपा आकृति निरावर णप्रकाशरूपा यस्या सा तथा । अथवा, आनन्द शिवा, चित् परमेश्वर, एके मूर्तिभेदरहिते आनन्दिचतौ आकृति र्यस्या सा तथा ॥ उठ एकानन्दिचिदाकृतये नम् ॥

# एवमित्यागमाबोभ्या चैकभक्तिमदर्चिता। एकाग्रचित्तनिध्योता चैषणारहिताहता॥

एविमित्यागमाबोध्या । ननु आनन्दशब्दस्य छक्षणया आनन्दमयो वाच्य । 'य एको जालवानीशत इशनीभि ' इति श्रुत्युक्तैकत्वमपि जीवे सिध्यति । तथा च एकश्चासा वानन्दश्च तस्य चिन् अधिष्ठानप्रकाशकचैतन्यमाकृति यम्या सेति विष्रह सभवति । 'ब्रह्म पुच्छ प्रतिष्ठा' इति तत्प्रका शकचैतन्यस्य पुच्छशब्देन परामशीत् । एव च सति प्रका शकनित्यत्वस्य प्रकाश्यनित्यत्वापेक्षत्वात् । 'सत्य ज्ञानम- नन्त ब्रह्म ' इत्यादिब्रह्मस्वरूपलक्षणवाक्येषु वाच्यार्थप्राधा न्येन विधिमुखेनैव ब्रह्मप्रतिपाद्ने अतत्वावृत्तिरूपनिषेधमु खेन लक्षणार्थप्राधान्येन ब्रह्मखरूपलक्षणप्रतिपादनायोगेन तत्त्वमसिवाक्ये वैशिष्ट्य वाक्यार्थ सभवतीति चेत्, नेत्या-इ-एविमत्यागमाबोध्येति । एविविश्वष्ठतया- इति प्रत्यक्ष सिद्धत्वेन आगमैवेंदै ज्ञापनीया न भवति । आनन्द शब्दस्यान-दमात्रवाचकस्य तत्प्रचुरे सभावितेषदु ख जीवे लक्षणाया त्रयो दोषा । पारमार्थिकभिन्नसत्ताकवस्त्व न्तराभावेन तत्त्वपदवाच्यार्थनिष्ठविशेषणद्वयस्य अन्योन्य विरोधवत्तया तम प्रकाशवद्वैशिष्ट्यायोगे अखण्डार्थी वा क्याथ सपद्यते । तथा च स्वरूपलक्षणवाक्येषु वाच्यार्थस्य ' अतोऽन्यदार्तम् ' इति श्रुत्या मिध्यात्वश्रतिपादनात् निषेध मुखेनैव अतद्यावृत्तिस्वरूपप्रतिपाद्नेन छक्षणवाक्यानि सम असानि भव तीति भाव ॥ ॐ एवमित्यागमाबोध्याये नम् ॥

एकभक्तिमद्धिता। एकस्मिन्नभेदे जीवन्नद्धाणो भक्ति भजनीयत्वबुद्धि तत्परिजिज्ञासा येषा सन्ति, तैर्राचिता पूजिता इत्येतदुपळक्षण स्तुता भ्याता नमस्कृतेत्येवमादी नाम्, 'यनमनमा ध्यायति तद्वाचा वदति तत्कर्मणा कराति ' इति श्रुते मानसिकव्यापारपूर्वकानि हि इतरेन्द्रिय कर्माणि भवन्तीत्यभिप्राय । अथवा, अस्मिन् ससारमण्डले तत्स्वरूपपरिज्ञातार ये केचन, तेषा भजनीयत्वाध्यवसायो भक्ति तदेकप्रवणता सगुणब्रह्मविषया अष्टविधा, तैरेकभ किमद्भिरचिता अन्तर्यागबहिर्यागमहायागप्रकारै पूजिता इत्यर्थ ॥ अ एकभक्तिमदिचतायै नम ॥

एकामचित्तनिध्यीता। एकम् ऐक्यरूपम् अप्रम् आ लम्बन विषय विजातीयप्रत्ययतिरस्कारपूर्वकसजातीयवृत्ति काभि निरन्तरव्याप्रिविषयीकृतचैतन्य यस्य तत्तादृश चि त्तमन्त करण येषा ते । यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहा रधारणाध्यानसमाधीना परिपाकातिश्चयेन पश्चात्सपद्यमाना सप्रज्ञातसमाधे त्रिविधा भूमिका— ऋतभरा, प्रज्ञालोका, प्रशान्तवाहिता चेति । ऋत यथाभूत सिचेदानन्दलक्षण ब्रह्म भरति वृत्तिव्याप्त्या विषयीकरोतीति प्रथमा तथा, 'आत्मन्येव वश नयेत्' इति भगवद्वचनात् । प्रज्ञालोका । प्रज्ञाया अखण्डाकारवृत्ती नित्यनिरन्तराभ्यासेन परिपाक नीताया ब्रह्मविषयिण्या आवरणाभिभव कुर्वन्त्या सत्याम्, 'प्रज्ञा प्रतिष्ठा' इत्यादिश्रुते, प्रज्ञाया ब्रह्मस्वरूपाया आछोक अभिन्यक्ति साक्षात्कार यस्या सपद्यत सा का

रणविज्ञानम् । यस्मिन्विज्ञाते सर्वमिद विज्ञात भवतीत्येक विज्ञानेन सर्वविज्ञानरूपम् । प्रारब्धवशात्तदा चित्त तदध्य स्त सर्वजगद्रष्टुमिच्छति यदि, तदानीं चैत-यप्रकाशेनैव प्रकाशित जगत्स्वाप्रपदार्थवद्शेष भासते। इद च भरद्वाजा दीनामस्तीति पुराणादिप्रमाणवेद्यमस्माकम् । तथा च तस्या भूमिकाया निरुद्धसामध्ये सदन्त करण साकारस्वरूप नि र्वासन यदा नइयति, तदा प्रशान्तवाहिता भवति । वह प्रवाह सततवृत्ति धारा अस्य अस्तीति वाही, वाहिनो भाव वाहिता प्रशान्ता च सा वाहिता च प्रशान्तवाहिता। अथवा, प्रज्ञान्त बाह अस्य अस्तीति प्रज्ञान्तवाही। प्रशान्तवाहिनो भाव प्रशान्तवाहिता, 'मनसो वृत्तिशून्यम्य ब्रह्माकारतया स्थिति । असप्रज्ञातनामेति समाधिर्योगिना त्रिय 'इति वचनात्, 'प्रशान्तमनस होनम् 'इति भगव द्वचनात्, 'प्रश्वयप्रेजाऽनिलखे समुस्थित पश्चात्मके याग गुणे प्रवृत्ते । न तस्य रागो न जरा न मृत्यु योगाग्निमय शरीरम् 'इति श्रुत्या उक्तलक्षणसाधनपरिपाकव श्राद्भवति । तैर्निध्यीता, ध्यानस्य निर्गतत्वात् । भेदास्फूर्तौ ध्यानविषयो न भवति ध्यातु स्वरूपमेव प्रकाशते, 'ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति ' इति श्रुते । निध्याता इति पाठ नितरा श्रवणमनननिदिध्यासनेन साक्षात्कृता इत्यर्थ ॥ ॐ एका ग्रचित्तनिध्यीतायै नम ॥

एषणारहिताहता। एषणा इच्छा। मा त्रिविधा। एत ह्रोकजयाय पुत्रैषणा । पितृह्योकजयसाधनकर्मसपादनाय वित्तेषणा । उपासनादिना जयसाधन देवलोक , तस्मिन्ने षणा छोकैषणा। आभि रहितै अनाकृष्टचिते, 'ते ह स्म पुत्रैषणायाश्च वित्तेषणायाश्च लोकेषणायाश्च व्युत्थायाथ भिक्षाचर्य चरन्ति 'इति श्रुते । एषणारहिता ये परमहस परित्राजका सन्यासिन ते आदरेण अतिशयप्रेम्णा स्वस्व रूपेण आदृता अङ्गीकृता निरन्तरध्यानेन माक्षात्कृता सती मोक्षरूपतया प्राप्तत्वर्थ ॥ ॐ एषणारहिताहतायै नम ॥

एलासुगन्धिचिकुरा चैन कूटविनाशिनी। एकभोगा चैकरसा चैकैश्वर्यप्रदायिनी ॥ ७ ॥

एळासुगन्धिचिकुरा । एळावदिति दृष्टान्तप्रदर्शन सौग न्ध्यमात्रसद्भावप्रदर्शनेनाकल्पितदिव्यपरिमलसद्भावे हेतु , न तु प्राकृतत्वद् जनपरम् , ब्रह्मण स्वाधीनमायत्वात् । तद्व त्सुगन्ध इति साजात्यमास व्यव्यते, गुणमात्रादानेन सर्वत्र पदार्थान्यस्य ष्टष्टान्तीकरणात् । सुगन्या येषा

सन्तीति सुगन्धिन तादृशा चिकुरा कुन्तला यम्या सा तथा । स्वभावसिद्धदिन्यपरिमलशालिसर्वाङ्गसौरभ्य वती, चिकुरपदस्य उपलक्षणत्वादिति भाव ॥ ॐ एला सुगन्धिचिकुराये नम ॥

एन कूटविनाशिनी। एनसा पापाना कूट समुदाय।
आगामिसचितप्रारब्धभेदेन समष्टिक्षपेण दृढतर तत्त्वज्ञा
नेन विना अन्यस्य भोगमात्रस्य तद्विनाशकत्वावगमात्
तेषा च कल्पकोटिकाळ क्रमिकभोगप्रदान विनोपायान्त
रेण क्षयेप्सूनामात्मब्रह्माभेदज्ञानविषयत्या चैतन्य नाशय
तीति तथा। एवविदि पाप कर्म न ऋष्यते, 'अशरीर
वाव सन्त प्रियाप्रिये न स्पृशत ' इत्यादिश्चते , 'अह
त्वा मर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि दित स्मृतेश्च। अथवा
पनासि च तत्कारणीभूत कूट कपटवचनाभिधान च त
त्कारण माया च नाशयतीति तथा।। ॐ एन कूटविना
शिन्ये नम ।।

एकभोगा। एकेन कामेश्वरेण साक भोग भुक्ति। भोग स्वस्वक्रपानन्दानुभव यम्या सा तथा। अथवा, एकम्य अ-ज्ञानतत्कार्यस्य कार्यकारणक्रपेण अभिन्नस्य तद्धिष्ठानतया स्वमत्ताधायकत्वेन भोग परिपालन यम्या सा। प्रपच्छो त्पत्तिस्थितिनाशहतुमायोपाधिकचैतन्यमित्यर्थे । 'एकाकी न रमते तत पतिश्च पत्नीश्चाभवताम्' इति पुरुषविधब्राह्मणवच नात्, द्पत्योरैच्छिकभेदकत्वावगमेन परमार्थत एतत्स्वरूप स्यैकचैतन्यरूपतावगमात्, तदुभयभोगस्यापि एकभोगत्वात् तद्वतीति वा ॥ ॐ एकभोगाये नम ॥

एकरसा। एक अभिन्न रस सामरस्य यस्था सा, 'रस होवाय छन्न्वानन्दी भवति 'इति श्रुते। एक नव रसषु मुख्य शृङ्गारस यस्था सा तथा। अथवा, एकेन परमेश्वरेण अस्था कियमाण श्रीत्यतिज्ञयक्षप रस एति इष्यक यस्था सा। अथवा एकिसम्नेव स्वभर्ति रम निरितश्यशीति अनुरागसङ्गा यस्था सा। अथवा, षड्सेषु मुख्य मधुरस शियत्वेन यस्या सा, सत्त्वगुणप्रधान मायापिषक चैतन्यस्वरूपत्वात । 'रस्या स्निग्धा स्थिरा हृद्या आहारा सान्त्वकिषया इति भगवद्वचनात ॥ ॐ एकरसायै नमः॥

एकैश्वर्यप्रदायिनी। ईष्टे प्ररयति अन्तर्यामित्वेन सवा णीति ईश्वर । 'य सर्वेषु भूतषु तिष्ठन्य सर्वाणि भूता न्यन्तरो यमयति' इति श्रुते । तत्प्रेर्यमाणाना जीवाना भूतशब्दवाच्याना अज्ञानतत्कार्यान्त करणोपहितप्रतिबिम्ब चैतन्यरूपाणा जामदाद्यवस्थाभिमानिना अखण्डब्रह्मसाश्चा त्कारवेलायाम् अभेदानुभवात्, 'तत्त्वमित दित श्रुतेश्च 'ए कमेवाद्वितीयम् ' इति विशेषितत्वाच, एकश्चासावीश्वरश्च ए केश्वर तस्य भाव तदैक्य तन् प्रद्दातीति तथा। बहुषु वि द्याधनवत्सु तेष्वेको विद्याधनवानित्युक्ते, तत्रत्यजननिष्ठविद्या भावे तदिशयप्रतीतिवन् एक च निरतिशयमणिमादिकमैश्च र्य नि श्रेयस प्रद्दातीति वा। यद्वा एक मानुष सर्वेत्कृष्ट सार्वभौमत्वादिलक्षणमभ्युद्यसामान्यमैश्वर्य प्रद्दातीति वा तथा। ॐ एकंश्वर्यप्रदायिन्यै नम् ।।

#### एकानपत्रसाम्राज्यप्रदा चैकान्नपूजिना। एघमानप्रभा चैजदनकजगदीश्वरी॥ ८॥

एकातपत्रसाम्राज्यप्रदा। आतपान आ समन्तान् अध्या त्माधिदैवताधिभूतानि आ शब्दार्थ । तभ्या जाता तापा आतपा । तपन्ति शाषयन्तीति तपा, आतपभ्य त्रायति रक्षतीति आतपत्र सर्वससारदु खोपशमात्मकमात्मज्ञानम् । 'यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोह्मेव यास्यसि इति भगवद्वचनान् । अखिलदु खनिदानाज्ञाननिवर्तक एक लक्षणया अभिन्नव्ञद्व विषयकमित्यर्थ । एक च तन् आतपत्र च अखण्डाकार ज्ञानम्, तेन जायमान यत्साम्राज्य सम्राजो भाव सर्वोत्तम त्व तत्प्रद्दातीति । अथवा, एकातपत्रसाम्राज्य चक्रवर्तित्व तत्प्रद्दातीति वा ॥ अ एकातपत्रसाम्राज्यप्रदायै नम ॥

एकान्तपूजिता। एकस्य अद्वितीयस्य शोधितत्वपदार्थस्य अन्ते उपाधौ हृदि परिच्छेदकत्वात् पूजिता अहमित्य
परोक्षीकृता, 'यत्माक्षाद्परोक्षाद्वद्वां 'इति श्रुते । एकस्य
ब्रह्मण अन्ते उप पूजिता षद् गत्यवसानार्थयोरिति धातुपाठात् उपनिषद्वद्वामात्रतया पर्यवस्यतीत्यर्थ । एकान्तपूजि
ति नाम्नोपनिषदित्यर्थ । अथवा, एकान्ते 'गुहानिवाता
श्रयेण प्रयोजयेत् 'इति श्रुत एकान्तस्थल ध्यानादिना
योगिभिर्विषयीकृतेत्यर्थ । अथवा, कामेश्वरेण एकान्ते स्त्री
लिङ्गे पूजिता । सप्रदायप्रवृत्त्यर्थमादौ ईश्वरेण बहिर्यागक
मण आदिमसाधनेन सर्गाद्यकाले पूजादिना सतोषितत्वात्
भूतार्थव्यपदेश । एकान्ते सवप्रविलापनसमये पूजिता
ध्यानादिना सपादिता साक्षत्कृतेत्यर्थ । 'कश्चिद्धीर प्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्विमच्छन् 'इति श्रुतेरिति वा ॥
अ० एकान्तपूजिताये नमः ॥

ण्धमानप्रभा। एधमाना विवर्धमाना सर्वातिशायिनी प्रभा कान्तिर्यम्या सा, 'तमेव भान्तमनुभाति सर्वे तस्य भासा सर्वेमिव विभाति 'इति श्रुते । अठ एथमानप्रभाये नमः॥ एजदनकजगदीश्वरी । एजन्ति कम्पमानानि चष्टमाना नि प्राणवन्ति जीवन्ति अनेकानि नानोपाधिकानि जगन्ति जङ्गमानि विचरत्प्राणिन इत्यथ । ईष्टे प्रेरयतीति ईश्वरी । स्थावराणा सुखदु खप्राप्तिपरिहारोपायानाभिङ्गत्वेऽपि स्वजी वनहेतुभूतोदकपानादिप्रवृत्तिदर्शनाश्वेष्टावत्व तत्राप्यस्तीति जगच्छव्दो निर्विदेषप्रपश्चमात्रपरो वक्तव्य , अन्यथा 'सर्वे षु भूतेषु ' इति श्रुतौ चरप्राणिमात्रपरत्वे सकोचापत्ते । अस ति विराधे सामान्यवाचकस्य शब्दस्य विशेषस्रभणाङ्गीका रस्य न्यान्यत्वान् । अन्यथा ब्रह्मण प्रपश्चमात्रोत्पत्त्यादिहे तुत्व सकुचित भवेत् । अत एव आकरे एजत्पद उपात्तम् । यथाकथचित कियाश्रयत्वेन प्राणवत्त्वमात्रस्य समष्टिहिर एयगर्भाश्रयत्वेन सर्वेषा प्रेयेत्व सभवतीति भाव ॥ ॐ एज दनेकजगदीश्वये नमः ॥

एकवीरादिससेव्या चैकप्राभवशालिनी। ईकाररूपा चेशित्री चेप्सितार्थप्रदायिनी॥९॥

एकवीरादिससेव्या । एक अनितरसाधारण वीर
पुरश्चर्यादिना कृतमन्त्रदेवतासाक्षात्कारलब्धपुरुषार्थ पुमान्
विजयप्राप्ताभ्युदयज्ञाली । राजराजनिष्ठधैर्यगाम्भीर्यादिगुण
वस्वेन तत्तद्देवतोपासका पुरुषा वीरा इत्युच्यन्ते । यासा

शक्तीनामाद्यो यषा प्राणिकोटीना ता एकवीराद्य तासा कद्म्बै ससेव्या ससेवितु योग्या। यदा ईश्वरी भक्ताननुगृह्वाति सगुणविष्रहवती स्यात् तदा अनेकपरिवारदेवताप
रिसेविता मन्त्रदेवतात्वेनोपासनीयेव्यर्थ । अथवा, एकवीरा
रेणुका, तदाद्य शक्तय श्यामछाप्रमुखा, ताभिस्तत्काछप्रपश्चे स्वस्वपीठे स्थिता सत्य उपासकानामभीष्टवरप्रदात्यो दृश्यन्ते । ता अस्या परिसेवकत्वेन स्वयमभीष्टवर
कामा इत्यस्या प्रकृताया महिमातिश्वयोक्ति ॥ ॐ एकवीरादिसंसेव्याये नमः ॥

एकप्राभवशालिनी। प्रमोर्भाव प्राभव रश्चकत्व एकमिनतरसाधारण च तत्प्राभव च तच्छालक इति तथा।
अथवा, प्राभवस्य सापेक्षकधमत्वादेकपदस्य चानन्यगामित्वा
र्थस्य सामानाधिकरण्येन स्वारस्येन पर्यालोन्यमानेन अय
मर्थ सून्यत। प्राभव च नियम्यलोकोद्भव विना अनुपपद्य
मान तदन्तर्गततत्कार्यमर्थापत्त्या सिध्यति। तथा च वटबीजव
स्त्वन्तर्गतपश्चाद्भाविकार्यवत्कृ्टस्थचैतन्यमिति भाव। अथवा,
प्राभव नामेश्वरत्व तदाक्लप्तानियम्यजगच्चोपलक्षणविधया य
स्यैकस्याखण्डचैतन्यस्य तदेकप्राभवम्। 'पादोऽस्य सर्वा भू
तानि' 'एकाशन स्थितो जगत्' इति श्रुतिस्मृतिभ्या भूतपूर्व

गत्या प्राभवोपछित्वतमेक सिश्चितन्यह्म शास्त्रते आविष्करो ति तथा। अथवा एक च तत् प्राभव च एकप्राभव मुख्य सार्वभौमत्वमिति यावत् । प्रभुत्वपरपराया सिविशेषाया कुत्रचित् पर्यवमानावश्यभावे 'एष सर्वेश्वर एष भूताधिप-तिरेष भूतपास्त्र ' इति श्रुत्या अन्तर्यामितया साक्षात्क्र त्युत्पादकत्वयुक्त्या च इतरवागाद्यवयवप्रेरणातिशयाना प योप्तिरत्वेवास्तीत्यभिप्राय । तथा च निरङ्कशस्वतन्त्रज गत्कारणत्वहृपतटस्थस्रश्रमस्वतेद्वान्तसमन्वयविषयीभूता अखण्डसिद्धानन्दस्वहृपा परदेवता अवश्य स्वस्वहृपेणैव ध्यातव्येति निष्कृष्टार्थ ॥ ॐ एकप्राभवशास्त्रन्ये नमः॥

ईकाररूपा। इकार रूप तृतीयावयव यद्वाचकमन्त्रस्य यस्या सातथा॥ ॐ ईकाररूपायै नम'॥

ईशित्री। इच्छित ईष्टे इति ईशित्री सर्वप्रेरिका इत्यर्थ ॥ ॐ ईश्वित्र्ये नमः॥

ईप्सितार्थप्रदायिनी। अर्थ्यन्ते प्रार्थन्ते इत्यर्था अभ्यु दयिन श्रेयसक्तपा, आप्तु गन्तु प्राप्तु इच्छाविषयीभूता ईप्सिता, ते च ते अर्थाश्चेति कर्मधारय, ईप्सितार्थान् प्रददातीति तथा। केवलकर्मणामदृष्टद्वारा कालान्तरभावि फलदात्त्वमचेतनत्वान्नापपद्यते । तादृशाना किस्मिन्नप्यर्थे सामर्थ्यादर्शनात् । चेतनाधिष्ठिताना तु कर्मणा भृत्यक्र तपराक्रमादितुष्टराजवत्तदाराधितपरमेश्वर कर्माध्यक्ष , इति श्रुत्या सर्वज्ञस्य तत्तद्धिकारिक्रतपुण्यापुण्यानुरूपतया फल प्रदाने समर्थस्य सत्त्वकल्पने तदन्यस्य चेतनस्य जीवादेस्तत्र सामध्यविरहात् स एव तत्त्तद्गुगुणविषयेच्छोत्पाद्नेन तत्साधनानुष्टापयिता सन् तत्फलकामना पूरयतीत्यनीश्व रमीमासकमतिनरासो द्रष्टच्य । अथवा, ईप्सिता जिज्ञा सिता, तथा च स्वस्वरूपप्रतिपादकवेदान्तश्रवणमनननिदि ध्यासनविषयीकृता सती अर्थे प्रार्थमान सर्वाभ्यहितमो क्षरूप पुरुषार्थ प्रददातीति तथा ॥ ॐ ईप्सितार्थप्रदा यिन्ये नम ॥

## ईहिगित्यविनिर्देइया चेश्वरत्वविधायिनी। ईशानादिब्रह्ममयी चेशित्वायष्टसिद्धिदा॥

ईहिगित्यविनिर्देश्या। ईहक् एतक्षक्षणळिक्षित एताहश परिमाण एवस्वरूप एताहशधर्मवानिति प्रत्यक्षसिद्धार्थी विनिर्देष्टु शक्यते। 'यश्कष्ठाषा न पश्यति ' इत्यादिश्रुत्या सर्वेन्द्रियगोचरत्वनिराकरणात् विनिर्देश्या न भवति। औ पनिषदाना मते तु उपनिषदा वेदैकदेशत्वेन इतरप्रमाणा नपेक्षतया अज्ञातार्थज्ञापकत्वेन प्रामाण्यसुररीकृतम् । इद मेव एताहगेवेति प्रत्यक्षसिद्धार्थज्ञापने तासामनुवादकत्वेन सापेक्षत्वरूपमप्रामाण्य प्रसज्येतेत्यभिष्राय । ॐ ईहिग त्यविनिर्देश्याये नम् ॥

ईश्वरत्वविधायिनी। ईश्वरस्य भाव तस्त्रैक्य विद्धाति, आवरणविश्लेपशक्तिमदश्चानिवर्तकाखण्डाकारचैतन्यस्वरूपा सती भेदबुद्धिमात्रसपादितैश्वर्यैक्यायोगभ्रम निवर्तयती त्यर्थ, 'स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यते ' इति श्रुते । अथवा, ईश्वरत्य नाम नानादेशविद्याधनोत्कर्षादिमस्व तत्तत्प्राणिनिकायपुण्यप्रारब्धानुसारेण कर्मफळ प्रयच्छतीति वा । अर्थस्यरत्वविधायिन्ये नमः ।।

ईशित्वाद्यष्टसिद्धिदा। ईशित्वमादियाँसा तास्तथा। 'अ в п ун 13 णिमा महिमा छच्वी गरिमा प्राप्तिरीशिता। प्राकाम्य च विश्वत्व च यत्र कामा परागता 'इति वचनात्। ता सिद्धारष्ट्रो द्वातीति तथा। अणिमा क्षणमात्रेण अतिस् क्ष्मभाव। महिमा महतो भाव। छच्वी छाघव। गरिमा गुरोभाव, जडतरपवतादिवत् भारवशेनाप्रकम्पित्वमित्य थे। क्षणमात्रेण विराडाकृतिमस्त प्राप्ति। हस्तेन चन्द्र-मण्डछादिस्पर्शे इशिता, इन्द्रादीनामपि प्ररक्ता। प्राकाम्य अप्रतिहतकामनावस्त्वम्, वाञ्छितार्थफछप्रप्तिरित्यर्थ। विश्वतः सर्वछोकवशीकरणमामध्यम्। यत्र कामा परागता, काम्यन्त इति कामा विषया यत्र यसिम् एथ्यर्ये सित परागता बहिर्भूता भवन्ति, विषयाणामनुभवाभावे ऽपि तक्षन्यसुखवस्त्व आप्तकामत्विमत्यर्थ। एता अष्ट सिद्धय। ॐ ईशित्वाचष्टसिद्धिदाये नमः।।

# ईक्षित्रीक्षणसृष्टाण्डकोटिरीश्वरवह्नमा। • ईडिता चेश्वराधीद्गक्रारीरेक्चाधिदेवता॥

ईक्षित्री । उदासीनद्रष्ट्री साक्षिणी असगोदासीनज्ञानस्व-रूपेलथें, 'साक्षी चेता' इति श्रुते, 'आवि सनिद्दित गुहायाम्' इति श्रुते । ॐ इक्षित्रये नम ॥ ईक्षणसृष्टाण्डकोटि । अण्डाना ब्रह्माण्डाना कोटय असख्याता , भूतभाविकाछभेदेन बहुवचन कोटिशब्दस्य, अनादित्वात् ससारमण्डलस्य, ईक्षणेन भाविकार्यालोचनेन सृष्टा अण्डकोटयो यया सा तथा, 'तदैक्षत बहु स्या प्र जायेयेति' 'स ईक्षाचके' 'आत्मा वा इदमेकमप्र आ सीत् नान्यत्किचन मिषत् स ईक्षत लोकान्नु सृजा इति स इमाह्रोकानसृजत' इत्यादिश्रुते , बाह्यकारणमनपेक्ष्य ऊर्ण नाभ्यादिदृष्टान्तप्रदर्शनेन चेतनस्याभिन्ननिमित्तोपादानप्र- दर्शनयुक्ते , 'प्रकृतिश्च प्रतिज्ञादृष्टान्तानुपरोधात्' इत्यादे-श्चेति भाव । ॐ ईक्षणसृष्टाण्डकोटये नम ।।

ईश्वरवह्नभा। ईश्वर कामेश्वर वद्मभ पति यस्या सा तथा। ईश्वराणा ब्रह्मविष्णुकद्रादीना तत्तिश्रष्ठमिने त्कर्षक्रपेण प्रीत्यतिशयविषयत्वेन अभ्याहितेत्यर्थो वा। ॐ ईश्वरवह्नभारी नमः॥

ईडिता। ईड स्तुताविति धातुपाठात् स्तुतिभि विषयी कृता, वेदान्तैरिति शेष , 'एष नित्यो महिमा ब्राह्मणस्य ' इत्यादिश्रुते । ॐ ईडितायै नम ॥

ईश्वराधां क्रश्नरीरा । ईश्वरस्य सिव्दानन्दासकस्य शिव स्य अर्धे च तत् अक्क च अर्धाक्रम् । आनन्दस्वरूपता शरीर शरीरवत्स्वरूपलक्षण यस्या सातथा। 'सिश्चन्मय शिव साक्षात्तस्यान दमयी शिवा' इति स्मृते । अथवा, ईश्वर-स्याधीं वामभाग शरीर मूर्तिर्थस्या सा। अथवा, ईश्वरस्य इकारस्य अधीं क्ष शक्तिबीज शरीर मन्त्रात्मिका मूर्तिर्थस्या सातथा। ॐ ईश्वराधीं कृशरीराये नम ॥

ईशाधिदेवता । ईशस्येत्युपळक्षण जीवस्यापि, ईशस्य तत्पद्वाच्यार्थस्य मायोपाधिकस्य विशिष्टस्य अधि उपिर विशेषणद्वयस्य परित्यागे देवता द्योतमाना कूटस्थचिन्मात्रशो-धिततत्त्वपदार्थक्षपेत्यर्थ । अथवा, ईश कामेश्वर अधि देवता पूच्या यस्या सा तथा । परमपतित्रतेत्यर्थ ॥ ॐ ईशाधिदेवतायै नमः॥

## ईश्वरपेरणकरी चेदाताण्डवसाक्षिणी। ईश्वरोत्सङ्गनिलया चेतिबाधाविनाद्यानी॥

ईश्वरप्रेरणकरी । ईश्वरस्य बिम्बचैतन्यस्य स्वरूपा सती जगत्सर्जनादिकार्यप्रेरियत्री प्रेरणकरी आज्ञापकेद्यर्थ । इच्छाज्ञानिक्रयाशक्त्यावरणिवक्षेपशक्तिप्रतिफिछितचित्स्वरूपा भाविकार्योनुकूछप्रारब्धाध्यक्षपरमेश्वरेक्षणनामधेयप्रकाशात्मि का भवतीति भाव । ईश्वरप्रेरण तदाज्ञामनुख्रङ्कनेन क- रोतीति वा, तदीयभार्यात्वेन नितरा तद्वश्चेति यावत्॥ ॐ ईश्वरपेरणकर्ये नमः॥

ईशताण्डवसाक्षिणी । इशस्य तत्पद्वाच्यार्थस्य ताण्डव नर्तनवद्प्रयत्नसपाद्य छीछामात्रमित्यर्थ , जगत्सर्जनादिरूपा क्रिया चळनरूपकर्मत्वसामान्यात , तस्य साक्षिणी अस सर्गप्रकाशरूपिणीत्यथ , 'असगो न हि सस्त्रते ' इति श्रुते । अथवा, ईशताण्डवस्य परमेश्वरनृत्यनाट्याभिव्यश्वितचतु ष ष्टिकछोपदेशम्य साक्षिणी । तदुक्तम— 'नर्तनाद्धि परेशस्य चतु षष्टिकछाजिन ' इति प्रदोषस्तात्ने ईशताण्डवनर्तनवर्णन मितस्फुटमिति नेह छिख्यते ॥ ॐ ईशताण्डवसाक्षिण्ये नम् ॥

ईश्वरोत्सगनिल्या। ईश्वरख स्वभर्तु बत्सग ऊरू तौ निल्य यस्या सा तथा ॥ ॐ ईश्वरोत्सगनिल्यायै नम'॥

इतिबाधाविनाशिनी । ईतिबाधा दैवागुपद्रव , श्रुद्र जन्तुपीडा वा, ता विनाशयतीति तथा ॥ ॐ ईतिबाधा विनाशिन्ये नम ॥

ईहाविरहिता चेदादाक्तिरीषित्समतानना । सकाररूपा ससिता सक्ष्मीवाणीनिषेविता । ईहाविरहिता। अप्राप्तप्राप्तिं प्रति इच्छा ईहा, तथा विरहिता, आप्तकामत्वात् तद्विरहितेत्यर्थ ॥ ॐ ईहावि-रहिताये नमः॥

ईशशक्ति । ईशम्य शक्ति सर्वज्ञत्वादिस्वरूपसामर्थ्ये य-स्या सातथा, 'देवात्मशक्तिम्' इति श्रुते ॥ ॐ ईश्वशक्तये नम् ॥

इषित्सितानना । इषत् स्मित मन्द्रहास यस्य तत् तथा, ताहगानन यस्य सा तथा, पर्याप्तकामत्वेन सर्वदा प्रसन्न मुखीत्यर्थ । दु खास्पर्शिपरमानन्दरूपतया वा तथा ॥ ॐ ईषित्सिताननायै नम ॥

लकाररूपा। रूप्यत इति रूप मन्त्रस्य चतुर्थवर्णत्वेन ज्ञापक यस्या सा तथा॥ ॐ लकार्रूपाये नम् ॥

छिता 'छित त्रिषु सुन्दरम इति वचनात् अ त्यन्तसौन्दर्यवतीत्यर्थ । अनुपमसौन्दर्या वा ॥ ॐ छि तायै नम ॥

छक्ष्मीवाणीनिषेविता। छक्ष्मी रमा सर्वेश्वर्यशक्ति , वाणी सरस्वती सर्वज्ञानशक्ति , ताभ्या नितरा अक्कृत्रिमप्रेम्णा अनन्यभूता सती सेविता। सेवानाम उन्मीछिताज्ञाप्रतीक्षा, तद्वस्वादित्यर्थ ॥ ॐ छक्ष्मीवाणीनिषेवितायै नम ॥

### लाकिनी ललनारूपा लसदाडिमपाटला। ललन्तिकालसत्फाला ललाटनयनार्चिता ॥

लाकिनी। क सुखम्, 'क ब्रह्म इति श्रुते, तन्न भवतीत्यक ब्रह्मभिन्नतया प्रतीयमान दु खात्मक जगत् अकम्, लीयत इति लम्, उपलक्षणमुत्पत्त्यादे , लमक मस्यास्तीति लाकिनी, अनृतजडदु खरूपजगत्कारणतत्र्याषृ-त्तस्वरूपब्रह्मभूता इत्यर्थ ॥ अ लाकिन्ये नम ॥

ललनारूपा। रूप्यते ज्ञाप्यते अनेनेति रूप ज्ञापक तत्या प्यिक्क चिह्नमिति वा, ललनाना स्त्रीणा रूप वेष आभर णाद्यलकारो वा आकृतिर्वा यम्या सा तथा, ललना स्त्रिय रूपाणि भूतय यस्या सा तथा, 'लिङ्गाङ्कितमिद पश्य जगदेतद्भगाङ्कितम ' इति पुराणवचनात् ॥ ॐ लल नारूपायै नम ॥

लसद्दाडिमपाटला । दाडिमशब्दन विकसित तत्पुष्प लक्ष्यते, लसत् सद्या विकसनप्रकाश च तद्दाडिम च, इद उपलक्षण बन्धूकादीनाम् , तद्वत्पाटला श्वेतमिश्ररक्तवर्ण प्रधानमूर्तिमतीत्यथ , 'श्वेतरक्त तु पाटलम् ' इति वचनात् । ॐ लसद्दाडिमपाटलायै नम ॥

छलन्तिकालसत्काला । ललन्तिकया परित मुक्ताफल खचितनवरत्नमध्यया ललाटमध्यदेशभूषया, इद्मुपलक्षण छलाटपट्टादीनाम्, लसत् फाल यस्या सा तथा ॥ ॐ ललन्तिकालसत्कालाये नमः ॥

ख्ळाटनयनार्चिता। छळाटे नयन येषा ते, अत्र छळा टशब्देन भूमध्य छक्ष्यते, नयनशब्देन झानमपि, तथा चौध्वेद्दष्टिमि खेचरीमुद्र्या विळीनिचत्ते असिवरुणयोर्म ध्यदेशाभिधानाविमुक्कतपरमेश्वराराधनपरपुरुषप्राप्यत्वाभि धायकात्रिप्रश्रोत्तरजाबाळश्रुतिगतयाञ्चवल्क्योत्तरवाक्यनिर्दि ष्टभूमिकाजयसिद्धिमत्पुरुषे अचिता साक्षात्कृतेत्यर्थ। अय वा, तृतीयनेत्रवता शिवेन तत्स्वरूपरुद्रैवी पूजितेत्यर्थ।

लक्षणोज्ज्वलदिन्याङ्गी लक्षकोट्यण्डनायिका । लक्ष्यार्थी लक्षणागम्या लब्धकामा लतातनु ॥

लक्षणोज्जवलिद्याङ्गी। दीप्यते प्रकाशत इति दिन्य लक्षणे स्वरूपतदस्थनामके उज्ज्वल शोभित शुद्धम् अङ्ग स्वरूप विप्रहो वा। घृताकिठन्यन्यायेन 'तदात्मान स्वय मकुरुत' इति श्रुत सिचदानन्द्यनीभूतजीवात्मको विप्रहो यस्या सा तथा। अथवा, सामुद्रिकशास्त्रोक्तदिव्यस्थाणै कञ्चलानि मपूर्णानि दिव्यानि यानि अङ्गान्यवयवा शिर पाण्यादय अस्या सन्तीति वा तथा॥ ॐ स्रक्षणोञ्ज्वस्र दिव्याङ्गयै नमः॥

लक्षकोट्यण्डनायिका । लक्षानि च कोट्यश्च असल्या तापरिमितानीत्यर्थ , ससारस्यानादित्वेन भूतभविष्यदा दिभेदेन बहुसल्यावन्त्वमण्डानाम्, तानि च तान्यण्डानि च हिरण्यगभैविराज्रूपाणि समष्टिन्यष्ट्यात्मना विश्वतैजसापा धिभूतानि, तेषाम् अधिष्ठानविम्बचैतन्यात्मना नयति स्वस त्तामापादयतीति नायिका ॥ ॐ लक्षकोट्यण्डनायिकायै नम् ॥

लक्ष्यार्था। लक्षणया शोधनया जहद्जहल्लक्षणया वा प्रतिपाचते वेदान्तमहावाक्याना योऽर्थ तत्स्वरूपा। अय वा, योगशास्त्रप्रसिद्धवहिरन्तरूष्वीध प्रदेशिवशेषरूपभूमिका सु स्वस्वमनोवाञ्छाविषयविशेषणत्वन निर्गुणत्वन वा मना विलयरूपहठराजयोगादिसाधनपरिपाकवशेन साक्षात्कृत चै तन्य लक्ष्य इत्युच्यते, अर्थ्यते याच्यते गुरु प्रति इति अर्थ , लक्ष्यो योऽर्थ चित्स्वरूपपरमानन्दरूप सोऽपि सैवेति तथा, 'ब्रह्मैवेदममृत पुरस्ताद्वद्व पश्चाद्वद्वा दक्षिणतश्चोत्त

### रेण ' इति श्रुते ॥ ॐ लक्ष्मार्थायै नम ॥

लक्षणागम्या । लक्षणानाम शक्यार्थे वाचकस्य पदस्य अन्वयाद्यनुपपत्त्या तत्सवनिधपदार्थान्तरज्ञानहेतु शक्य सबन्धादिपदजनयपदार्थान्तरज्ञानहेतु शब्दवृत्तिरित्युच्यते, तस्या वाच्यवाचकतत्सवन्धादिभेदज्ञानपूर्विकाया परिच्छि न्नसावयवपदार्थसबन्धज्ञानहेतो केवलचिन्मात्रे निरुपाधि के वस्तुनि षष्ठीजात्यादीना लक्ष्यतावच्छद्कधर्माणामभावे प्रवृत्त्ययोगात् तया अगम्या , गन्तु ज्ञातु योग्य गम्य तन्न भवतीत्यगम्या । वेदान्तमते जहदजहल्लक्षणया विश्रषण-मात्रपरित्यागस्य अन्यान्यतादात्म्यानुपपत्त्या बोधितत्वात् तदर्थं सा अवश्यमङ्गीकर्तव्या । विशेष्यस्य ज्ञानस्वरूप त्वेन नित्यतया लक्षणाजन्यत्वात् तद्रथी सा न अपेक्यत इति भाव । तथा च प्रकृताया देवताया शुद्धचैत न्यमात्रस्वरूपतया स्वय प्रकाशत्वेन स्वक्षणागोचरत्वात् लक्षणागम्येति नाम युक्तमिति भाव ॥ ॐ लक्षणा-गम्यायै नम् ॥

छड्धकामा। छड्धा काम्यन्त इति कामा ऐहिकामु-दिमकसुखसाधनानि, लक्षणया तत्तज्जन्यसुखानि वा तथाभूता कामा यया मा तथा पर्याप्तकामेत्यर्थ, 'पर्याप्तकामस्य कुतात्मनस्तु इहैव सर्वे प्रविलीयन्ति कामा ' इति श्रुते ॥ ॐ लब्धकामायै नम ॥

ळतातनु । ळता इव ळता कल्पादिवझय सकलपुर-षाथप्रदत्वेन जगति प्रसिद्धा , ता इव सुकुमारत्वाद्याश्रया तनु मूर्ति यस्था सा तथा।। ॐ लतातनवे नम ।।

ललामराजदलिका लम्बिमुक्तालनाश्चिना । लम्बोदरप्रसूर्लभ्या लजाढ्या लयवार्जिता ॥

ललामराजदलिका। ललाम्ना कस्तूरीतिलकेन कस्तूरी पत्रण वा राजत् विभ्राजत् परमशाभि अलिक ललाट यस्या सा तथा।। अ ललामराजदलिकायै नम ॥

लम्बिमुक्तालताभ्विता । लम्बिनय लम्बमाना प्रसृता मुक्ताळता हारा मुक्ताफलानि वा यस्या सा तथा। नवरत्रखचितसुवर्णसुक्तागुन्छै सर्वाङ्गेषु प्रस्नव मानै ललाटपर्यन्त लम्बमानिकरीटप्रथमभागललाटपट्टना-साम्रताटङ्काध कर्णदेशकण्ठप्रदेशहस्तचतुष्टथाङ्गद्समानप्रदेश-कूर्पासपरित पदकायदेशकटिनिबद्धकाञ्च्यादिषु परिलम्बमा नैरित्यर्थ ॥ अ लम्बिमुक्तालताश्चितायै नम ॥

लम्बोद्रप्रसू । लम्बोद्रस्य महागणेशस्य प्रस् जन-यिक्षी मातेत्यर्थ । लम्बोद्र प्रसूत इति वा ॥ ॐ लम्बो-दर्मसवे नम ॥

छभ्या। ससारद्शायामावारकाज्ञानेन स्फुटमप्रकाशमा-ना सती श्रवणादिसस्कृतान्त करणवृत्तावखण्डाकारज्ञानभू-मिकाया प्रतिफछितस्वरूपेण विस्मृतकण्ठगतकनकभूषणवत् प्राप्तप्राप्तिरूपतया लब्धु योग्येति तथा ॥ ॐ लभ्यायै नम ॥

छज्जाह्या। छज्जया, उपलक्षणमन्त करणघर्माणा सर्वे-षाम्, आह्या तद्वस्वेन आकारवतीत्यर्थ। तिरोधानादिना अन्तर्हिता सती वरादि प्रयम्छतीति छज्जाह्या भवतीति च उपचर्यते॥ ॐ छज्जाह्यायै नम् ॥

खयवर्जिता। 'अविनाशी वा अरेऽयमात्मा अनुच्छि त्तिधर्मा' इत्यादिश्रुत, छयो विनाश, तेन रहिता वर्जितेत्यर्थ। इद्मुपछक्षण षड्भावविकाराणाम्, सत्य ज्ञानमनन्त नद्ये इत्यादिश्रुते ॥ ॐ छयवर्जिताये नमः॥

हींकाररूपा हींकारनिलया हींपदिष्रया। हींकारबीजा हींकारमन्त्रा हींकारलक्षणा।। हींकाररूपा। हींकार रूप्यते निरूप्यते निर्देश्यत इति रूप मन्त्रपश्चमावयव यस्या सा तथा। ॐ हींकार रूपाये नम ॥

र्हीकारनिलया। ही मक्षर निलय गृह्वद्वच्छेद्क यस्या सा तथा । स्वीयवाचक त्वारोपितवाच्यतावच्छेद्क धर्माव-च्छिञ्जतादिसपादनेन गृह्वर्तिपुरुषवत् च्यावृत्तस्वरूपेण ज्ञा पक भवति । अन्यथा, नाम्नो वाच्यार्थे प्रवृत्त्ययोगादिति भाव । ॐ हॉकारनिलयायै नमः ॥

हींपदिप्रिया। पद्यते गम्यते ज्ञायते अनेनेति पद्म, पद्यत गम्यते प्राप्यत इति वा पदम्, द्वीकारस्य मन्त्रावयवतया तद्देवताप्रकाशकत्वेन तस्या शक्तत्वात्— 'शक्त पदम्' इति तक्षक्षणत्वात् तथा प्रथम व्याख्यानम्। हकाररेफेकारानुस्वारा णा वर्णाना समष्टिस्वरूपेण समुदायात्मकत्वात् 'वर्णसमुदाय पदम्' इत्यपि पदछक्षणवत्त्वमस्य घटते। पुरश्चर्यावता स्वदेव तासाक्षात्कारद्वारा सक्छपुरुषार्थप्रापकत्वात् द्वितीयव्याख्यान तथा कृतम्। तस्मिन् प्रिया प्रीतिमतीत्यर्थ ॥ ॐ हींपदिपि-यारे नमः॥

हींकारबीजा। हींकार एव बीज स्ववाचकमन्त्रभाग, 'ज्ञापक देवताना यत् बीजमक्षरमुच्यते ' इति वचनात् हीं-

कारस्य मायाप्रकाशकत्वेन, वटधानादि स्वनिष्ठवृक्षाभिन्य 'क्षकत्वेन कारणतया यथा बीजिमत्युच्यते— सत्कार्यवादिना-मन्यक्तनामरूपकारण बीजम्, अभिन्यक्तनामरूपात्मक पश्च। द्वावि कार्यमित्यङ्गीकार, सकलकारणसमवधाने विशेषनाम-रूपवत्तया कारणस्याभिन्यक्तिरूत्पत्ति, तथा चोक्तबीजस्य मायाविन्छन्नचैतन्याभिन्यश्वकत्वेनापि बीजत्वम्, तादृश द्वीकारबीज यस्या सा तथा ॥ ॐ हींकारबीजायै नमः॥

ह्वीकारमन्त्रा । ह्वीकारस्य मननात् त्रायत रक्षति वाच्य-वाचकयोरभेदादिति तथा । ह्वीकारघटितो मन्त्रो वा यस्या सा इति वा तथा ॥ ॐ ह्वीकारमन्त्रायै नमः ॥

हींकारलक्षणा । हकार शिव , आकाशबीजत्वादाकाश-विश्वर्लेप , रेफ विद्ववीज कार्योत्पादसनिहितशक्तिमदी श्वरवाचकम , तथा च हकारयुक्तरेफ शुद्धवैतन्यमेव कारणताविन्छन्नम् - इति वदति । ईकार मन्मथबीज तत्कारणलक्षकत्या स्थितिहेतु विष्णुरूपचैतन्यमभिद्धाति । अनुस्वारस्तिसम्नेव पदार्थे अभिम्नानिमित्तोपादाने लय विक्त । तथा च हीमित्युक्ते जगदुत्पित्तिस्थितिलयकारण चैतन्य शक्त्या वाच्यार्थ प्रतीयते । तस्यैवोपाधिपरिलागरूपलक्षण यस्या सातथा । हींकार लक्षण तदस्थलक्षण यस्या सेति वा तथा ॥ ॐ इींकारस्रक्षणायै नमः ॥ हींकारजपसुपीता हींमती हींविभूषणा । हींक्रीसा हींपदाराध्या हींगभी हींपदाभिधा॥

ह्रींकारजपसुप्रीता। ह्रींकारस्य जप ह्रींकारजप, तेन सुप्रीता॥ ॐ ह्रींकारजपसुप्रीतायै नम ॥

हींमती। वाचकत्वेन लक्षकत्वेन वा लक्ष्यपदार्थरूपेण वा वाच्यवाचकयोरभेदेन वा अस्या अस्तीति हींमती॥ ॐ हींमत्ये नम ॥

हींविभूषणा । केवलजडमायावाचक हींकार, तथा हि— हकार श्वेतवाचक, रेफ रोहिताथक, ईकार नीला थक, तथा च विशिष्टस्य शुक्लरक्तनीलवत्पदार्थवाचक तया सत्त्वरजस्तमोगुणवत्प्रकृतिवाचकत्वेन परिक्लिशानृत जडदु सस्वरूपवाच्यार्थकतया प्रकाशराहित्येन अनुपादेय ताया सत्या तदविल्लिश्रस्वप्रकाशचैतन्याकारतया विशिष्टा र्थस्य आपादमस्तकभूषिततकणीवदानन्दस्वरूपतया तद्वाच कहींपदस्य अष्टेश्वर्यसिद्धिप्रदानशक्त्याधायकत्या शोभायमा न भूषणवत्, 'कुण्डली पुरुष ' इत्यत्र कुण्डलस्योपलक्षणतया इतरसजातीयादिव्यावर्तकत्वम्, तथास्यापि बीजस्येतरव्या वृत्तवाच्यार्थगोचरप्रमाजनकत्वेन भूषणवत् यस्या सा

### तथा ॥ ॐ हींविभूषणायै नम ॥

हींशीला । हीमित्यनन तद्वाच्यार्था ब्रह्मविष्णुरुद्रा लक्ष्यन्ते, तेषा शील स्वभाव पारमार्थिक रूप सिचदान न्दात्मकता यस्या सा तथा, तिब्रष्टधर्मा सत्त्वरजस्तमा गुणाद्यो वा यस्या सा तथा, 'शील स्वभावे धर्मे च' इति वचनात्॥ ॐ हींशीलाये नमः॥

ह्रींपदाराध्या । ह्रीपदन एकाक्षरबीजमन्त्रेण आराधितु योग्या तथा । 'द्रींकारेणैव ससिद्धो मुक्तिं मुक्तिं च विन्द ति' इति मुवनेश्वरीकल्पवचनादिति यावत् ॥ ॐ द्रींप दाराध्यायै नम ॥

हींगर्भा । हींशब्दार्था सगुणमूर्तयस्तिस्र गर्भे खख रूपे सशक्तिका अविनाभावसबन्धेन यस्या सा तथा, 'मम योनिर्महद्भा तस्मिन् गर्भे दधाम्यहम् ' इति वचनात् ॥ ॐ हींगर्भायै नम ॥

ह्वींपदाभिधा। ह्वींकार अभिधा नाम यस्या सा तथा। समष्टिक्रपाया समष्टिशब्दवाच्यत्वनियमादित्यभिसिध ॥ ॐ ह्रींपदाभिधायै नम ॥

हींकारवाच्या हींकारपूज्या हींकारपीटिका। हींकारवेद्या हींकारचिन्त्या हीं हींकारीरिणी॥ ह्रीकारवाच्या । मायोपाधिक ब्रह्माण कल्पितधर्मेण शब्दप्रवृत्त्युपपत्त ह्रींपदस्य वाच्या क्रह्मोत्यर्थ ॥ ॐ ह्रीं कारवाच्यायै नमः॥

हींकारपूज्या। 'मूलमन्त्रेण पूजयेत्' इति पूजाङ्गत्वन मू लमनोविनियोग श्रूयते। मूलमनुश्च देवताया स्वक नामेति वचनात्। अन्तमुखानामेव मन्त्रशाखेषु तन्नाम्ना व्युत्पन्नत्वा न्। हींकार नमोऽन्तमुद्यार्थ यथागुरुमप्रदाय श्रीचकादौ मूलदेवता पूजनीयेत्यागमरहस्यात् ह्रींबीजेनैव पूजयितु यो ग्या। अतिप्रियबीजनामत्वादित्यभिप्राय ॥ ॐ हींकार पूज्याये नम् ॥

हींकारपी।ठका । अत्र पीठशब्द आधारळक्षक । वा न्यार्थो हि ताचकशब्दस्य सत्ताप्रदृत्वेन आधारो भवति । मन्त्रदेवतयारभेदेऽपि अर्थनिष्ठमहिस्र तद्वाचकपदेऽदृश्यमा-नत्वात् कल्पितभेव सपाचेद्गुच्यते । हींकारस्य पीठिका वृत्तिस्थान शक्त्या गोचरतया विषयीभूतत्यर्थ ॥ ॐ हींका रपीठिकाये नम ॥

हींकारवेद्या। स्वरूपत निगुणब्रह्मतया अज्ञानविषयत्वा-अयत्वाभ्यामप्राप्तपुरुषार्थरूपतया समाग्दशाया प्रतीयमान-त्वात् गुरूपसदनश्रवणादिरूपविध्यप्रामाण्यनिरासाय स्व

णया शुद्धस्वरूपपरमानन्दतया प्रेप्सितत्वात् श्रवणादिजन्य-वृत्तिव्याप्यत्वरूपवेदनाविषयत्वम्। ' ब्रह्मण्यज्ञाननाशाय वृत्ति ज्याप्तिरितीर्थते ' ' मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेताम् ' इत्यादि वचनात् भगवताप्यङ्गीकृतमिति । हींकारेण गुरुमुखोद्भतेन वेद्या वेदित योग्या। तत्स्वरूपपरिज्ञानद्वारा तत्प्राप्तिरूपपु रुषार्थहेतुत्वादिति तात्पर्यम् ॥ ॐ हींकारवेद्यायै नमः ॥

हींकारचिन्त्या । अस्य बीजस्य पश्चप्रणवान्तर्गतत्वेन ॐकारभेदे ब्रह्मप्रतीकत्वाविशेषात् । प्रणवे यथा परापरब्र-ह्मापासनहेत्वदस्मिन वा प्रतीके तद्भवतीति विकल्प । यदा भक्तिपार्थक्येन मन्त्रविशेषेषु भवतीति योगवेदमार्गरहस्य न वादजल्पाद्यवकाश । हींकारे उभयविधन्रह्मस्वरूपतया चि-न्तितु योग्या । ध्यानस्य साक्षात्कार प्रत्यारादुपकारकत्वेन ध्यातव्येत्यर्थ ॥ अ हींकारचिन्त्यायै नमः ॥

ह्रीं। हृज् हरण इति घातुपाठात् समस्तविधैश्वर्यप्रदा नादिशक्यारोपाधिष्ठानत्वे सत्यपवादावशेषितपरमानन्दरूप मुक्तिरित्यथ ॥ ॐ हीं नम॰॥

ह्याँगरीरिणी। मूळमन्त्रात्मिकेति यावत् ह्रीमेव शरीर मृर्तिरस्या अस्तीति ह्याँशरीरिणी॥ ॐ ह्याँशरीरिण्ये नम ॥

### हकाररूपा इलघुक्पूजिता हरिणेक्षणा। हरप्रिया हराराध्या हरिब्रह्मेन्द्रवन्दिता ॥

हकारह्मा। हकार ह्म षष्टावयव यस्या सा, मूलविद्यावाच्यार्थवाचक यस्या सा, तथा।। ॐ हकार-रूपायै नम ॥

इल भूकपूजिता। इल युग धरति इति इल धृक् बल राम , तेन पूजिता ध्यान।दिभिराराधितेसर्थ ॥ ॐ ह छध्कपुजितायै नमः ॥

हरिणेक्षणा । हरिण्या एण्या ईक्षणमिव ईक्षण यस्या सा तथा, अतिसतीषेण कातराक्षीति भाव । सर्वत्र स-र्वदा सर्वद्रष्ट्रीति वा। भक्तेष्वादरहेतुदर्शनवतीति भाव ॥ ॐ इरिणेक्षणायै नम ॥

हरप्रिया। हरस्र प्रिया शिववहाभेटार्थ। हर प्रियो यस्या सा इति वा ॥ ॐ हर्मियायै नमः ॥

इराराध्या । हरेण स्वभन्नी आराधित योग्या, केवछस-बिदानन्दस्वरूपत्वात् ॥ ॐ हराराध्यायै नमः ॥

हरिज्ञहोन्द्रवन्दिता। हरि रमेश । ब्रह्मा वाणीश ।

इन्द्रो देवश उपलक्षण सर्वदेवभेदानाम् । तैर्वन्दिता नम स्कृता ॥ ॐ हरिब्रह्मेन्द्रवन्दितायै नम ॥

### हयारूढासेविताङ्घिईयमेधसमर्चिता। हर्पक्षवाहना हसवाहना हतदानवा ॥

ह्याह्नढासेविताङ्कि । ह्याह्नढानाम अश्वमात्रसेनानी शक्ति बब्यकरी। तया सेवितौ अङ्गी यस्या सातथा॥ अ इयारुढासेविताङ्क्ये नम ॥

हयमेधसमर्चिता। हयमेधेन अश्वमेधेन समर्चिता पू जिता । पुरुषत्वादिप्राध्ये इलादिभिरित्यथ ॥ ॐ हयमेध समर्चितायै नम ॥

हर्यक्षवाहना। वाहयतीति वाहनम्, हयक्ष केसरी वाहन यस्या सा तथा। महालक्ष्मीरूपदुर्गेत्यर्थ ॥ ॐ हर्यक्षचा-इनाये नम ॥

हसवाहना। हन्ति गच्छतीति हस सूर्य प्राणो वा, वाहनवत् आधारभूतप्रतीकमित्यर्थे , अभिव्यक्तिस्थानमिति यावत्, 'म यश्चाय पुरुषे। यश्चासावादिखे। स एक ' इति श्रुते । अथवा, इसवाहना ब्राह्मीरूपेणेत्यर्थ ॥ ॐ हंस वाहनायै नम ॥

हतदानवा । हता दानवा अनेकप्रकारशक्तिक्रपथरया भण्डासुरादय यया सा तथा ॥ ॐ इतदानवायै नम. ॥

### हत्यादिपापशमनी हरिदश्वादिसेविता। हस्तिकुम्भोत्तुङ्गकुचा हस्तिकृत्तिप्रियाङ्गना ॥

हत्यादिपापशमनी । हत्या ब्रह्महत्या आदिर्येषा तानि तथा पापानि शमयतीति तथा, 'हरिईरति पापानि 'इति वचनात् ॥ ॐ हत्यादिपापशमन्ये नमः ॥

हरिदश्वादिसेविता। हरित हरिद्वर्ण मरकत इव अश्वो यस्येन्द्रस्य स तथा आदिर्येषा ।दक्पतीना तै सविता चर णारविन्दसनिधि किंकरतयाश्रितेखथ ॥ ॐ हरिदश्वा दिसेवितायै नम ॥

हस्तिकुम्भोत्तककुचा। हस्त अखास्तीति हस्ती, तम्य कुम्भी तद्वदुन्नती बुची सान्द्री यस्या सा तथा।। ॐ ह स्तिक्रम्भोत्तुङ्गकुचायै नम् ॥

इस्तिकृत्तिप्रियाङ्गना । इस्तिन कृत्तौ चर्मणि प्रिय प्रीतिमान् शिव , तस्याङ्गना भामिनीत्यथ ।। अ हस्तिकु त्तिमियाङ्गनायै नमः ॥

# हरिद्राकुङ्कुमादिग्घा हर्यश्वाचमरार्चिता। हरिकेशसखी हादिविचा हालामदोल्लसा॥

हरिद्राकुङ्कुमादिग्धा । हरिद्राकुङ्कुमाभ्या उपलक्षण कस्तू-रीपत्रादीनाम् । दिग्धा लिप्तेत्यर्थ ॥ ॐ हरिद्राकुङ्कुमादि ग्धायै नम ॥

हर्यश्वाद्यमरार्चिता। हर्यश्व सुरेश आदिर्येषाम् अस राणा तैरिचेता किंकरतया नियामकत्वेन पूजितेत्यर्थ ॥ ॐ हर्यश्वाद्यमरार्चिताये नमः॥

हरिकेशसखी। हरय हरिद्वर्णा केशा शिरोरुहा यस, 'हिरण्यदमश्रुहिंरण्यकेश ' इति श्रुते । तस्य सखी प्रयोज नमनपेक्ष्योपकारिणीत्यर्थ । यद्वा वर्णेन नीलेन हरिणा विष्णु- ना समा केशा अस्य सन्तीति सर्वोङ्गसुन्दरनित्ययौवनि द्वृपसहितकामेश्वर, तस्य सखी॥ ॐ हरिकेशसख्यै नमः॥

हादिविद्या । लोपामुद्रापासितमनुरूपत्यर्थ ॥ ॐ हादि विद्यायै नम ॥

हालामदाळसा । हालाया अमृतमथनाद्भूतवारूण्या मदेन डल्लाग्नेन अलसा आरक्तनेत्रान्तरोमाञ्चादिचिह्नवती त्यर्थ ॥ ॐ हालामदालसायै नमः ॥

### सकाररूपा सर्वज्ञा सर्वेज्ञी सर्वमञ्जला। सर्वेकर्जी मर्वेभर्जी सर्वेहन्त्री सनातना ॥

सकाररूपा । द्वितीयखण्डद्वितीयावयवत्वेन ज्ञापक य-स्या मा तथा ॥ ॐ सकारकपायै नयः ॥

सर्वज्ञा । अलुप्तनित्यज्ञानम्बरूपेण सामान्यरूपेण सर्व जानातीति सर्वज्ञा, 'य सर्वज्ञ सर्ववित् 'इति श्रुते ॥ ॐ सर्वज्ञाये नम ॥

मर्वेशी । सर्वस्य कार्यस्य अन्तर्यामिक्रपेण ईष्टे प्रेरयती ति तथा ॥ ॐ सर्वेडये नम. ॥

सर्वमङ्गळा । सर्वप्रकारेण शुद्धविशिष्टचैतन्यरूपेण मङ्ग ला परमानन्दस्वरूपा। अत्र बहुत्रीहेरविवक्षितत्वात् विव-क्षिताया वा सुन्दरकायो राजत्यादिवत समासार्थ । अथवा, सर्वेषा मक्कल यस्या सा तथा। सर्वे प्रकारे ध्यानकार्त नपुजानमस्काराद्यचेनभक्तिजन्यकेंद्वर्ये जढानामपि मङ्गल सुख यस्या जायत सा तथा। सर्वेषामात्मरूपतया प्रतीय मान मङ्गल सुख्खरूप यस्या मोति वा । सर्वशब्दवाच्य सर्वकारण जित्र , तस्य मङ्गल सुख यस्या जायते सातथा, सिबन्मय शिव साक्षात्तस्यानन्दमयी शिवा ' इति व

चनात् । अथवाः, मङ्गल्रशब्दन मङ्गल्रहतुभूता क्षियो लक्ष्यन्ते । सर्वेषा प्राणिना मङ्गल मङ्गलसाधनभूता योषा स्वाभिन्नसिच्चतान्द्वन्त्वेन यस्या सा तथाः, 'एतस्यैवान-न्दस्यान्यानि भूतानि मात्रामुपजीवन्ति दिति श्रुतेरित्यर्थ । 'अशुभानि निराचष्टे तनोति शुभसततिम् । स्मृतिमात्रेण यत्पुसा ब्रह्म तन्मङ्गल विदु । अतिकल्याणरूपत्वात् नित्य-कल्याणसश्रयात् । स्मृतृणा वरद्त्वाच ब्रह्म तन्मङ्गल विदु ' इत्यादिवचनात् ॥ ॐ सर्वमङ्गलाये नम् ॥

सर्वकर्ती। सर्वे समस्त स्वशक्त्या मायारूपया करा तीति तथा, 'ईशत ईशनीभि 'इति श्रुत ॥ ॐ सर्वेक्ऋ्यैं नमः॥

सर्वभर्त्री । सर्वे विभर्तीति तथा, 'एव विधृतिरेषा ळाकानाम इति श्रुत ॥ ॐ सर्वभन्त्र्ये नमः ॥

सवहन्त्री । मर्वे हरतीति तथा । णभनीमत्रये 'यतो वा' इत्यादिश्रुत्युक्ततटम्थळक्षणत्रयमभिहितमिति वेदित व्यम् । ॐ सर्वहन्त्रये नम् ।।

मनातना । 'अजो नित्य शाश्वताऽय पुराण ' इति श्रुत नित्यसिद्धस्वरूपेत्यर्थ ॥ ॐ सनातनायै नम ॥

# सर्वानवद्या सर्वाङ्गसुन्दरी सर्वसाक्षिणी। सर्वात्मिका सर्वसौख्यदात्री सर्वविमोहिनी॥

सर्वीनवद्या । सर्वेज्ञानिश्वर्यादिगुणैरनवद्या । अवद्यानाम विद्यया होना जडप्रकृति मिध्या बाध्यमानः वात् । तद्विष्ठश्चणा सर्वज्ञानानन्द्रस्पत्वादनवद्या । सर्वेषा सर्वीभीष्ठप्रापकत्वेन स्तुत्या वा ॥ ॐ सर्वोनवद्याये नम् ॥

सर्वाङ्गसुन्दरी । सर्वाणि च तानि अङ्गानि च अवयवा जिर पाण्यादय , तेष्वन्यूनातिरिक्तभाववस्वात यथासासुद्धि कलक्षण तद्वस्वन सर्वाङ्गसुन्दरी । अथवा, सर्वेषामङ्गेषु गरीरेषु ब्रह्मस्वरूपतया अत्यन्तप्रेमविषयत्वेन सुन्दरपदार्थ वद्विनाभाववाङ्काविषयत्वात तथा ॥ ॐ सर्वाङ्गसुन्दर्थै नम् ॥

सर्वसाक्षिणी । सर्वेषा जडाना कार्याणा स्फूट्याधायक-त्वेन प्रकाशकर्त्री तथा । सर्व साक्षादीश्रत इति वा तथा ॥ ३० सर्वसाक्षिण्यै नम् ॥

सर्वात्मका । सर्वेषामात्मस्वरूपत्वान् । 'यश्वाप्नोति यदा दत्ते यश्वात्ति विषयानिह । यश्वास्य सतता भावस्तम्मादात्मेति गीयतं इति वचनात्तथा ॥ ॐ सर्वात्मिकाये नम ॥ सवसौख्यदात्री । सुखिन भाव सौख्यम्, सर्वाणि च तानि शियमोदशमोदानन्दशब्दवाच्यानि । इष्टदर्शनजन्य सुख श्रिय । तक्षाभजन्य मोद । तद्नुभवजन्य श्रमोद । धानन्द समष्टि । जीव भोक्ता । तानि ददातीति तथा । सर्वश्रकारै स्मरणादिभि सौख्य ददातीति वा । सर्वेषा मात्रह्मस्तम्बपर्यन्ताना यथाकर्मोपासन श्रत्यक्षेण दृश्यमान ज्ञानैश्वर्योदिसहित सुख ददातीति वा तथा। 'एव ह्यवानन्द याति' इति श्रुते ॥ ॐ सर्वसौख्यदात्रयै नम् ॥

सर्वविमाहिनी। सर्वान विमोहयतीति अन्यथा प्राह्य तीति वा तथा। 'अज्ञानेनाष्ट्रत ज्ञान तन मुद्धान्ति जन्त व 'अनृतेन हि पत्यूढा ' इति श्रुतिस्मृतिभ्या अज्ञाना वरणशक्तिकार्य मोहनादिसत्ताप्रकाशादिप्रधानाधिष्ठानत्वेन उपचारात् सर्व माहयतीत्युच्यत । अयो दहतीतिवत् ॥ अ सर्वविमोहिन्ये नम ॥

## सर्वोधारा सर्वगता सर्वोवगुणवर्जिता। सर्वोद्रणा सर्वमाता सर्वभूषणभूषिता॥

सर्वोधारा । सर्वस्याधारा 'ब्रह्म पुच्छ प्रतिष्ठा ' इति श्रुते । सर्वेषा हृद्यानि आधार अभिव्यक्तिस्थान उपासनाय यस्या सेति तथा ॥ ॐ सर्वाधाराये नम ॥

सर्वगता । सर्व गच्छतीति तथा । 'अनेन जीवेनास्म नानुप्रविदय' इति श्रुते ॥ ॐ सर्वगतायै नम ॥

मर्वावगुणवर्जिता । अवमानहत्तवश्च ते गुणाश्च तथा, आध्यात्मिकसबन्धन आरोपिता सत्त्वाद्य समष्टी, अन्त करणधर्मा कामाद्य व्यष्टी, सर्वे च ते अवगुणाश्च तथा । सर्वान्तर्यामित्वेन मवानुस्यूतत्वेऽपि तत्तदुपाधिनिष्टोत्तमाधम धर्मे न सबध्यत— घटादिनिष्टाकाशवत् कोशान्तर्गतखङ्गव द्वा, 'सूर्यो यथा सर्वछोकम्य चक्षु न छिप्यते चाक्षुपैर्वाद्य दोषै । एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न छिप्यत छोकदु खेन बाह्य 'इति श्रुते ॥ ॐ सर्वावगुणवर्जितायै नमः॥

मर्वारुणा । सर्वेष्वङ्गेष्वरुणा आरक्तवती, 'असी यस्ता स्रो अरुण ' इति श्रुते ॥ ॐ सर्वोरुणायै नम् ॥

सर्वमाता । सर्वेण कार्येण मीयते अनुमीयतेऽभदनेति तथा । तथा हि — इद जगत् ब्रह्माभिष्न तत्सत्तास्फूर्तिनिय तसत्ताप्रकाशज्ञानविषयत्वात् , यन् यिष्ठयतसत्ताप्रकाशवान् स तद्भिष्न — यथा तन्तुकार्य पट इति । सर्वान मिनाति स्वाभेदेन जानातीति तथा ॥ ॐ सर्वमात्रे नमः ॥ सर्वभूषणभूषिता। सर्वात्मकत्वन ये ये प्राणिन यानि
यानि भूषणाळकारभोजनादीन भाग्यवस्तून्यात्मार्थे सपा
दयन्ति, तेषा सर्वेषा प्रत्यक्तया ते सर्वेभूषिता उपकृतेत्यर्थ ,
'आत्मनस्तु कामाय सर्वे प्रिय भवति ' इति श्रुते । अथवा,
सर्वदेवात्मकत्वेन सर्वभक्तजनस्य स्वस्वेष्टदेवताप्रीत्यर्थ भूष
णभूषितत्वेन तथा। अथवा सर्वेभक्तजने तत्तद्वयवेषु
भूषणैरारापिता, स्वस्या महाराज्ञीत्वेन असगोदासीनस्व
भावत्वादिति भाव । यद्वा, सवदेशकाल्लोकेषु भूषणै
तत्न तत्र भवे उच्चावचैभूषणैरारोपिता, हस्त्यश्वादिदहोपाधिका सती तत्तदीयालकारादिषु जुगुष्मारहितेत्यर्थ । भूष
यन्ति सर्वोत्तमत्वेन प्रतिपादयन्ताति भूषणानि वेदान्तम
हावाक्यानि, सर्वे समस्तै गतिसामान्यात् एकतात्पर्येण
भूषिता लक्षणया पर्यवसिता समन्विता वेत्यर्थ ॥ ॐ
सर्वभूषणभूषितायै नम ॥

ककाराथीं कालहस्री कामेशी कामितार्थदा। कामसजीवनी कल्या कठिनस्तनमण्डला ॥

ककारार्था। 'क ब्रह्म' इति श्रुत्या ककारस्य ब्रह्मार्थक त्वेन तद्यतिरिक्तस्यातदर्थस्य बाधितत्वात् ॥ ॐ ककारा र्थाये नम ॥ कालहन्त्री । अजपारूपेण प्राणापाननामकचन्द्रसूर्यनियमन पुरुषाणा नियमितपरिमितायु स्वरूपैकविंशतिषट्गताधिकसहस्रमख्याकिनगमनरूपण क्षपयन्ति अवशेषायुषो
युगकरूपाद्यविशिष्टस्य वृद्धौ पुन सयमने तथा तथा वृद्धौ
सयुश्वानस्य सर्वप्राणेन्द्रियस्य वृत्तिल्ये मनोन्मन्यवस्था नि
ष्पद्यते । तथा च श्रुति — 'पृथिव्यप्नेजोऽनिल्खे समुत्थिते
पश्वात्मक यागगुणे प्रवृत्ते । न तस्य रोगो न जरा न
मृत्यु प्राप्तस्य योगाग्निमय शरीरम् ' इति 'अध्यात्मयागा धिगमेन देव मत्वा धीरा हर्षशोकौ जहाति ' इति च ।
तथा च तदानीमाविभृतब्रह्मस्वरूपेण 'तत स्रवत्सरो
ऽजायत दित श्रुत्या क्रियाशक्त्यात्मककालोत्पत्तिश्रवणात्
तिस्मन ब्रह्मण्येव लये काल हन्ति नाश्यतीति तथा
नामनिर्वचन युक्त वक्तुमिति भाव ॥ ॐ कालहन्त्रयै
नम् ॥

कामेशी । कामाना भोग्यपदार्थाना यथादृष्ट ईष्टे प्रेरयतीति तथा ॥ ॐ कामेश्यै नम ॥

कामितार्थदा । कामितानर्थान् द्दातीति तथा, 'आप्त काम ' इति श्रुते । ससारदशायामावृतानन्दस्य अनाप्तवद् वभासमानस्य आत्यन्तिकसुखात्मिका मुक्तिर्मे स्यादिति का म्यमानत्वादात्मन कामितत्वम् । कामितश्चामावर्थश्चेति तम्यैव ज्ञानस्यावरणाभिभावकत्वेन प्राप्तप्राप्तिरूपतया त ददाति प्रय-च्छतीति प्रकाशस्वरूपण अनुभावयतीत्यर्थ ॥ ॐ कामि तार्थदाये नमः ॥

कामसजीवनी । काम मन्मथ परमेश्वरनेत्राग्निविप्रष्ट भण्डासुरात्मना अनेककाळदेवळोकविपक्ष कामशास्त्रप्रयोग समये रतिदेवीप्रार्थनसमीचीनतदीयपूर्वकाय तपश्चर्यादिप-रिपाकफलभूत करुणारसपूरितापाङ्गावलोकनेन सजीवयति सप्राण कृत्वा तस्मै वरादि प्रयच्छति तेन त हर्षयतीति तथा ॥ ॐ कामसजीवन्यै नम ॥

कल्या । कल्यित ध्यात योग्या । अथवा, सर्वोत्तमदेव-त्वेन ध्यातु याग्या कल्या । कले कामधेनुत्वेन यथा वा-क्छितार्थकारणम् ॥ ॐ कल्याये नमः ॥

कठिनस्तनमण्डला । स्तनयो मण्डले आदिमभागौ सा-न्त प्रदेशी कठिने अप्रकम्पे अतिस्थिरे वा यस्या तथा।। ॐ कठिनस्तनमण्डलायै नमः ॥

करभोर' कलानाथमुखी कचजिताम्बुदा। कटाक्षस्यन्दिकरूणा कपालिप्राणनायिका॥ करभोक । करभ इव ऊरू यस्या सा तथा। 'मिण बन्धादाकनिष्ठ करस्य करमो बहि 'इति प्रमाणादिति भा व ॥ ॐ करभोरवे नमः॥

कलानाथमुखी । कला चतु षष्टिकला नाथयति प्रेर यतीति कलानाथ , 'निश्वसितमेतदृग्वेदो यजुर्वेद साम-वेद ' इत्यादिश्रुते , 'शास्त्रयानित्वात् ' इति न्यायाच । तान्शमुख वदन यस्या सेति नथा । कलानाथश्चन्द्र इव मुख यम्या सेति वा ॥ ॐ कलानाथमुल्ये नम ॥

कचिताम्बुदा । कचेन कशभारेण कबरेण वेट्यर्थ । जिता अधरीकृता अम्बुदा मेघा यथा मा तथा , भेघम-ण्डलापेक्षया ऊर्ध्वगामिशिरोक्हभारा व्योमकेजीति भाव । अथवा, केशवृत्तिनीलक्षभेण साहश्यासहत्वेन घिक्कृता भेघा यथा सा तथा ॥ ॐ कचिताम्बुदाये नम ॥

कटाश्चर्यान्द्करणा। यद्यपि दीनेषु परिपालयताबुद्धि-देवाना महता करुणेत्युच्यते, तथापि तस्या आन्तरत्वेन अज्ञायमानतया तेषु भक्त्यतिशयेन प्रयुत्त्यर्थे सेवादौ तद्वत्ता ज्ञानस्यावश्यकफळप्रदानादिहेतुतया निश्चयेन तद्तुरूपकसा स्विकवीक्षणस्मेरसभाषणादिसत्त्व तत्रावश्य भवतीति का-र्यसत्त्वप्रसन्धितकारणसन्त्ववत्तात्, करुणाया नवरसेष्व- न्तर्भावात्, रसशब्दस्य मधुरादौ हृद्धत्वात् तेषामनिवचनी यत्वऽपि अनुभवगोचरतायामिक्ष्वादिसारद्रव्यपदार्थानिष्ठत्वा-पल्रब्धे तत्मबन्धवशात् परपरया द्रवद्रव्यवृत्तिस्थन्दनरूप-क्रियाश्रयत्वसुपचर्यते । तथा च कटाक्षस्यन्दिनी करुणा परिपाल्यताबुद्धिरूपा यस्या सा तथा ।। ॐ कटाक्षस्य-न्दिकरुणाये नम ॥

कपालिप्राणनायिका। कपालमस्य अस्तीति कपाली आन-न्द्भैरव , तम्य प्राणनायिका प्राणस्थेत्युपलक्षण पश्चानाम । नायिका अधिष्ठानत्वेन प्रेरका। 'न प्राणेन नापानेन मर्लो जीवति कश्चन । इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेताबुपाश्रितौ' इति श्रुते । तस्यापि हृद्यान्तर्वर्तिपरमश्चरक्तपेति यावत् । प्राणवक्कभेति वा , प्रियेति भाव । ॐ कपालिप्राणना यिकायै नमः ॥

कारुण्यविग्रहा कान्ता कान्तिधृतजपावि । कलालापा कम्बुकण्ठी करनिर्जितपल्लवा ॥

कारण्यविष्रहा। कारण्य पूर्वोक्तक्रपा, करणस्य भाव, तत् विष्रह मूर्तियेस्या सति तथा। कारण्यस्या-न्त करणपरिणामबुद्धिरूपत्वेन नन्नान्तवीक्षासस्मितभाषादि नानुमीयमानत्वेऽपि साक्षात्तज्ञन्यमनोवाञ्चितवरप्रदाना दीना शरीरावयवविशेषजन्यतया कारुण्य विप्रहो यस्या सेति समासोपपत्ति । मायोपाधिकस्य ब्रह्मण जगत्सृष्ट्य नुकरणहेतुभूतस्वेच्छामात्रानिमित्तककर्मानधीनसिबदान-द्घ नीभूतात्मकभक्तानुप्राहकविप्रहवक्ता विना देवताया बुद्धा वनारोपेण सराजोपासनमनुपपद्यमान स्थात्, तद्र्थी देवताधिकरण मन्त्रप्रकाशिता देवा 'वजूहस्त पुर न्दर ' इत्यादिस्तत प्रमाणवेदवाक्यवशात् बाधकाभावे विग्रहवन्त अङ्गीकर्तव्या इति प्रतिष्ठापितम् । तथा 'बहु शोभमानामुमा हैमवतीम् ' इति केनोपनिषद्भाष्ये हैमानि हेमविकाराणि भूषणानि यस्त्रा सेति वा तथा, हिमवत अपत्य स्त्रीति च तथेति परदेवताया दिन्यविमहवत्त्व प्रति ष्ठापितम् । तथा च महानुभावाना स्वप्रकाशचैतन्यरूपाणा मेवभूताना सर्वीत्मना सर्वीत्तमाना मूर्तित्रयदेवाना ध्याना ग्रुपकाराय तादृशमूर्तिमत्त्वम् अस्तीति न किंचिदनीश्व रवादप्रसङ्गावकाश इति आस्ता विस्तर ॥ ॐ कारु ण्यविग्रहायै नम ॥

कान्ता। 'कन दीप्तौ' इति धातो अत्यन्तमनोहरतमे त्यर्थ। मदनगोपालवित्रहा वा। 'कदाचिदाद्या लिलता पु रूपा कृष्णवित्रहा। वशनादिवनोदेन करोति विवश जगत्'

#### इति त्रिपुरतापनीये ॥ ॐ कान्ताये नमः ॥

कान्तिधृतजपाविछ । जपाना जपापुष्पाणाम् , वपलक्षणम् अन्येषामारक्तवर्णानाम् , आविळ पङ्कि दृष्टान्तत्वेन कविभि हत्प्रेक्षिता । कान्त्या अप्राकृतस्वच्छपरमानन्दिषद्भासा धूता परित्यका प्राकृतत्वेन अल्पकान्तिमत्त्रया उपमायोग्यतया यया सा, 'न हि महान्तो नीचैरुपमीयन्ते 'इति न्याया दिति भाव ॥ अ कान्तिभृतजपावल्यै नम ॥

कळाळापा । कळा चतु षष्टिकळा आळापो व्यावहा-रिकशब्द यस्या सा तथा, 'वेदशास्त्रमयी वाणी यखा सा परदेवता ' इति वचनात्। कल अन्यक्तमधुर सप्रयो जन आळाप सलापो यस्या सेति वा तथा, 'अन्यका भारती तथा दित महापुरुषसामुद्रिकवचनात्।। ॐ फलालापायै नमः ॥

कम्बुकण्ठी । कम्बुशब्दन अत्र शङ्क्षानिष्ठरेखात्रय लक्ष्य ते। तद्वान्कण्ठो यस्या सेति तथा गुणनामेदम्।। 🕉 कम्बुकण्ठ्ये नम् ॥

करनिर्जितपह्नवा। करशब्देन करतल लक्ष्यते। पह वज्ञब्देन तिम्रष्टपाटल्य क्रिग्धता लक्षणया इत्पर्थ । तथा च अन्य।न्यगुणयोर्जयपराजये, अर्थात्तद्वतोरिप तौ सिद्धावि-ति तन्नामोपपत्ति । 'विवाहश्च विवादश्च समयोरेव शोभते' इति वचनात् करतल तत्साम्यध्वनिरनेन नान्ना कृत । करेण निर्जिता पह्नवा यस्या सा तथा।। ॐ करनिर्जित पह्नवाये नम ।।

### कल्पवल्लीसमभुजा कस्तूरीतिलकाश्चिता। हकाराथी इसगतिहीटकाभरणोज्ज्वला॥

कल्पविद्यासम्भुजा। यथा दिव्यवृक्षा नन्दनोद्याने प्र सिद्धा तथा तद्छकाराय वल्ल्याद्योऽपि कल्पयन्ति सपा दयन्तीति कल्पा, कल्पाश्च ता वल्ल्यश्च व्रतत्य, ताभि समा भुजा हस्ता यस्या सा तथा। कविसप्रदायप्राध्या स्त्रीभुजाना विद्यास्योक्तिरिति मन्तव्यम्। अत्र समपद् स्वारस्येन तेषामपि तद्वचिछन्नचैतन्यद्वारा यथाप्रारब्ध चे तनविद्याक्षाव्यक्षत्रफळकतृत्विमिति ध्वनितम्। 'एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूप रूप प्रतिरूपो बहिश्च' इति श्रुते, 'तत्तद्वावगच्छ त्व मम तेजोंशसभवम्' इति स्मृती च भगवता स्वकीयसिच्दानन्दस्वरूपावस्थितिरेवोक्ता। श्रत एव परदेवीभुजाना नैव साम्योक्तिरिति शङ्का निरस्ता वेदि तन्या, औपाधिकचैतन्येन तथाभूतचैतन्यस्य साम्योपपत्ते ॥ ॐ कल्पवछीसमभुजायै नम ॥

कस्तूरीतिलकाश्विता । कस्तूरीतिलकेन ललाटदेशसस्था पितिबन्द्वाकारमृगनाभिना अश्विता चिह्निता अलकृतेत्यर्थ ॥ अकस्तूरीतिलकाश्विताये नमः॥

हकाराथी। हकारस्य आकाशवीजस्य अथी, अर्थ स्व रूपचैतन्यम् आकाशविप्रहेट्यर्थ, 'आकाशो ह वै नाम ना मरूपयोर्निवेहिता ते यदन्तरा तद्वद्या' इति श्रुते ॥ ॐ हकाराथीयै नम ॥

हसगित । हिन्त गच्छतीति हस प्राण आदियो वा। हसस्य प्राणस्य गित गमनागमन छक्षणया तज्ञाप्याजपा मन्त्रक्षपा यस्या सा तथा, 'हकारेण बहिर्याति सकारेण पुनर्विशेत्' इति बचनात्। यद्वा, तद्भिमानिदेवताक्ष्पा ग्रीषोमात्मकसूर्यचन्द्रगती अहोरात्रात्मककाळस्वक्षपाया य स्या सा। अथवा, हिन्त देहाहेहान्तर गच्छति स्वक मंबशेनेति हसा जीव, तस्य गित प्राप्यस्थान मुक्ति रित्यर्थ, 'ब्रह्मविदाप्रोति परम्' 'यद्गत्वा न निवर्तन्ते' इति श्रुतिस्मृतिवचनात्। अथवा हिन्त स्वकार्यभूत जगत्प्रविश्वतीति हस । 'हसस्तु परमेश्वर ' इति नृसिहता पनीये। गम्यते प्राप्यते शरणत्वेन प्रपद्यते चतुर्विधमकैरि
ति गिति । इसश्चासौ गितिश्चेति सामानाधिकरण्यसमास ,
'इण्स श्रुचिषत्' इति श्रुते । आहोस्वित् , इसस्य ब्रह्मवाह
नस्य गितिरिव गमन यस्या सा तथा । उताहो, इसशब्देन
नामैकदेशेन इसक पादकटकमुच्यते , गम्यते अनेनेति
गिति चरणम् , इसयुक्ते गिती पादारिवन्दे यस्या सा
तथा । यद्वा, इसशब्देन नित्यानित्यसारासारजङाजङादिव
स्तुविवेकसमर्था , इन्ति गच्छिन्ति प्रतिप्राम प्रतिदेशम्
इति इसा परिक्राजका चतुर्थाश्रमिण निष्कामा , तेषा
गित गम्यते ज्ञायते साक्षात्क्रियत इति गिति , 'सन्यासयो
गाद्यत्य शुद्धसत्वा ' इति श्रुते । 'ये पूर्व देवा ऋषयश्च
तिद्वतु ते तन्मया अमृता वै बभूवु ' इति श्रुते । जीवन्मु
कपुरुषानुभूयमानपरमानन्दमुक्तिस्वरूपेसथ ॥ ॐ इस
गत्ये नम् ॥

हाटकाभरणोज्ज्वला । हाटकस्य सुवर्णस्य कार्याणि च तानि आभरणानि च हाटकाभरणानि तैरुज्ज्वला तथा, प्रकाशिता अलकृतेल्यर्थ । हाटकस्य सुवर्णक्षपत्रद्वाण्डस्य आभरणवदुज्ज्वला प्रकाशकरी सत्तास्पूर्तिकरील्यर्थ । यहा, तस्मित्राभरणे मङ्गलस्त्रादिभि सनाथस्त्रीमण्डलस्त्रूपेर ज्ज्वलतीति । आहोस्वित्, कार्यकारणद्वयरूपवसुदानेन वसु स्वरूपेण वा उज्ज्वलति प्रकाशत इति तथा, 'वसुरन्तरिक्ष सत्' इति श्रुते ॥ ॐ हाटकाभरणोज्ज्वलाये नम ॥

### हारहारिकुचाभोगा हाकिनी हल्यवर्जिता। हरित्पतिसमाराध्या हठात्कारहतासुरा॥

हारहारिकुचाभोगा। हरस्य परमेश्वरस्य इमे सवन्धिन
हारा ईश्वरत्वाप्तकामत्विन्यतृप्तत्वादयो गुणा, तान् हरति
तिद्विपरीताविद्याद्याधानेन उत्सादयतीति हारहारी, कु
चयोराभोग पर्यन्तभूमि यस्या सा तथा। परमेश्वरस्य
तिद्विषयकवाञ्च्या तदेकसक्तमनस्त्वेन तत्कारणीभूताविद्या
वश्वृत्तित्वेन वशीकृतमायत्वस्वरूपेश्वरत्वसमानाधिकरणा
प्रकामत्वादय अपहृता, जीवेश्वरयोरेकत्र तेषा तद्गुणाना च सामानाधिकरण्यायोगादिद्यर्थ। तथा च ईश्वरस्य
मिद्यस्यमित्यन्यत्र पदार्थे बुद्धिमत्त्वस्यैव बहुभवनक्त्पत
या तस्य जगदाकारत्वाधायका—इत्यधिकगुणोत्प्रेश्वाविषयत्वेन
भोगस्यातिश्योक्तिरिति द्रष्ट्रच्यम्। अथवा, हारान् मुक्तास्त्र
ज हरति आदत्ते इति हारहारी कुचाभोगो यस्या सेति
तथा षद्प्रकारेण मुक्ताहारेण यथोचितकाळ भूषितवतीति
भाव ॥ ॐ हारहारिकुचाभोगायै नमः।।

हाकिनी । हाकयति जन्ममरणयो छेदयतीति हा किनी, 'हाक् च्छेदे' इति धातुपाठात् ॥ ॐ हाकिन्यै नम ॥

हस्यवर्जिता । हलसविन्ध हस्य कृष्यादिद्वारा जनक त्वम , तद्वर्जिता, कामादिविहीनशुद्धचैतन्यस्वरूपत्वात् । हस्य कपट मित्रेष्वप्यन्यथा स्वान्त करणाविष्कृति तेन व र्जिता । अविद्याविरहिततत्त्वपदलक्ष्यार्थभूतत्वादिति यावत् ॥ ॐ हस्यवर्जिताये नम ॥

हरित्पतिसमाराध्या । हरिता दिशा पतय महेन्द्रादय, तै सम्यक् श्रद्धाभिक्तपूर्वकम् आराधितु योग्या । तद्विपक्ष निवर्हणनेष्ठप्रापकदैवतत्वादित्यभिसिध ॥ ॐ हरित्पतिस माराध्याये नम ॥

हठात्कारहतासुरा । हठात्कारेण अतिशीव्रतया हता पराभूता असुरा असुरपक्षा महिषादयो यया सा तथा, समबलयो किल लोके सामाग्रुपाय बलाबलिबचारणा च भवति । प्रबलस्य तु दुर्बलेषु वैरिषु सिंहस्य मेषेष्विव तद्योगेन अतित्वरयाविचारेणैव देवलोकसुखप्रदा—इति ना मार्थविचारणायामितरेषु केमुतिकन्यायेन तत्कारणत्व ध्व नितमिति योजनीयम् ॥ ॐ हठात्कारहतासुराये नम् ॥

## हर्षप्रदा हविभीक्त्री हार्दसतमसापहा। हल्लीसलास्यसतुष्टा हसमन्त्रार्थेरूपिणी॥

हर्षप्रदा। हर्ष आनन्दकारक मुखविकासादिकार्थोन्नेय स्वात्मसभावनेतरपरिभवनिमित्तचित्तवृत्तिविशेष, कार्यस्य कारणाविनाभावितया तत्प्रदान तद्धेतारप्याक्षिपतीति सुख-प्रदेखर्थ। प्रददातीति प्रदा। अथवा, हर्ष धनयौवनादि सुख पुत्रवन्धुवर्गादिक्षपेण परिष्ठस्य प्रकर्षेण द्यति खण्ड यतीति वा तथा॥ ॐ हर्षप्रदाये नम् ॥

हिनर्भोक्त्री। 'स ब्रह्मा स शिव स हिर सेन्द्र सो ऽक्षर परम स्वराट्' इति श्रुते वसुरुद्रादित्याकारेण हवीं षि यजमानेन अग्नौ प्रक्षिप्तानि स्वाहासुखेन सुङ्क इति तथा। यहा हवीं षि काळान्तरभाविफळानि अदृष्टात्मना सूक्ष्मरूपाणि तत्त्वजमानजीवगतानि भूतसूक्ष्माभिधानानि समष्टि व्यष्ट्यात्मनेश्वरजीवोपाधिभूतानि मायाविद्याद्याव्दितानि सु किपर्यन्त सुनक्ति पाळयतीति वा तथा। अन्यथा ससा रस्थानादित्वाभावेन आदिमद्यरीरासुत्पत्तौ अङ्गीक्रियमाणा याम् प्रपश्चस्याकस्मिकत्वमकृताभ्यागमप्रसङ्गश्च स्यादिति भाव।। ॐ हिमेोकिंग्यै नम ॥

हार्दसतमसापहा। हृद्याविच्छन्न हार्दे, 'यो वेद नि हित गुहायाम्' इति श्रुते । अस्मिन् यत्सतमस आवारक त्वात् 'तम आसीत्' इति श्रुत्या च आत्मिविषयक तदाश्रय मज्ञानम् अनर्थकरम् अव्याकृताकाशमित्युच्यते, महावाक्य श्रवणजन्यधीवृत्तिप्रतिफिल्लिताकारेणापहन्तीति सा तथा । नाह ब्रह्मास्मि ससारी ब्रह्म नास्ति न भाति च-इत्यज्ञानस्य सोऽह ब्रह्मास्मि सिवदानन्दलक्षण — इति एकाकारवृत्तिका ध्यत्वनियमेन बाधाधिष्ठानम् 'नेह नाना' इति श्रुतिसिद्ध ब्रह्मरूपेति यावत् ॥ ॐ हार्दसतमसापहाये नमः ॥

हलीसलास्यसतुष्टा । हलीसै चित्रदण्डै कुमारिकाभि एकतालादियुक्तगीतपूर्वक यहास्य नर्तन तस्मिन् सतुष्टा प्रीतिमतीत्यर्थ । 'नारीणा मण्डलीनृत्य बुधा हल्लीसक विदु 'इति हारावलीकोजात् मण्डलाकारनृत्यसतुष्टेत्यर्थ ॥ ॐ हल्लीसलास्यसतुष्टायै नमः॥

हसमन्त्रार्थरूपिणी। हसै परमहसै उपाम्यो यो मन्त्र प्रणव तस्य शास्त्रबोधिततत्त्वाथरूपिणी। वाज्यळक्ष्ट्यार्थस्व रूपेण ज्ञायमानेत्यथ । अथवा, इसमन्त्र अजपा। हकार सकारौ शोधिततत्त्वपदार्थी, हकारस्य परोक्षवाचिन सकार-स्य ताहशस्य च भागत्यागळक्षणया निष्प्रपञ्चनित्यशुद्धमु क्तबुद्धसिदानन्दस्वरूपेखर्थ ॥ ॐ इसमन्त्रार्थरूपिण्यै नमः॥

## हानोपादाननिर्मुक्ता हर्षिणी हरिसोदरी। हाहाहृहुमुखस्तुत्या हानिवृद्धिविवर्जिता॥

हानोपादानिर्मुक्ता । अनिष्ठसाधने हान परित्यागिक-या । इष्ट्रसाधने उपादान स्वीकारिक्रया । परिजिहीषीं आदित्सा वा । 'अप्राणो ह्यमना ग्रुप्त ' 'अकायम्' 'अ शरीर वाव सन्त न प्रियाप्रिये स्पृशत ' इति बहुश्रुते अशरीरस्य ब्रह्मणोऽन्त करणादिधमीणामसभवात् ताभ्या निर्मुक्ता नि सङ्गेत्यर्थ , 'विमुक्तश्च विमुन्यते ' इति श्रुते ॥ ॐ हानोपादानिर्मुक्तायै नमः ॥

हर्षिणी । 'एष ह्येवानन्दयाति ' इति श्रुते हर्षयति सतोषयतीति तथा ॥ ॐ हर्षिण्ये नम॰ ॥

हरिसोदरी। हरिणा कुष्णेन समान एक उदरम् उत् ईषत् अर भेदक अवच्छेदकमित्यर्थ । उचैरर कूटो वा अत्यल्पिम ध्याभूतमायोपाधिकचैतन्यावस्थाविशेषरूपा । 'अपरेयिम तस्त्वन्या प्रकृतिं विद्धि मे पराम् । जीवभूता महाबाहो ययेद धार्यते जगत्' 'देवात्मशक्तिं स्वगुणैर्निगृहाम' इत्या दिस्मृतिश्रुतिभ्याम् ईश्वरस्य रूपभेदवत्त्वावगमादिति मन्त व्यम् ॥ ॐ हरिसोदयैं नम ॥

हाहाहू हु मुखस्तु त्या । हाहाहू हू नामक गन्धर्वे मुख्यो येषा जनाना तैस्तथा । स्तुत्या गुणिनिष्ठगुणाभिधान स्तुति । तदाश्रयत्वेन प्रतिपादनीयेत्यर्थ ॥ ॐ हाहाहू हु मुखस्तु त्यायै नम ॥

हानिवृद्धिविवर्जिता। अवयवोपचयरूपा वृद्धि, तदप चयरूपा हानि, ताभ्या वर्जिता, 'न कर्मणा वर्धते नो कनीयान्' इति श्रुते। उपलक्षणम्, षड्भावविकाराणा शरीरधर्मत्वेन कर्मनिमित्तत्वादीश्वरे तदभावेन निर्विकारे-त्यर्थ।। ॐ हानिवृद्धिविवर्जिताये नमः।।

## हय्यङ्गवीनहृद्या हरिगोपारुणाशुका। लकाराख्या लतापूज्या लयस्थित्युद्भवेश्वरी॥

ह्य्यङ्गवीनहृद्या । ह्य्यङ्गवीनवत् नवनीतसहृशविरलं मृद्ववयवपरिणामद्रवत्वसाहृश्ययोगिहृद्यकृपारस्रूपपरिणां मवतीति सा तथा। हृद्याभावेऽपि सर्वोत्मकतया तद्वस्वम् । ईक्षणादिवन्मायापरिणामकृपा द्या वा हृद्यशब्देन उन्यते । अवागमना ' इति श्रुत्या सर्वनिषेधात् ॥ ॐ हृस्यङ्गवी नहृद्याये नमः ॥

हरिगोपारुणाशुका। हरिगोप इन्द्रगोप आद्रीमघा-नक्षत्रे वर्षासुद्भवा अष्टपादा रक्तवर्णा मृद्धका कीटवि-शेषा , तथा शोणमशुक अम्बरम् , स्वार्थे कप्रत्यय , किरणानि वा यस्या सा तथा । ॐ हरिगोपारुणांशु-कायै नम ॥

लकाराख्या। लकारयुक्त मूलमन्त्र आख्या वाचक शब्द यस्या सा तथा। लकारस्य शक्रवीजस्य वार्थे, 'सेन्द्र 'इति श्रुते। लकारयुक्तस्य मायाबीजस्य वा स्त-ब्धमायेत्यर्थ।। ॐ लकाराख्याये नमः।।

खतापूर्या। छवन्ति विनमन्ति असन्तनम्रा भवन्तीति छता परमपतित्रता अरुन्धस्याद्य स्त्रिय , ताभि स्थिरमा कुल्याय स्वेष्टदेवतात्वेन पूर्या पूजनीया। तदुक्तम्— 'समा राध्य महेशानीं भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति' इति । अथवा, केदारादिगौरीविशेषमूर्तौ छताभि उपस्थण बन्यपूजोपकरणै पूज्या अस्कृता। शबरी वा वनदुर्गा वेति भाव ॥ ॐ छतापूज्यायै नमः ॥

लयस्थित्युद्भवेश्वरी । वैपरीत्येन विशेषण योज्यम् । उद्भ-वतीत्युद्भव कार्यात्मना अभिन्यक्ति । स्थिति ज्ञानविषय तायोग्यकालावच्छेद अनुभवसत्तावत्त्वभिति यावत् । लय

उत्पन्नकार्यस्य कारणात्मना अवस्थिति वाचारम्भणयोग्यते त्यर्थ । तासा क्रियाणाम् अचेतनकार्यत्वायोगेन घटादिकार्ये चेतनस्य निमित्ततादर्शनात् एकतटस्थेश्वरत्व वा, गोपुरादौ नानाचेतनदर्शनात्तादृशनानेश्वरत्व वेति विशये, 'यतो वा इ मानि भूतानि जायन्ते 'इति श्रुतौ 'यत 'इत्येकवचनपञ्च म्या नानात्वतटस्थत्वे , 'जनिकर्तुं प्रकृति ' इति सूत्रम् । जनि-कर्तुं कार्यस्य प्रकृतिरुपादानमपादानसज्ञा स्थात्। 'अपादाने पञ्चमी ' इति शासनात् अभिन्ननिमित्तोपादनत्वमीश्वरत्वमिति सिद्धान्त । तटस्थलक्षणमेतत्, ज्ञायमानस्य ब्रह्मण लक्षण प्रमाणयो अवर्यवाच्यत्वादित्यभिप्राय । आदौ लयशब्दो पादानेन अनादित्व प्रपश्चस्य सूचितम् । जगत इति शब्द पूरणन नाम योजनीयम् । तथा च जगत लयश्च स्थितिश्च उद्भवश्च तेषामीश्वरी । कूटस्थचैतन्यमात्रसिचदानन्दाधायक तया विवर्तकारणमिल्यर्थ ॥ ॐ लयस्थित्युद्भवेश्वर्ये नमः ॥

लास्यद्रश्नेनसतुष्टा लाभालाभाविवर्जिता । लब्घ्येतराज्ञा लावण्यशालिनी लघुसिद्धिदा ॥

लास्यद्र्शनसतुष्टा । यथा राजा सपूर्णकाम प्रयोजनम

नुद्दिश्यापि मृगयादिळीळाविशेषान् पश्यति बाळकादिनृत्य वा, तथा अज्ञानाम् इष्टानिष्टमिश्रोदासीनपदार्थचनुष्ट्यानु-भवजन्यहर्षशोकादिसभवन्मदोद्रेकशोकातिरेकहेनुकविहिता दिकरणाकरणरूपचरणाद्यङ्गपरिस्पन्दरूपनानाविधप्राणिकाय निकायजन्यलाखदर्शनेन अनुद्दिश्यापि प्रयोजन सनुष्टा त तत्कर्मानुसारेण फलप्रापकेश्वरतया सर्वसमानत्वात्, 'नाद-ते कस्यचित्पाप न चैव सुकृत विसु ' इति भगवद्वचनात्। लास्य दवतादिवारवनितादिभि क्रियमाण तालगीतयुक्त नृत्य तद्दर्शनेन सनुष्टा। तदीयफलप्रदानोन्मुखकुपारसवती तथ्र ॥ ॐ लास्यदर्शनसनुष्टाये नमः॥

लाभालाभविवर्जिता । अप्राप्तप्राप्तिर्लोभ , क्रुतेऽपि यहे तद्प्राप्तिरलाभ , ताभ्या विवर्जिता, पर्याप्तकामत्वेन निल्लत् प्रत्वात्, 'न मे पार्थास्ति कर्तव्य त्रिषु लोकेषु किंचन' इति भगवद्वचनात् ॥ ॐ लाभालाभविवर्जिताये नम ॥

ळक्ष्येतराज्ञा। इतरेषा जीवभ्रान्तिकत्पिताना गुणमूर्या दीनाम् उपासनाविधिक्षपा वा, कर्मविधिक्षपा वा आज्ञा प्रेरणा ळक्ष्या अविषयीकृता यया सा तथा। ग्रुद्धचैतन्यस्य विश्चि ष्टक्रियाचात्मकत्वाभावेन विश्यविषयत्वादिति यावत्। अथ वा, किंकरीत्वाभावेन इतरेषा देवतानाम् आज्ञा प्रेरणा ळक्ष्या उपेक्षणीया यया सा तथा, 'सर्वस्याधिपति सर्वस्येशान ' इति श्रुते । ईश्वरस्य सर्वनियन्तृत्वेन स्वेतरानियम्यत्वादिति ज्ञातन्यम् ॥ ॐ लङ्क्ष्टयेतराज्ञाये नम ॥

लावण्यशालिनी । लावण्य मौन्द्यी परमानन्दस्वरूपतया अतिशयप्रीतिविषयत्व शालत इति तथा । सर्वावयवसाधा-रणसु दरभाववतीति वा ॥ ॐ लावण्यशालिन्यै नमः ॥

लघुसिद्धिदा। लघुना उपायेन सिद्धि वाञ्चितार्थेप्राप्तिं ददातीति तथा, लघुशब्द लक्षणया लघिमासिद्धिपर । तथा च लघिमाद्यष्टेश्वर्थप्रदेति वा। अथवा, लघूना अत्य न्तालपङ्गानभाग्यशरीर रूपचरणवतामप्यतिनिकृष्टाना तिर्य-गादीनामपि सिद्धिं मुक्तियोग्यताहेतुङ्गानादिसाधनसपित्तं तत्कार्थमहिमातिशयोन्नेया ददातीति सा तथा ॥ ॐ लघु-सिद्धिदायै नमः ॥

लाक्षारससवर्णाभा लक्ष्मणाग्रजपूजिता। लभ्येतरा लब्धभक्तिसुलभा लाङ्गलायुधा॥

लाक्षारससवर्णामा । लाक्षारसेन लाक्षाद्रवेण समानो वर्णो यस्या मा तथाभूता शोभा कान्तिर्यस्या सा तथा । अतिपाटलविष्रहप्रभेत्यर्थ ॥ ॐ लाक्षारससवर्णी भाये नम ॥ लक्ष्मणामजपूजिता । अग्रे जायेते इत्यम्रजौ रामभरतौ लक्ष्मणस्यापि ज्येष्ठभूतरामाचारानुकारित्वेन चतुर्भिरपि दा-शरिथिभि पूजितेत्यर्थ । रामस्य शिवलिङ्गप्रतिष्ठाता— इति नामवत्त्वान्यथानुपपत्त्या शिवदपतिपूजकत्वेन तिद्तरेषा तद्व-शस्त्रीपुक्षणणा तित्तद्विरिति ध्वनितोऽर्थ ॥ ॐ लक्ष्मणाग्र-जपूजिताये नम ॥

छभ्येतरा । लभ्यानि लब्धन्यानि कर्मोपासनाविशेषाणा फल्लेन साध्यानि भन्यानीत्यर्थ । तेभ्य इतरा विलक्षणा । 'तत्सत्य स आत्मा' 'नित्यो नित्याना चेतनश्चेतनानामेको बहूना यो विद्धाति कामान् । तमात्मस्थम् 'इति 'यत्साक्षाद परोक्षाद्वय्वा' इत्यादिभि श्रुतिभि आत्मन नित्यप्राप्तस्वरूप त्वेन प्राप्तप्राप्तन्यरूपतया मोक्षरूपत्वेन चतुर्विधिक्रयाफल्ला-भावादिति मन्तन्यम् । अथवा, इत्रराणि धर्मार्थकामरूपत्रि-वर्गरूपाणि फल्लानि लब्धन्यानि प्राप्तन्यानि यस्या सका शादिति सा तथा, उक्तश्रुते ॥ ॐ लभ्येतरायै नम ॥

छन्धभिक्तसुलभा । भक्ति सामान्यविशेषाकारेण द्वि विधा । तत्राद्या आर्तेजिज्ञास्त्रर्थार्थिभि यैर्छन्धा तत्तत्फलो देशेन समयविशेषे विच्छिद्य विच्छिद्य प्राप्ता तेषा सुलभा तत्तत्प्रारम्बानुसारेण फलदानोन्सुखस्वात्मरूपतया सनिहित

त्वात् । द्वितीया भक्तिस्तु ब्रह्मसाक्षात्कारवता पुरुषेण येनैकभ क्तितया लब्धा. 'एकभक्तिविशिष्यते ' इति स्मृते , तस्य स लभा, स्वात्मरूपतया सदा ज्ञायमानत्वात् । 'ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ' इति गीतास् । अथवा, लब्धा प्राप्ता सत्यपि कण्ठ गतचामीकरवत् छन्धभक्तीना सुरुभा सुखनानायासेन कष्टेन विना साध्यतया छाभ प्राप्तिर्यस्या सा तथा, 'भक्खा मामभिजानाति 'इति स्मृते ॥ ॐ लब्धभक्तिसलभायै नमः ॥

ळाङ्गळायुधा । शेषरूपतया हळायुधेत्यर्थ , 'अनन्त श्चारिम नागानाम् ' इति श्रीभगवद्वचनात् ॥ ॐ लाङ्गलाय धायै नमः ॥

## लग्नचामरहस्तश्रीशारदापरिवीजिता । लजापदसमाराध्या लपटा लक्कलेश्वरी ॥

लग्नचामरहस्तश्रीशारदापरिवीजिता । लग्नै करसबद्धौ धतावित्यर्थ, लग्नौ चामरौ ययोस्तौ ताहशौ हस्तौ ययोस्ते श्रीश्च महालक्ष्मी शारदा च ते ताभ्या वीजिता परिवी जिता। अनादिकाळादारभ्य परिचर्यया वीज्यमानेत्यर्थ ॥ 🕉 लग्नचामरहस्तश्रीशारदापरिवीजितायै नमः ॥

ळजापदसमाराध्या। ळजानाम अन्त करणधर्म जुगु प्साहेतु गृहनसाधनम्, उपलक्षण मनोधर्माणाम्, तस्य पदम् आश्रय , 'काम सकल्पा विचिकित्सा श्रद्धाश्रद्धा वृतिरघृ तिर्ह्वीधीर्मीरित्येतत्सर्व मन एव' इति श्रुत । तस्मिन समा राध्या चिन्तनीयेत्यर्थ 'य आत्मिन तिष्ठश्रन्तरो यमयित' 'गुहाहित गह्नरेष्ठ पुराणम्' 'तमात्मस्थ येऽनुपश्यन्ति धीरा ' इत्यादिश्रुतिभ्य । अथवा, लज्जापद जीवचक्रम्, तस्मिन् तद्धिष्ठानानन्दाभिन्यक्तिहेतुत्या बहियांगक्रमेण पू जनीयेत्यर्थ ॥ ॐ लज्जापदसमाराध्याये नमः॥

खपटा। लिमिति पृथ्वीवाचकवीजेन तदुपलक्षित जगह क्ष्यते, पटशब्दन आवारकत्वधर्मवत्त्तया भविद्या लक्ष्यते, लम जगत पट कारणीभूता अविद्या यस्या सा तथा, 'मायिन तु महेश्वरम्' 'य एको जालवान' इति श्रुते। 'अज्ञानेनावृत ज्ञानम्' इति स्मृतेश्च। अथवा, लम्पटो नाम तन्द्री आलस्यम्, कर्मोपासनाबाहुल्येऽपि प्रतिबन्धकभूयस्त्वे शीव्रतया परमेश्वरस्य फलदानोन्मुखताया राजादिविच्चर-विलिम्बतसेवाफलदानवैमुख्ये तद्वत्तोपचारात्, लम्पटो यस्या सा तथा। अथवा, लम्पटादीनामन्त करणधर्माणामध्यास-वश्चेन तद्वविक्षित्रे चैतन्ये सत्त्वरजस्तम कार्याणामुपलब्धे

#### स्तद्वस्य वा ॥ ॐ लपटायै नमः ॥

छकुलेश्वरी । कु पृथिन्युपलिक्षतजगत् लीयते अस्मि त्रिति कुलम्, मायोपाधिकचैतन्यम्, प्रलयाधिष्ठानम् । 'यत्प्रयन्त्यभिमविद्यन्ति' इति श्रुते । लीयमान कुल लकुल निरुपाधिकमित्यर्थ । तच सा ईश्वरी च सा तथा । अथवा, लकुल स्थानविद्येष स्वाधिष्ठान मणिपूरक वा, तस्येश्वरी, विष्णुरुद्रात्मिकेत्यथ , मूतसृष्टिश्रुतौ प्रथिन्या उद्के तस्य तेजिम तस्य परमात्मिन लयश्रवणात् । 'सदायतना सत्प्र तिष्ठा ' इति । तस्येश्वरी विभूतिविद्येषो वा ॥ ॐ लकुले श्वरी नम्। ।।

## लब्धमाना लब्धरसा लब्धसपत्ससुन्नति । हींकारिणीच हींकारी हींमध्या हींदि।खामाणि ॥

लब्धमाना। सर्वे प्राणिभि लब्ध मान अध्यस्ताहका र , आभमानात्मकस्तद्वदृहकार प्रकीर्त्यते दित स्मरणात्। अध्यासेनाहकाराधिष्ठानेत्यथ । अथवा, भान पूजायाम् दिति स्मरणात् यैथे प्राणिभि विद्यैश्वर्यकुल्सोन्द्यातिशयादि वशात् पूजा लभ्यते सुखहेतु सा तदन्तर्यामिणा पूर्वमेव लब्धा, पूजादिजन्योपकारस्य सुखादे स्वस्वरूपतया लब्ध-

त्वात् । यद्वा मान परिमाण अणुमह्दीघह्यसमेदेन प्रसि द्ध । 'म वा एष महानज आत्मा महान प्रभुवें पुरुष ' 'अणोरणीयान् महता महीयान् ' इत्यादिवेदवाक्यैर्जलसूर्या दिवदुपाधिधर्माणामुपहिते गजस्तम्भमत्कुणसर्पादौ प्रतीयमा नत्वात्, छब्ध मान परिमाण उपहिततया जगत यया सा तथा ॥ अ लड्धमानायै नम ॥

लब्धरसा। 'रसो वै स ' इति श्रुते रसवत् रस्यते सबध्यत इति अत्यन्तप्रीतिविषय आनन्द , स स्वस्वरूप त्वन छड्धो यया सा तथा। शृङ्गारम्सो वा, तद्याश्वकम ङ्गलाभरणपुष्पालकारवत्त्वादिति भाव । शुद्धसत्त्वप्रधान-मायोपाधिकतया, 'रस्त्रा स्निग्धा स्थिरा हृद्या आहारा सात्त्रिकप्रिया ' इति गीतावचनात् नैवेद्यादौ कट्वाम्ललव णादीना देवादिविषये निषेधा प्रीतिविषयत्वेन मधुररसो लब्धो ययेति वा तथा ॥ ॐ लब्धरसायै नम ॥

ळब्धसपत्समुत्रति । ळब्धा स्वस्वरूपतया स्वत सि द्धा या सपद सत्यकामत्वादय सिचदानन्दादयो वा ताभि समुन्नति सर्वोत्कृष्टता यस्या सेति तथा। ब्रह्मण मायामात्रापाधिना अभिन्यज्यमाना गुणा कर्मानुद्भूतत्वा

दनाकस्मिका सन्त सर्वोत्कृष्टभाव ब्रह्मण ज्ञापयन्ति। 'तमीश्वराणा परम महेश्वर त देवताना परम च दैवत। पतिं पतीना परम पुरस्ताद्विदाम देव भुवनेशमीड्यम्' 'सत्यकाम सत्यसकरप' 'एष सर्वेश्वर एष सर्वेज्ञ एषो अन्तर्याम्येष योनि सर्वेश्वय' इति 'गतिर्भर्ता प्रमु साक्षी' इत्यादिश्रुतिस्मृतिशतेभ्य 'एष नित्यो महिमा ब्राह्मणस्य' इति प्रसिद्धनित्योत्कर्षवत्त्व ब्रह्मस्वरूपमेवेति नात्र विचारणीय किंचिदस्तीत्यभिप्राय ॥ ॐ लड्यसपत्सम्बन्धै नमः ॥

हींकारिणी। हींकार द्वितीयखण्डसमाप्त्यवयवतया वा च्यवाचकसबन्धन अस्या अस्तीति तथा ॥ ॐ हींका रिण्ये नम ॥

हींकाराद्या। अस हींकारशब्देन तत्कार्यभूता वेदा, तेषामप्यर्थतया कारणतया वा आद्या आदी भवा पूर्वभा वीत्यर्थ । शब्दस्य अर्थविषयत्वेन प्रवृत्ते शक्तिप्रहादौ काव्यादिकृतो च अर्थज्ञानपूर्वकशब्दप्रयोगदर्शनाद्यर्थस्य पूर्व भावित्वमुक्तिति भाव ॥ ॐ हींकाराद्याये नमः ॥

हींमध्या । अस्य बीजस्य जगदिभन्ननिमित्तोपादानभूत मायाविशिष्टचैतन्यवाचकतया तत्प्रतीकत्वेन तन्निष्ठयावद्भुण वस्व तदुपासनातिशयमहिम्नाभिट्यज्यते । अन्यथा मन्त्रपुर श्चर्यासिष्टसिद्धधभावप्रसङ्ग स्यात्। अन्यवहितपूर्वनाम्नान-भिन्यक्तस्वरूपस्यापि शब्दजालस्य एतद्वीजमात्रात्मनैवाङ्क-रितबीजार्थवत्त्वया पूर्वभावित्वमुक्तम् । इदानीमभिन्यका त्मकस्वार्थकत्तया विवर्तवादमाश्रिल्ल वाचारमभणाकारेण ना मरूपद्वयवत्त्वमुच्यते। हींकारबीजार्थ तेन शब्देन लक्ष्यते। मध्ये व्यवहारकाले हीं यस्या सा तथा। घटादिषु वस्तुषु सिचदानन्दप्रतीला व्यवहारकालेऽपि प्रपश्चकारण ब्रह्मानु-स्यूतत्वया भासमान जगत्कारणमिति सिद्धान्त । अनेनाचे-तनपरिणामारम्भादिवादा निष्प्रमाणत्या युक्लाद्याभासक स्वेन निरस्ता वेदितव्या ॥ ॐ हींमध्याये नम् ॥

हीशिखामणि । लाके यथा चूडामणि सर्वाङ्गरचिता
भरणापश्चया तद्विजातीयप्रकाशसत्ताद्याश्रयवान् उत्तमाङ्गस्थानविशेषे स्थापित महदैश्वयोदि तद्वत पुरुषस्य ज्ञाप
यति, तथा सर्वशब्दजालतद्वाच्यार्थभूतचिज्ञडसवन्धरूपप्रपञ्चवाचकातिसूक्ष्मश्चीवर्णात्मकश्चीविद्याराजबीजस्य सत्य
ज्ञानानन्दात्मकलक्ष्यार्थभूता सती हींबीजजापकाना सर्वार्थ
प्रदानेन पारमैश्वर्य व्यश्वयतीति गुणयोगकृतनामेदम् ।
तथा च हीम शिखामणि परमतात्पर्येण ज्ञापयतीत्यर्थ ॥
ॐ हींशिखामणये नमः॥

## ह्रींकारकुण्डाग्निशिखा हींकारशशिचन्द्रिका। ह्रींकारभास्करश्चिहींकाराम्भोदचश्रला॥

हींकारकुण्डाग्निशिखा। हींकार एव कुण्ड वाच्यवाच कसबन्धेन परब्रह्मावच्छेदकतया आहवनीयादिसदृशम्, त स्याग्निशिखा, 'उद्दीप्तेऽग्नी जुहोति'— इति प्रमाणेन 'आ हवनीये जुहोति'— इति विधिवाक्यावगतहोमाधारताया केवछाहवनीयस्यायोग्यतया साग्निज्वाळखा होमाधारताया ब्रायमानायामदृष्टद्वारा स्वर्गसवन्धेन स्वार्थकतया तज्ज्ञा पक्षवेदवाक्यस्यापि पुरुषार्थसबन्धित्वमाह्वनीयनिष्ठहोमा धिकरणदीप्ताग्निज्वाळास्वाधारभूतकुण्डसार्थक्यसपादकेवाभा ति। तथा स्ववाचकबीजस्यापि 'मन्त्रेहपासीत' इति वि धिगतदेवतोपामनकरणाना मन्त्राणामिष स्ववाचकतया सा र्थक्यसपादनात्तथोच्यते ॥ ॐ हींकारकुण्डाग्निशिखायै नम् ॥

ह्रीकारशिवन्द्रिका। ह्रींकार एव शशी चन्द्र तस्य स्वरूपाभेदभूतप्रकाशचैतन्य चन्द्रिकापदेनोपमीयते। यथा चन्द्रस्वरूपभूतामृतप्रसारभूता ज्योत्स्ना देवादिसर्वछोकाना सजीवकतयोपकरोति, तथा दृढतरभक्तिपरवशपुक्षधौरेया दीना ह्रीकारवाच्यार्थतया तद्भिम्नत्वेऽपि जगद्विवर्तकारण तया सिचदानन्दाधायकत्वेन सजीवयतीति भाव ॥ ॐ हींकारश्रशिचन्द्रिकायै नम ॥

हींकारभास्कररुचि । भास कान्ती करोति प्रसारयति ळाकोपकारायेति तथा सूर्यं, तस्य रुचि प्रचण्डभातु । यथा लाके सूर्य वर्षाम्वतिगाढतरस्रवदुदकधारासव्याप्तदि गन्तरासु दिवा विद्यमानोऽपि सूर्य साक्षाद्यमिति चाक्षुष ज्ञानगाचरो न भवति, तदभावे शिष्टाना भेजनादिसजीव कव्यवहाराभावन तदुपायासिद्धयाप्रसन्नमनासि भवन्ति, तथा ज्ञानमार्गानधिकारिणा मोक्षमार्गीपायभूताविदितदेवता रूपहींकाराणा जनाना बहुतरपुण्यमहिन्ना महावातनेव मेघा वर्छै। दूरीकृताया चण्डभानुरिव सुखसाधन गुरुकृपापाङ्गाव लोकनरूपदीक्षावद्येन प्रतिबन्धकदुरितापगमे परदेवतारूप ह्रींकार पुरश्चर्यया साक्षाद्वाच्यार्थापरोक्षज्ञानहेतुर्भवति । चिरकाळनैरन्तर्यभावनाप्रकर्षेण तस्मिन्नभिमुखे मति तञ्ज क्ष्यार्थरूपपरमानन्दचित्कला खयमेवाभिव्यक्ता सत्यानन्दा नुभवामृतेन सुखयतीति तथोच्यते ॥ ॐ हींकारभास्कर रुचये नमः ॥

हींकाराम्भोव्च खा । अम्मासि अमृतानि द्दतीस

स्भादा , ह्वीं कारोऽपि कामवर्षत्वन तैरुपमीयत । तेषु चश्च ला विशुक्तता विद्यमाना तद्भिन्नप्रकाशमाना सती वर्षोद् कहारा सस्याद्यत्पादकत्व यथा व्यवन्ति तथा ह्यिंकारवाच्य तथा तद्भिन्नापि तत्स्वरूपविचारणाया शुद्धलक्ष्यार्थस्वरूपा सत्यपि अनिर्वचनीयस्ववाचकमन्त्रप्रकाशितदेवतात्वेन स्वा भीष्टपुरुषार्थप्राप्तिहेतुभूतेल्यभिस्थि ॥ ॐ ह्रींकारास्भोद चश्चलाये नम ॥

## हींकारकन्दाङ्करिका हींकारैकपरायणा। हींकारदीर्घिकाहसी हींकारोद्यानकेकिनी॥

ह्रींकारकन्दाङ्क्रितिका । ह्रींकार एव कन्दम् दढतरबीज
भाव तस्य अङ्कुरिका आदिप्रसव नृतनाभिन्यक्तिरिखर्थ ।
यथा छोके अङ्कुरादिक कन्दादिनिष्ठोत्पादकशक्तिमनभिभू
यैव स्वय स्कन्धशाखापत्रपृष्पफछाद्यात्मना यथा विवर्तमान तत्सामर्थ्यप्रकटनकारण भवति, तथा ह्रींकारम्य वेदैकदेशत्वेन इतरप्रमाणानपेक्षतया स्ववाच्यार्थज्ञापनन स्वत प्रा
माण्ये स्थितऽपि तज्जन्यज्ञानविषयतावच्छेदकधमरूपनाना
प्रकारजगत्परिणामहेतुत्वसाधकाघिटतघटनापटीयसीमायोपाधिकत्वेन तदर्थद्वयरूपा सती तन्मात्रप्रमाणवेद्येद्यर्थ ॥ ॐ

## हींकारकन्दाङ्करिकाये नम ॥

हींकारैकपरायणा । हींकार एव एक अनितरसाधारण चतुर्विधपुरुषार्थसाधकतया परम् अयन ज्ञापक प्रमाण यस्या सा तथा। अस्य बीजस्य वाच्यार्थो माया, सा निर-धिष्ठाना न सिध्यतीति तदाश्रयत्वविषयत्वाभ्या तद्रहित तेन ज्ञाप्यत इति भाव ॥ ॐ हींकारैकपरायणायै नम ॥

हींकारदीर्घिकाह्सी । हींकार एव दीर्घिका राजोद्यान वनकी हावापी । ससारकाननसचारिलोकविश्रान्तिकारण त्वेन हींकार तयोपमीयते, 'आराममस्य पश्यन्ति न त पश्यित कश्चन' इति श्रुते । आ समन्ताद्रमत्यस्मिन इत्या राम अथवा जगत् । तश्रोपासनादिना परमानन्दप्रापक-तया वा हींकार उपमीयते । तस्मिन हसी स्त्रीहस । यथा लोके सारासारविवेकिहस्या आधारसुवर्णकमलादिमती वापि का महाराजसबन्धिनी विकाप्यते, तद्वद्वान्यार्थेक्ष्पतया प्रका श्माना सती स्वसबन्धिनीजस्य सुखोत्पादकत्वमोक्षहेतुत्व योतयतीत्यभिप्राय ॥ ॐ हींकारदीर्घिकाहस्यै नम ॥

हींकाराद्यानकेकिनी। हींकार एव उद्यानवत् फलानुभा वकत्वात् तथोच्यते तस्य केकिनी मयूरी। यथा लोके बहुषु पश्चिषु आरण्यकेषु सत्स्विप तस्या रूपध्वनिभ्या सुखतया दर्शनश्रवणादिजन्यप्रमोदसाधकतया उद्यानास्ठक रिष्णुत्वम्, तथा ह्रींकाररूपदेवताध्वने सिंबदानन्दरूपत द्वाच्यार्थस्य च परमपुरुषार्थसाधकत्वेन अविशिष्ठत्वेऽपि ब्र द्वाविष्णुरुद्रादिमूर्तिषु उद्यानतरुविस्ठकक्ष्रगुरुमादिवदुत्तमनीच देवतिर्थकमनुष्यादिषु च मयूरीव स्वेच्छया सर्वव्यापकत्वेन तदात्मरूपतया शरीरन्द्रियप्राणाद्याधारपरमप्रमासपदपरमा नन्दरूपप्रस्थाचराइवृत्तिव्याप्यतयैतद्वीजप्रकाश्या भवती त्यर्थ ॥ ॐ ह्रींकारोद्यानकेकिन्यै नमः॥

## हींकारारण्यहरिणी हींकारावालवस्तरी। हींकारपञ्जरद्युकी हींकाराङ्गणदीपिका॥

हींकारारण्यहरिणी । हीकारवान्यार्थैकदेशभूतमायावि द्यातत्कार्याणा बन्धक्षपतया गहने व्याघादीनामिव भयहे तूना सद्भावेन दुष्प्रवेशत्वरूपधर्मसान्येन हींकारस्य अरण्यो पमितत्वम् । तथा च अरण्यमिव हींकार इति सर्वत्रोपमा नोत्तरपदसमास । तत्रैव सति यथारण्यगतपुरुषस्य शीघ्र दृष्टिपथ गता हरिणी एणी व्याघाद्यभावनिश्चयेन तद्धिगम फलप्राप्तिसाधनतामवगमयति धीरपुरुषस्य, तथा निरन्तरम क्तिभजनपरप्राणिलोकख उपासनापरिपाकमहिम्रा अपरोक्षी-कृताज्ञाननिवृत्तिपूर्वक भयापकरणेनानन्द प्रापयतीति तयो पमितेति भाव । 'तमेव विदित्वातिमृत्युमेति ' इति श्रुत ॥ ॐ हींकारारण्यहरिण्यै नम ॥

हींकारावाळवळ्ळरी । हींकारमन्त्रवाचकतानिक्रिपतवा च्यतानामकसबन्धाविच्छन्नपरदेवतास्वक्रपत्वन तदुपासना विषयफळदानसमर्था सती आवाळमात्रप्ररोहद्विशृद्धवळ्ळ्यों पमीयते। तथा च तत्सबन्धितया हींकार जपादिना आ वाळ इव सर्वदा सरक्षणीय इति तात्पर्यार्थ परिनिष्पन्न इति यावत्।। ॐ हींकारावाळवळ्ये नम ।।

ह्रींकारपश्चरशुकी । सन्दाधिकारिणामण्युपासनाकारण साधारणपार्वतीप्रतीकतया ह्रींकारस्य बालकादिलालनाविषय त्वधमेपुरस्कारण पश्चरोपमा । तथा च तत्रत्यशुकीव सला पादिना मनुष्यादिचित्तरश्चिनी । एव तत्तदृष्टशनुसारेण फ-लदात्री सती तयोपमितेति दृष्टन्यम् । ह्रीकार पश्चरमिव ास्य शुकी तत्सार्थक्यकारिणीत्यभित्राय ॥ ॐ ह्रींकारप इत्रशुक्ये नमः ॥

ह्रींकाराङ्गणदीपिका । अङ्गणवत् सर्वसाधारणविश्रान्ति स्थानतया हींकारस्य तदुपमा तस्य दीपिका । यथाङ्गणारो

पितदीप बाह्याभ्यन्तरवस्तुजात प्रकाशयन तत्रखलोकाना मन्धकारादिनिवर्तनपूर्वकमभीष्टव्यवहारहेतुत्या सर्वोन् श्रा घयति स्वयमपि ते सरक्ष्यते, तथा ह्रींकारबीजार्थश्रवणम नननिदिध्यासनिरन्तराभ्यासादपरोक्षीकृतस्वयप्रकाशानन्द रूपा सती स्वसेवकान् सर्वोत्कर्षयतीति तदुपमिता सती तथोच्यते ॥ ॐ हीकाराङ्गणदीपिकायै नम ॥

# ह्रींकारकन्दरासिही ह्रींकाराम्भोजभृद्भिका। ह्रींकारसम्भोमाध्वी ह्रींकारतक्मश्ररी।।

ह्रींकारकन्दरासिंही। पर्वतिशिखाप्रवर्तिगुहा कन्दरा द-रीत्यर्थ । वेदमीछिपठितद्दींकारस्य प्राम्यविषयछिप्सुप्राणि प्रवेशयोग्यताविकछतया कन्दरापमा। तत्र यथा सिंही स्वेतरश्चद्रमृगप्रवेशभयहेतुसटादिस्वव्याप्यचिह्नानुमिता तस्या स्वाअयमावता धीरस्य तत्परिसरनखनिर्धातसुक्ताफछादि प्राप्तिं च नयति, तथा मन्दभक्तितन्द्रीनुसुक्षादिकछुषित-परिच्छिन्नाभिमानदेवतान्तरप्रतिपादकबीजतया स्वदेवतैक भाव कामितार्थे च प्रापयतीति सिंह्युपमिता सती तथो च्यते ॥ ॐ हींकारकन्दरासिंह्ये नम ॥

ह्यिंाराम्भोजमृङ्गिका। ह्यिंकारस्य अष्टैश्वर्यात्मकपुरुषा

र्थसाधकनानाशिकमत्तया नानाप्रकारवर्णान्तरघटितत्वेन परागपरिमछादिमत्कमछोपिमतत्विमिति याजनीयम् । कमछे
यथा मधुमात्रसारमाहिणी भृङ्गी रमते सर्वपुष्परसमधुपानखामान्येन सर्वसमापि मध्वाधिक्यविविदिषया प्रभूतम
धुवत्त्वेन च तिसम्नेव विशिष्यासिक्तमती, तथा सर्वमन्त्र
बीजवाङ्यदेवतात्मना सर्वानुगतापि हीकारस्य विशिष्टगुण
वत्त्वेन सर्वीपादानसगुणब्रह्मप्रतिपादकतया तदीयस्वरूपत
टस्थछक्षणवत्त्वेन तदिभन्नस्वरूपतया सर्वशब्दजाछप्रकृतित्वेन च रूढ्या छक्षणया वा तत्सबन्धिनी सती तदुपास
काना तदिधिष्ठानतया च तैलक्ष्यत इति भृद्ग्युपमया व
णितेति तात्पर्यम् ॥ ॐ हीकारामभोजभृद्धिकाये नम् ॥

हींकारसुमनोमाध्वी । हींकारस्य वाञ्छितफळप्रदानसा-धकतया सुमन सादृश्यम् । अथवा, पुष्पाणि व्यवहारसमये बहुसावधानतया व्यवहर्तव्यानि परममार्द्वाधिकरणत्वेन बहु मान्यत्वात्, तथा हींकारोऽप्युपासनवेळाया परब्रह्मवाचकत्वेन प्रयत्नपूर्वकमेकाप्रमनसा देवताभिन्नत्वेन ध्यातव्य इति निय मसपादनार्थे पुष्पोपममिति विभावनीयम् । तथा च वा-य्वादिना शुष्काणि पुष्पाणि निर्मधुत्वेन फळान्यजनयित्वा परिपतन्ति फळजनकशक्तेरभावेन, तदितराणि तु तद्वस्वेन तज्जनकानि छोके दृष्टानि, पुष्परसम्च पृथिवीकारणभूतादक तन्मात्रस्वरूपमधुररसात्मकत्वात् पुष्पाणा फळजनकशक्तिज्ञा पको भवति, तथा ह्रींकारस्यापि सर्वजनकताशक्याधायकत दिधिष्ठानसिचदानन्दपरब्रह्मस्वरूपा सती तन्मन्त्रप्राप्त्या यथोक्तफळहेतुतया तदर्थरूपेण तद्वृत्तिर्भवतीति माध्वीसमानधर्मवत्त्वमस्या उपपद्यत इति विवेचनीयमिति यावत् ॥ ॐ हींकारसुमनोमाभ्व्ये नम् ॥

ह्रींकारतरुमकारी। फछार्थिन स्वाह्रहजनान् पतनादि
भय प्रतिबन्धकेभ्यस्तारयित पार प्रापयित फछछामेन स
तोषयतीति तरु । ह्रींकारख कल्पादितरुद्देष्टान्तीकृत ।
प्रेक्षावता सवादिप्रवृत्तिजनकत्वेन शाखोपशाखाग्रगता पुष्प
मक्तरी फछकारणयोग्यता ज्ञापयतीव पुरुषार्थार्थिना अस
शयप्रवर्तकत्वेन प्रत्यक्खक्ष्पा सती गुरूपदिष्टमन्त्रदेवतातम
कतया मन्त्रोपासनायामभिमुखीकरणेन पुरुषार्थान् प्राप
यतीति मक्तरीसादृत्य प्राप्त परदेवताया इति विवेचनी
यम् ॥ ॐ ह्रींकारतरुमुख्यें नम ॥

सकाराख्या ममरसा सकलागमसस्तुता। सववेदान्ततात्पर्यभूमि. सद्सदाश्रया।। सकाराख्या । सकारयुका श्रीविद्यानाभिका आख्या वाचकशब्द यस्या सा तथा।। अ सकाराख्याये नम ॥

समरसा। सम एक रस मधुरादिरसवद्गुडिपिण्डादा वेकरूपेण कार्ये व्यवस्थितेत्यर्थ। अथवा, ससारदशाया सर्वज्ञत्विकंचिज्ज्ञत्वादिविशेषणभेदेन भिन्नरसवत् भिन्नस्वभा ववत् प्रतीयमानयोरिश्वरजीवयोर्वेदान्तश्रवणादिना जन्या-खण्डाकारवृत्तिव्याप्या अह ब्रह्मास्मि— इत्यभेदानुभवद्शा-यामेकरूपतया साक्षात्कियते इति सा तथोन्यते, 'रसो वै स 'इति श्रुते, रसशब्दार्थ परब्रह्म सम अभिन्न यस्या सा तथा। तैत्तिरीयोपनिषत्प्रतिपाद्यत्यर्थ ॥ ॐ समरसायै नम ॥

सकलागमसस्तुता। आ समन्तात् गमयन्तीति आगमा ,
सकलपदार्थगोचरसविकल्पकप्रमाजनकवेदा इत्यर्थ । सकलै
रन्यूनानितरेकेणेतिहासपुराणसिहतयावदङ्गोपाङ्गरहस्यादियो
गित्व सकलक्ष्वदार्थ । तै सस्तुता सम्यक् नात पर किषि
दस्तीति निश्चयपूर्वक स्तुता गुणिनिष्ठगुणाभिधानविषयतया
तदुपजीवकेत्यर्थ । सर्वार्थप्रकाशकवेदाना सर्वक्षत्वेनैदपर्येण
तदीयस्तुतिविषयतया शुद्धचैतन्यात्मकत्या मोक्षकारणीभू
तज्ञानस्वरूपत्वेन जिज्ञास्येति ध्वनितोऽर्थ ॥ ॐ सकला
गमसस्तुतायै नम ॥

सर्ववेदान्ततात्पर्यभूमि । वेदानामन्त अवसान तत्त्वम स्यादिमहावाक्यानि, तेषा तात्पर्यं समन्वय सामानाधिक रण्यमित्यर्थ । तस्य भूमि विषय ज्ञाप्यमिति यावत् । 'उपक्रमापसहारावभ्यासाऽपूर्वता फलम् । अर्थवादोपपत्ती च लिक तात्पर्यनिर्णये 'इति वचनोक्ततात्पर्यनिर्णायकप्रमा णबलेनातीन्द्रियधर्मादिगोचरवाक्यवत् सर्वेषा वेदान्ता नामुपासनाज्ञानविधि विनाकर्मशेषतया अज्ञातज्ञापकत्वेन शसनादेव शास्त्रशब्दवाच्यानामद्वैते ब्रह्मणि गतिसामान्येन कर्मोपासनाकाण्डद्वयार्थोपकार्यत्वेन मोक्षहेतुज्ञानजनकत्वेन पर्यवसानिमिति तात्पर्यविषयता अखण्डचैतन्यस्येति सि द्धान्तार्थ इत्यभिसिध । 'सामानाधिकरण्य च विशेषण विशेष्यता । छक्ष्यलक्षणभावश्च पदार्थप्रसगात्मनाम् ' इति न्यायेन सबन्धत्रयेण अखण्डार्थ वेदान्ता बोधयन्तीति 'तत्तु समन्वयात्' इत्यधिकरणे प्रतिष्ठापितमित्रस्त्रमतिवि स्तरेण ॥ ॐ सर्ववेदान्ततात्पर्यभूमये नम. ॥

सदसदाश्रया । अपरोक्षतया सिन्निति प्रतीतिविषयतया व्यविह्यमाण सत्कार्ये रूपादिवत्तया व्यावहारिकसत्ताश्रय पृथिव्यप्तेजोभूतत्रय सिद्देश्यच्यते । असत् सिद्धन्नतया परो श्रज्ञानगोचर वाय्वाकाञ्चादि तत्कार्यं च रूपादिभिन्नगुणाश्र यमुच्यत इत्यर्थ । तयोराश्रया उपादानत्वेन तद्धिष्ठानभूते त्यर्थ । आरोपितस्याधिष्ठानमत्तातिरिक्तसत्ताशून्यतया सत्ता स्फूर्तिप्रदत्वेन सर्वदा तद्तुस्यूतेति ध्येयम् ॥ ॐ सदसदा श्रयायै नम् ॥

## सकला सचिदानन्दा साध्या सद्गतिदायिनी। सनकादिमुनिध्येया सदाशिवकुदुम्बिनी॥

सकला । आरोपितकलाभि उपासनार्थं किल्पताभि जाबालिना सत्यकाम प्रत्युक्तवोडशकलायुक्तपुरुषोपासनप्रति पादकच्छान्दोग्यवचनरीत्या कलाशब्दितावयने सह वर्तते इति सा तथा । चतु षष्टिचन्द्रकलाभ्या वा सहिता । अथवा, कलाशब्द सुलादिकान्तिवचन तथा सहितिति वा ॥ ॐ सकलाये नमः ॥

सिषदानन्दा। सचासौ चिष सिष्यत् सिष्यासौ आन-न्द्य, कालत्रयाबाध्यत्व सत्त्वम्, स्वेतरप्रकाशाप्रकाश्यत्व चित्त्वम्, परमप्रेमास्पद्त्वमानन्द्त्वम्, 'सत्य ज्ञानमनन्तम्' 'विज्ञानमानन्दम्' 'सदेव सोम्येद्मम् आसीत्' 'प्रज्ञा प्रतिष्ठा प्रज्ञान ब्रह्म' 'आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्' 'आ नन्द ब्रह्मणो विद्वास विभेति कुतश्चन' इत्यादिश्रुतिभ्य । ते स्वरूप यस्या सा तथोका । वेदान्तशास्त्रोक्तब्रह्मस्वरूप स्क्षणस्त्रितेत्वर्थ ॥ ॐ सचिदानन्दाये नमः ॥

साध्या । कर्मोपासनादिभि महावाक्यश्रवणजन्यब्रह्म विद्यात्वेन साधनचतुष्ट्रयसपन्नाधिकारिणा अपरोक्षतया साधितु प्राप्नुमहा, फल्लस्वरूपत्वादित्यर्थ । साध्वीति वा पाठ साधो स्त्री, सत्त्वगुणसपन्नत्वात् साधु , सकल्ल-विद्यापारगत्वे सति सदाचारसपन्न दैवीसपत्तिमानित्य थ । तदेकनिष्ठा परमपतिन्नता सती स्त्रीणा पातिन्नत्यसप्रदा यप्रवर्तकेति यावत् ॥ ॐ साध्यापै नमः ॥

सद्गतिदायिनी । समीचीना पुनरावृत्तिरिह्ता सुखमात्र क्ष्पा गित , गम्यते ज्ञायते प्राप्यते इति वा गित । यत् ज्ञायते तदेव गित , तदन्यस्याज्ञातत्वात् गितित्वानुपपते । ज्ञाते फल्ले इच्लया तत्साधनेषु पुरुष प्रवर्तते , न त्व ज्ञातफल्लसाधने— इत्यन्वयच्यतिरेकाभ्याम् , 'ब्रह्मविदाप्राति परम' 'ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति' 'ये पूर्व देवा ऋषयश्च तिद्वेदु ते तन्मया अमृता वे बभूवु ' इत्यादिश्रुत्या च परदेवतास्वरूपमेव मुक्तिस्वरूपतया सद्गति । तदावार-काज्ञानाभिभवेन स्वरूपानन्दमभिन्यक्वयतीति दायिनी । अभेदेऽपि गितदानयो कर्मकर्तृप्रयाग उपपद्यते। 'तदा

त्मान इस्वयमकुकत वस्ताति विद्या । सती वा सन्तगु णयुक्ता देवयानादिगति वा ददातीति सा तथा ।। ॐ सद्ग तिदायिन्य नम ॥

सनकादिमुनिध्येया। मननशिला मुनय, मननशब्दन छक्षणया तत्साक्षात्कारवन्त इत्यथ , ब्रह्मण मानसिकपुत्रा क्वानवैराग्यादिबहुला मोक्षमागप्रवर्तका , सनक आदि येषा त मुनय सनन्दनसनातनसनत्कुमारप्रमुखा निरैषणा निश्चिन्ता , तैर्ध्येया अत्यादरेण स्वात्माभदक्कानन स र्वदा विषयीकृतेत्यर्थ , 'त्व वा अहमस्मि भगवो देवत अह वै त्वमसि' 'क्षत्रक्क चापि मा विद्धि ' 'आत्मान चेद्धि जानीयादहमस्मीति पूरुष ' 'अथ योऽन्या देवतामुपास्त ऽन्याऽसावन्याऽहमस्मीति न स वद यथा पशु ' 'मृत्यो स मृत्युमाप्राति य इह नानेव पश्चित ' इत्यादिश्रतिस्मृति श्वतेश्य ।। ॐ सनकादिम्रनिध्यायै नम ।।

सदाशिवकुदुम्बिनी। सदाशिव कुदुम्बम् अस्या अस्तीति तथा॥ अ सदाशिवकुदुम्बिन्ये नम् ॥

सकलाधिष्ठानरूपा सत्यरूपा समाकृति.। सर्वप्रश्वनिमीत्री समानाधिकवर्जिता॥ सकलाधिष्ठानक्तपा। 'अथात आदेशो नेति नेति' 'नेह नानास्ति किंचन' इत्यादिनिषेधश्रुतिभ्य प्रतिपन्ना। 'सर्व खस्विद ब्रह्म' इत्यादिवाधाया सामानाधिकरण्य मवगम्यते। कार्यम्य कारणाभेदङ्गान बाधा। तद्भिन्नता ज्ञानस्य श्रमक्तपत्वात्। तथा च श्रुतिनिषेधस्यावध्यपेक्षाया प्रकृत्यादीनामपि तत्त्वज्ञानेन निवृत्तौ भूतपूर्वगत्या सर्वाधि ष्ठानत्वेन अनुभूयते इति भाव।। अ सकलाधिष्ठान-रूपायै नम्।।

सत्यक्तपा। सत्य जडानृतपरिन्छिन्नव्यावृत्तत्व सिंदान-न्दक्तप यस्या सा तथा। परिणामवादमाश्रित्य सत् अपरोक्ष-ज्ञानयोग्यानि पृथिव्यप्तेजासि, त्यतु परोक्षज्ञानविषया नि त्यानुमेया इत्यर्थ , 'सद्य त्यक्षाभवत्' इति श्रुते । सत्य कृष यस्या सा तथा।। ॐ सत्यक्तपाये नमः।।

समाकृति । समा अभिन्ना सिन्नदानन्द्रूपैकरसा आ कृति मूर्ति स्वरूप यस्या सा तथोक्ता । समा अन्यूना नितिरक्ता यथाशास्त्रप्रमाण मूर्तिर्विष्ठहो यस्या सेति वा । समा सदाशिवेन गुणसौन्द्येवलवीर्ययशोगाम्भीर्यधैर्येक्नि-तादिपरिज्ञानसर्वज्ञत्वादिबहुल्धर्मविशेषै मूर्तिर्यस्या सेति वा । चतुर्विधमृत्रशमेषु तक्तत्रारब्धानुसारेण समा तत्र तत्र निवासयाग्या मूर्तिर्यस्या मित वा । कर्माध्यक्ष तया तत्तःफलिवशेषदानेषु समा पक्षपातरिहता मूर्तिर्यस्या सा । समा बाल्यस्थिविरत्वादिभाविकारवर्जिता एक प्रकारा निल्ययोवनशालिनी मूर्तिर्यस्या सा । 'सम सर्वेषु भूतेषु मद्गक्तिं लभते पराम' अङ्गुष्टमात्र पुरुषोऽन्तरात्मा सदा जनाना हृदये मिनिविष्ट ' इति स्मृतिश्रुतिभ्यामे-करूपत्वावगमादिल्यागय ॥ ॐ समाकृतये नम ॥

सर्वप्रपश्चिमिनेति । ससारस्यानादितया माक्षस्थायित्वन च भूतभविष्यद्वर्तमानगत्मा सर्वशब्दवान्यत्व प्रपश्चम्य , प्रप बच्चते विस्तार्यते विवर्तत इति प्रपश्च , 'एक बीज बहुधा य करोति दिति श्रुते । तस्य निर्माली निर्माणमभिव्यक्ति तिश्रमित्ततया तत्तत्कर्तृत्वसुपचर्यते, द्वदत्त पचतीतिवत् ॥ सर्वप्रश्चिमिनेत्ये नम् ॥

समानाधिकवर्जिता । कुलशिलजातिगुणादिभि तुस्य समान , ते श्रेयानधिक , तेर्वर्जिता । 'न तस्य प्रति-मास्ति' 'विश्वाधिको रुद्रो महार्षि ' इति श्रुते , 'सर्वाधि पत्य कुरुते महात्मा' इति 'एकभेवाद्वितीयम् ' 'न त्वत्स मोऽस्यभ्यधिक कुतोऽन्यो लोकत्रये ' इत्यादिश्रुतिस्मृति-भ्या चेति भाव । एतदृष्ट्या समाननीय समान पूजनी योऽधिक तहूरोन वर्जिता। 'एकमेवाद्वितीय वहा ' इत्यादि-श्रुतेरिति वार्थ ॥ ॐ समानाधिकवर्जितायै नमः॥

## सर्वोत्तुङ्गा सगहीना सगुणा सकलेश्वरी। ककारिणी काव्यलोला कामेश्वरमनोहरा॥

सर्वोत्तुङ्गा । कार्यापेक्षया कारणस्याधिकत्वात् सर्वा पेक्षया उत्तुङ्गा उन्नता, 'पादोऽस्य विश्वा भूतानि । त्रिपा दस्यामृत दिवि ' इति श्रुते ॥ ॐ सर्वोत्तुङ्गाये नमः ॥

सगहीना। निरवयवत्वेन निष्कारणत्वन वा निर्गुणत्वेन वा निराश्रयत्वेन वा नित्यग्रुद्धबुद्धमुक्तस्वरूपत्वेन सबन्धर हिता वा, 'असगो न हि सज्जते' 'न चास्य कश्चिज्ञानिता न चाधिप' इत्यादिश्रतेरित्याशय ॥ ॐ सगहीनायै नम ॥

सगुणा। समा एकप्रकारा गुणा सत्यकामत्वादय य स्या सा तथा। 'गुणी सर्वविद्य ' 'सत्यकाम सत्यसक-ल्प ' इत्यादिश्रुते । विम्यूर्तिस्वरूपतया सत्त्वरजस्तमोगुणै सह वर्तते इति वा तथा॥ ॐ सगुणायै नमः॥

सकलेष्टदा । इच्छाविषयभूतानि इष्टानि काम्यानीत्य-र्थ , सकलानि च तानीत्यभेदसमास , अन्यथा जीवादि- वत किसाश्चिद्विषये असामर्थशङ्का स्यात् । एकस्य पदार्थस्य बहुनामिच्छाविषयत्वदर्शनात्, एकत्र कामनायामि तत्स-इभावित्वेन सर्वप्रापकत्वोक्तौ परदेवताया बहुफळप्रदातृत्वेन अत्यन्तविश्वसनीयतया अतिशयप्रतिभानाश्चेत्यर्थे । अथवा. परिच्छिन्नपरिमितभाग्यवत्प्राणिन सर्वस्य सर्वत्र इच्छाया मपि, यानि सर्वाणि खबुद्धया शास्त्राविरोधेनेष्टानि एषित-व्यानि वाञ्छितव्यानि, तान्येव प्रयच्छति ददाति, न तद धिकानि, छोकेच्छाया बहुप्रकारत्वेन दुष्पूरणीयत्वादिति भाव । सर्वेषा प्राणिनामिष्टचा इज्यया पूज्या विषयीकृता, यक्षेन वा समाराधिता तम्य फलप्रदेत्यर्थ । 'अह च स वियक्षाना भोका च प्रभुरेव च ' ' एष हाव साधु कर्म का रयति यमेभ्यो लोकेभ्य चन्निनीषति ' इति स्मृतिश्रतिभ्या परमेश्वरार्पणबुद्धधा क्रियमाणस्यैव कर्मण श्रमफळत्वात् मुक्तिहेतुत्वेन, काम्यफलार्थिना जन्ममरणादिबन्धकत्वेन स्व-रुपफळतया अनादरणीयत्वादित्यर्थ । अथवा, कळाभि अ-वयवै तरतमभावैरित्यर्थ । ते सहितानि इष्ट्रानि फ-लानि मनुष्यानन्दादिब्रह्मानन्दपर्यन्तानि फलानि आनन्द स्वरूपाणि ददातीति तथा ॥ ॐ सक्लेष्ट्रदाये नम ॥

ककारिणी । तृतीयखण्डद्वितीयवर्णस्प ककारावयव

#### वाचक अस्या अस्तीति तथा । अ ककारिण्ये नमः ।।

कान्यलोला। वाल्मीकिवेदन्यासादिकृतेषु कान्येषु लो ला, वान्यलक्ष्यार्थभेदेन तम्न सबद्धेत्यर्थ। अथवा, कवि भि कृतेषु स्तुतिविशेषेषु प्रीतिमतीत्यर्थ।। ॐ कान्यलो लाये नमः!।

कामश्वरमनोहरा। कामेश्वरस्य मन हरतीति तथा। अ कामेश्वरमनोहरायै नम ॥

## कामेश्वरप्राणनाडी कामेशोत्सद्भवासिनी। कामेश्वरालिद्भिताङ्गी कामेश्वरसुखप्रदा॥

कामेश्वरप्राणनाडी । कामेश्वरस्य प्राणनाडी यथा नाड्या प्राण सचरति सा तथा, जीवनाडीत्यर्थ । 'इडया तु बहि र्याति ' इति लयखण्डवचनात् । लोके विश्वम्यमाने पशौ हृद्य पुण्डरीकाकार मासखण्डात्मकान्त सुषिराष्ट्रदलोपेतमङ्कुष्ठप रिमाणसुषिरयुताधाभागकणिकामध्य नश्चते, तद्या कणिका या कसरायमाना एकशत नाडीनामङ्करा तद्वेष्टनपुरीतमाम कनाडीसुषिरविन्यस्तमूला भवन्ति । तत्र सुषुम्नानामकनाडी मूलाधारादारभ्य ब्रह्मर प्रपर्यन्त गता । तस्या षट् चक्राणि मूलाधारादीनि तत्तन्मातृकावर्णसन्तियोगशास्त्रोक्तदलसयु

तानि सनद्धानि वर्तन्त। तस्या मूळ पृश्वीदेवता विसतन्तुत नीयसी कुण्डलिन्यधोमुखावरणशक्तिनिद्राति । तस्या दक्षि-णभागे इलानामनाडी भ्रूमध्यपर्यन्त प्रसृता । वामे पिङ्गला तथा । तथा च जामद्वस्थाया नेत्रयो दपत्यात्मना श्रुतिप्रतिपादित , म्बप्ने मनडपाधिक , सुषुप्रावज्ञानोपाधि क , जाम्रति स्थूलशरीराभिमानी विश्व इत्युच्यत, स्वप्ने सू-क्माभिमानी तैजस , सुषुप्रौ कारणाभिमानी प्राज्ञ । सुषु-प्तौ कारणात्मना स्थितानि स्थूलसूक्ष्मशारीरजन्यभोगसाधन प्रारब्धकर्मवद्दोन पुरीतद्वारा नाडीमार्नेण तत्तद्दोलकानि प्रवि शन्ति इन्द्रियाणि । तदुपरमधारब्धोद्वोधे आन्दोलिकाया वि द्यमानो राजा गृहान्तरे सोपानमागद्वारा प्रासादे विहत्य त-दविच्छन्नान्त पुरपर्यक्के शयान इव नाडीद्वारा पुरीतत्प्रविदय तदवच्छित्रहृदयोपाधिक परमात्मान यदा प्रविर्शात तदा सुप्त इत्युच्यते । छिङ्गशरीर कारणात्मना छीयत । तदा प्राणा दिवायव प्रलीनवृत्तय सन्त आयु स्वरूपेण शरीर रक्षान्त । तथा च भाविजायत्स्वप्रभोगानुकूळकर्मानुबन्धप्राणधारण सु-षुप्तौ सोपाधिकचैतन्यस्यैव दृश्यते । तत्सत्तया च नाडीना प्राणसचारयोग्यतापि । एव च सति 'न प्राणेन नापानेन मर्त्यो जीवति कश्चन । इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेताबुपा-

श्रितौ 'इति श्रुत्या 'जीव प्राणधारणे 'इति धातुपाठा प्राण नाडी शब्दस्य लक्षणया परमात्मैवोच्यते । कामेश्वरस्यैव प्रारब्धकर्मजन्यशरीरमात्राभावेऽपि घृतकाठिन्यन्यायेन मूर्ति मत्तया तदन्तर्यामिसभावनया एतन्नाम । कामेश्वरस्य प्राण नाडी तद्धिष्ठानचैतन्यमिति फलितोऽर्थे ॥ ॐ कामेश्वर प्राणनाड्ये नम ॥

कामशोत्सगवासिनी। कामेशस्य उत्सगे वामाङ्के वसती ति तथा। 'अनेकमन्मथाकारकामेशोत्सगवासिनी' इति लिलितातापनीये॥ अकामेशोत्सगवासिन्थे नमः॥

कामेश्वरालिङ्गिताङ्गी। तेन आलिङ्गितम् अङ्गीकृतम् अङ्ग यद्या सा तथा॥ ॐ कामेश्वरालिङ्गिताङ्ग्ये नम ॥

कामेश्वरसुखप्रदा । कामेश्वराय सुख प्रददातीति वा । कामेश्वरस्य यत्सुख ब्रह्मस्वरूपसिचदानन्दसाक्षात्कारात्म कम्, 'दवो भूत्वा देवानप्येति' इति श्रुत्युक्तन्यायात् स्व कीयभक्ताना कामेश्वराभेदरूप सिचदानन्दचनात्मक मोक्ष ददातीत्यर्थ ॥ ॐ कामेश्वरसुखभदाये नम ॥

कामेश्वरप्रणयिनी कामेश्वरविलासिनी। कामेश्वरतप सिद्धिः कामेश्वरमन'प्रिया॥

कामेश्वरप्रणयिनी । कामेश्वरस्य स्वस्वरूपे परमानन्द्रधने या प्रीति तद्विषयभूतेत्वर्थ ॥ ॐ कामेश्वरप्रणयिन्ये नम् ॥

कामेश्वरविलासिनी । कामेश्वरस्य विलास कार्यात्मना विवर्तोऽस्या असीति तथा।। ॐ कामेश्वरविलासिन्यै नमः ॥

कामेश्वरतप सिद्धि । कामेश्वरस्य तप जगदास्त्रोचना त्मकम् , सिध्यत्मनयेति सिद्धि , तपस साधनभृतेत्यर्थ । स्त्रीपुरुषात्मना कल्पितभेदवशातु जगत्सर्जनसाधनभूतत्यर्थ ॥ 🤲 कामेश्वरतप सिद्धचै नमः ॥

कामेश्वरमन प्रिया। मनस प्रिया तथा, निरवधिक-प्रेमास्पद्द्यर्थ ॥ ॐ कामेश्वरमन प्रियाये नम ॥

### कामेश्वरपाणनाथा कामेश्वरविमोहिनी। कामेश्वरब्रह्मविद्या कामेश्वरगृहेश्वरी ॥

कामेश्वरप्राणनाथा । कामेश्वरस्य प्राण हिरण्यगभ त नाथयति पालयतीति तथा। कामेश्वर प्राणनाथो वक्तभो यस्या सेति वा तथा ॥ ॐ कामेश्वरप्राणनाथायै नम ॥

कामेश्वरविमोहिनी। विमोहयति म्वय भिन्नविग्रहवती

सती आवा दपती—इति द्विप्रकारकज्ञानवन्त करोतीति सा तथा। अभेदज्ञानवत तद्विपरीतज्ञानवत्त्व मोह तत्करोती ति सा तथा। अथवा, मोहो नाम बुद्धेरेकालम्बनतया तद-न्याविषयकत्वम् परमेश्वरम्य स्वस्वरूपपरदेवतापरमानन्द साक्षात्कारेण स्थाणुविशिश्चलतया उपचारेण मोहवत्त्त्या तदि तरप्रपञ्चाकारकृत्याद्याश्रयतादर्शनेन मोहयतीत्युपचारनाम। मोहयतीवेत्यर्थ। अन्त पुरगत राजान स्त्रियासक्तमितिव दित्यर्थ।। ॐ कामेश्वरविमोहिन्ये नमः।।

कामश्वरत्रहाविद्या । कामेश्वरस्य तत्त्वपदार्थसाक्षात्कार भूतेत्यर्थ , 'य साक्षादपरोक्षाद्वद्या ' इति श्रुते ॥ ॐ कामेश्वरत्रह्माविद्याये नम ॥

कामेश्वरगृहेश्वरी। गृह्यत इति ग्रह् सर्वज्ञानम् तस्य ईश्व री विषयाधिष्ठानभूतत्वेन नियामिकेल्यर्थ। अथवा, 'गृहिणी गृहमुन्यते' इति न्यायात् कामेश्वर गृहेश्वर खस्या अ धिपति अस्या अस्तीति सा तथा॥ कामेश्वरगृहेश्वर्ये नम्॥

कामेश्वराह्णाद्करी कामेश्वरमहेश्वरी। कामेश्वरी कामकोटिनिलया काङ्कितार्थदा॥ कामेश्वराह्णादकरी। आह्वाद तृप्तिजन्यसुख परमेश्वरस्य नित्यतृप्तत्वरूपा शक्ति , परदेवतात्मकतया त करोतीति तथा ॥ ॐ कामेश्वराह्णादकर्ये नम ॥

कामश्वरमहेश्वरी । महती च मा इश्वरी निक्रपाधिकैश्व र्यवती, 'महान्त्रभुवें पुरुष ' इति श्रुते । कामेश्वरम्य मह दैश्वर्यम् अस्या अस्तीति तथा, भगवतीत्वर्थ । 'ऐश्वर्यस्य सममस्य वीर्यस्य यशस श्रिय । ज्ञानवैराग्ययोश्चेव षण्णा भग इतीरणा 'तमिश्वराणा परम महेश्वरम ' इति श्रुते ॥ ॐ कामेश्वरमहेश्वर्यं नमः ॥

कामेश्वरी । मन्मथापासितकादिविद्यारूपेखर्थ ॥ ॐ कामेश्वर्ये नमः॥

कामकोटिनिलया। षण्णवितपीठेषु मध्य कामकाटि श्रीचक्रमित्यर्थ। निलय गृह यस्या सा तथा॥ ॐ का-मकोटिनिलयायै नम'॥

काङ्कितार्थदा । काङ्कितान् काङ्काविषयीभूतान , प्राप्तम जातीयेच्छा काङ्का , तद्गोचरान् पदार्थान् ददातीति तथा । काङ्किता सती उपास्यदेवता मे प्रसन्ना भूयादितीच्छया चिरकाछोपासिता सती पुरुषार्थान् अप्रार्थयमानस्यापि स्वयमेव ददातीत्यर्थ ॥ ॐ काङ्कितार्थदाये नम ॥

#### लकारिणी लब्धरूपा लब्धधीलैब्धवाब्छिता। लब्धपापमनोद्रा लब्धाहकारदुर्गमा॥

स्रकारिणी तृतीयखण्डतृतीयवर्णत्वेन वाचकतया अस्या अस्तीति सा तथा ॥ ॐ स्रकारिण्ये नम् ॥

लब्धरूपा। रूप्यते ज्ञाप्यत एभिरिति रूपाणि लक्षणा नि स्वरूपतटस्थभेदेन सगुणनिर्गुणपराणि, लब्धानि यया सा तथा। रूप्यते ज्ञाप्यत इति रूपम् अर्थ, उपलक्षण नाम्नो ऽपि, लब्धे नामरूपे यया सा तथा। आदौ स्वय मायोपा धिना शब्दार्थभावमापद्य पश्चात् व्याकरणमकरोदिति भा व ॥ ॐ लब्धरूपायै नम् ॥

लब्धधी । निश्चयात्मिका सविकल्पनामका अन्त कर णवृत्तयो थिय , ता उपाधित्वेन प्रतिबिम्बाधिष्ठानत्वेन लब्धा यया मा तथा । वृत्त्याकृढ चैतन्य ज्ञानमिति वा, चैतन्य-व्यामा वृत्तिवेति वेदान्तसिद्धान्त । जडाना विषयाणा प्रहणे ताहशीना वृत्तीना असामध्यें जगदान्ध्यप्रसङ्गेन स्वक्षपचै नन्यमन्त करणासुपहित फल्लचैतन्यतया प्रकाशयति । तथा च 'ब्रह्मण्यज्ञाननाशाय वृत्तिव्याप्तिरिहेष्यते ' इति न्यायेन लब्धा धी तन्त्वमस्यादिमहावाक्यश्रवणजन्यवृत्तिच्याप्तिर्थया

सत्यर्थ । अथवा, धी शब्दन सर्वज्ञत्यादिक मुन्यते , तत् लब्ध ययेति वा, 'य मर्वज्ञ सर्वविन' इति श्रुत ॥ ॐ लब्धिये नम ॥

लब्धवाञ्चिता। वाञ्छाया विषयीभूत वााञ्छतम् इष्टफ लिमसर्थे । लब्ध पूर्वमव प्राप्त तद्ययेति तथा । आप्तकामेति यावन् ॥ ॐ लब्धवाञ्चितायै नमः ॥

ळड्यपापमनोदूरा। पापप्रधानानि च तानि मनासि च पापमनासि ळड्यानि पापमनासि ग्रैस्ते सदा पापचिन्तका इत्यर्थ। तथा दूरा अवेग्रेत्यर्थ, 'अन्यत्र धर्मादन्यत्राध मादन्यत्रास्मात्कृताकृतात् इति श्रुते। 'तमेत वेदानुवच नेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति' इति श्रुत्या विहिताना तत्तद्वर्णा-श्रमधर्माणामीश्वरापणबुद्धचा ।क्रयमाणानामात्मज्ञानमाधन तया श्रूयमाणत्वात् तदन्येषा दु खप्राप्तिसाधनत्वेन पापवा सनाप्रधानत्वेन दुरिधगमेत्यर्थ॥ ॐ ळड्थपापमनोद् राये नमः॥

लब्धाहकारदुर्गमा । अहकारोऽभिमान वपलक्षण त त्कार्याणामासुरसपित्तविशेषाणाम् । लब्ध अहकार राजस तामसात्मक यैस्त दु खेनाप्यधिकप्रयन्नेन क्रियमाणसाध नकस्रापेन अधिगन्तु ज्ञातुमशक्या । सत्त्वगुणाभावे देहे निद्रयादौ सुखप्रकाशान्याप्तौ मन स्थैयीभावेन रजस प्रवर्त
कस्य विक्षेपकस्य तमसश्चावरणप्रधानस्य विवेकज्ञानप्रतिब
न्धकस्य निद्राळस्यादिसमुद्भवस्य कार्येण जामित्वादिक्ष्पेण
श्रेयोमागसाधनानुष्ठाने गुरुवेदयो श्रद्धाक्ष्ये बाह्यविषयस
पादनन्यम मनि लाभालाभहेतुकहर्षशोकजन्यरागद्वेषपर
तन्त्रे अनात्मज्ञासुरसपत्तिमता चित्ते न भातीत्याशय ।
प्रत्युत जननमरणप्रवाहरूपससारमेवानुभवन्ति, 'तानह
द्विषत क्रूरान्' इति भगवद्वचनात् । अतो निरिभमानपुरु
वेण स्वाभीष्टलाभाय चित्त मदा चिन्तनीयेत्यर्थ । 'यतय
शुद्धसत्त्वा ' इत्यादिप्रमाणेभ्य इति द्रष्टन्यम् ॥ ॐ लब्धा
हकारदुर्गमायै नम ॥

### लब्धशक्तिर्लब्धदेहा लब्धेश्वर्यसमुन्नति । लब्धवृद्धिर्लब्धलीला लब्धयौवनशालिनी ॥

लब्धशक्ति । लब्धा शक्ति सकलसामध्येहेतुभूता मा यात्मिका यया सा तथा, 'ते ध्यानयोगानुगता अपश्यन् देवात्मशक्ति स्वगुणैर्निगृद्धाम्' इति श्रुते ॥ ॐ लब्धश क्त्ये नम् ॥

छब्धदेहा। छब्ध देह विम्रह यया सा तथा। स्वे 8 U VII 18 च्छावलिम्बतमूर्ति घृतकाठिन्यन्यायेन जीवत्वाभावेन कर्मा धीनत्वाभावात । तथा च मति अध्यस्तमायाशके भेदक त्वस्वाभाव्यन 'पतिश्च पत्नी चाभवताम्' इति श्रुत्या च दपतिमूर्तिमती बभूवेत्यभिन्नाय ॥ ॐ लब्धदेहायै नम ॥

ळब्धेश्वयसमुन्नति । ऐश्वर्याणा समुन्नति आधिक्य प यवसानिमत्यर्थ , ळब्धा ऐश्वर्यसमुन्नति यया सा तथा, 'तमीश्वराणा परम महश्वरम्' इति श्रते 'नान्तोऽस्ति मम दिव्याना विभूतीना परतप' इति स्मृतेश्च । 'सर्वे श्वर एव सर्वेज्ञ एषोऽन्तर्याम्येष योनि सर्वस्य' इति श्रुतौ निरुपाधिकमहदैश्वर्यसपत्ते तदुपासकानामगस्त्यादि महर्षीणा दर्शनात् तदीयमहदैश्वर्यस्य निरवधिकत्वमिति किमु वक्तव्यमिति ज्ञायते इत्यमिप्राय ॥ ॐ लब्धेश्वर्य-समुन्नत्ये नम ॥

ळब्धवृद्धि । वृद्धिर्नाम व्याप्ति परिपूर्णतेस्यथ , अव यवोपचयात्मका न, तस्या कर्मजन्यत्वेन विनाशहेतुत्वात् , 'स वा एष महानज आत्मा न वर्धते कमणा' इति श्रुतिवचनात् , 'निष्क्रिय निष्कळम्' इति अवयवमास्ति षेधाच , तथा च ळब्धा वृद्धि सर्वव्यापकता स्वस्वरूपैव सती उपाधिमिर्जन्यैस्तदाश्रयभूते अभिव्यक्यत । न त्वविद्यमानारोपिता इति निष्कर्षार्थ ॥ ॐ स्रब्धटुद्ध्ये नम ॥

लब्धलीला। लीला अन्यप्रयोजनार्थन्यापारा स्वहर्ष मात्रहेतुका वा, तत्तत्कालोचितशृङ्गारादिनवरसाङ्गीकारसमये तदुचितभङ्गीविशेषा वा लब्धा यया सा तथा॥ ॐ लब्ध लीलायै नम'॥

लब्धयोवनशालिनी । अस्तित्वजननवर्धनभावितकारा वस्था बाल्यम् , परिणाम अपक्षयो नाश उत्तरावस्था जरा, दहाभावेन तदुभयनिषेधे अर्थाद्यौवनम् , यौति गन्छतीति युवा दृढवल्रवीर्यं , तस्य भाव यौवन तदुभ यवयोऽवस्थाराहित्येनैकस्वरूपता , तल्लब्ध प्राप्त यौवन यथा सा तथा , 'अजरोऽमृतोऽभयो ब्रह्म ' इति श्रुते सर्वदा एकप्रकारस्वरूपवतीति भाव ॥ ॐ ल्रब्धयौवनशालिन्ये नमः ॥

लब्धातिद्यायसर्वाङ्गसौन्दर्या लब्धविश्रमा। लब्धरागा लब्धपतिलेब्धनानागमस्थितिः॥

लब्धातिशयसर्वाङ्गसौन्दर्या । सुन्दरो रुचिर तस्य भाव सौन्दर्यम्, अवयवाना सर्वेषा सौन्दर्यमतिशायि सर्वाङ्गेषु सर्वावयवेषु लब्ध यया सा तथा, यथाशास्त्रोक्ता वयविन्थासिवशेषत्वन सर्वमनाहरमूर्तिवतीत्वर्थ , 'न तम्य प्रतिमास्ति' इति श्रुत ॥ ॐ लब्धातिश्रयसर्वाङ्गसौ न्द्रभीये नम् ॥

लन्धविश्रमा। विश्रमो बालकीडा लन्धा यया सा तथा, मर्वात्मकतया सर्वकर्तृत्वादिति भाव ॥ ॐ लन्ध्य विश्रमायै नम ॥

छब्धरागा। छब्ध सजातीयो राग काम, 'मोऽका-मयत' इति श्रुत्या जगत्सर्जनस्य कामनापूर्वकत्वप्रतिपाद नात्, छब्धो रागो यया मा तथा इत्यर्थ ॥ ॐ लब्धरा गायै नम ॥

लब्धपति । लब्ध स्वेच्छयैव खयवरे पति काभेश्वरो यया सा तथा ॥ ॐ लब्धपतये नम्. ॥

छन्धनानागमिश्यति । आ समातात् नानाप्रकारै कर्मो पासनाज्ञानकाण्डतद्क्कत्वादिभि गमयन्ति स्वार्थान् प्रका शयन्तीत्यागमा वेदा नाना अनेकशास्त्राप्रभिन्नसामादय तेषा स्थिति परिपालन लब्धा यया सा तथा । नाना गमस्थिति वेदचतुष्ट्रयोक्तमर्यादा काण्डप्रयविषया लब्धा यया सेति वा । ससारस्थानादित्वेन निरपेक्षप्रमाणभूतान् वेदान् 'सर्वे वदा यत्नैक भवन्ति 'इति श्रुते स्वस्त्रूत्भूतान्

महाप्रस्थे सरक्ष्य सर्गादी जायमानहिरण्यगर्भस्यान्यूनानित रेकेण तानेव प्रतिभासयित स्वय दपती भूत्वा तदुक्तधर्मा ननुष्ठाय परेषामप्यनुष्ठापयतीति च। 'वेद्यास्त्रे ममैवाझे वर्त एव च कर्मणि। यदि ह्यह न वर्तेय जातु कर्मण्यतिद्र त। उत्सीदेयुरिमे लोका न क्रुयी कर्म चेदहम ' इत्यादि भगवद्वचनादिति द्रष्टव्यम्॥ ॐ स्रब्धनानागमस्थित्ये नमः॥

## लब्धभोगा लब्धसुखा लब्धहर्षाभिपूजिता। ह्राँकारमूर्तिर्ह्यौकारसौधशृङ्गकपोतिका॥५४॥

लब्धभोगा। भोग सुखमात्रानुभव दु खानुभने उन्य माने जीवाविशेषप्रसङ्गात। लब्ध भोग यया सा तथा। जीववत क्रिकस्वेष्टपदार्थानुभवानन्तरकालीन सुख न भव ति, म्वस्या आनन्दरूपत्वेन सिद्धस्वरूपत्वात्, साधनभूत-भोगोऽप्येतद्विषये सिद्ध इत्युपचर्यते इति लब्धभोगेत्यु च्यते॥ ॐ लब्धभोगायै नम् ॥

छन्धसुखा। छन्ध सुख अनुकूछवेदनीय स्वस्वरूपभूत सुख तत्माधन च धर्म यया सा तथा ॥ ॐ छन्धसु खाये नम. ॥ लब्धह्षाभिपृरिता। छब्ध या हुषे तृप्तिनिामत्तकचि त्रोह्णासिवशष मुखप्रसादशरीरपृष्ट्यादिकार्योन्नेय जगत्या स्वाभीष्टपदार्थानुभवादिजन्य सतोष इति प्रसिद्ध , तेनाभि पृरिता अभित समन्तादन्यूनानितरेकेणाविन्छिन्नरूपतया पृरिता भरिता। तद्विपरीतदु खाद्यनुत्पादेन तन्मात्रसमाश्रया नित्यप्रसन्नमुखीत्यर्थ ॥ ॐ छब्धह्षाभिपृरितायै नमः॥

ह्रींकारमूर्ति । वाच्यवाचकताभेदसबन्धेन ह्रींकार मूर्ति विग्रहो यस्या सा तथा ॥ ॐ ह्रीकारमृत्ये नम ॥

हींकारसीधशृक्ककपोतिका । सुधामय मीधम, सुधाविकार अट्टालिकेट्यर्थ , तस्य शृक्क शिखर चन्द्रशालादिभिन्त्युपरिभाग , निकपाधिकविश्रान्तिजन्यसुखानुभवहेतु
तथा द्वींकारस्य सीधोपमा , तत्र हकारस्य श्रेतवर्णतया
श्रद्टालिकसादृश्यम् , रेफस्य लोहितक्रपतथा इष्टकादिकृता
धोभिन्युपमा , हकारोपरि ईकारस्य शृक्कोपमा , ऊर्ध्वगत्वसाम्यात् , तदुपरितनिबन्दु सर्वप्रकातभूतशब्दार्थात्मकतथा तद्वयवत्वेन विचित्रस्वक्रपोऽपि स्कृमतया अपवरकगतकपोतकान्तेव जागरूक दृश्यत इति तद्र्थत्वेन परद्
वत्रोपमानशब्देनाभिधीयत इति भाव ॥ ॐ हींकारसीधशृक्कपोतिकाये नमः ॥

# ह्रींकारदुग्धाब्धिसुधा ह्रींकारकमलेन्दिरा। ह्रींकारमणिदीपाचिह्रींकारतस्वारिका॥

ह्राँकारदुग्धाविधसुधा । दोहाझिष्पन्न दुग्धम् । स्तनग तस्य पयस स्वीयतापादनहस्तिक्रयाविशेषो दोह । उपल क्षण चोषणादीनाम् , तथा च प्रदीपालकार सिद्ध , अनन्तो दक्तप्रसारितनिम्नभूप्रदेश अब्धिरुच्यते । आप धीय ते अस्मिन्निति तथा । तस्मिन् मजीवकत्व धमे । डिम्भक सजीवने स्तन्यादौ दर्शनात् । ह्राँकारस्यापि हकारयुक्तत्या श्वेतवर्णत्वादमृतहेतोश्च तत्साहर्यम् । तस्य सुधेव सुधा तद्भिच्यक्तत्वाविशेषात्तत्सेवकाना नित्यत्वे सति बहुविधम हिमशालितया दर्शनादिति भाव ॥ ॐ ह्राँकारदुग्धाविध सुधाये नमः ॥

ह्रींकारकमलेन्दिरा । ह्रींकारबीजस्य विचित्रवर्णतया पर मग्नीतिविषयतया च कमले।पमा । तम्य वाच्यार्थतया तदु परितनत्वेन सर्वपुरुषार्थप्रदातृत्वाच कमलक्षाब्देनाभिधीयते । तस्या पद्मालयत्वात् ह्रींकारकमलस्य इन्दिरा तदधीनब्रह्म-विद्येलर्थ ॥ ॐ ह्रींकारकमलेन्दिराये नमः ॥

ह्रॉकारमणिदीपार्चि । आधिदैविकाशुपद्रवानभिभूतस्वे

सित चिरकाछ।वस्थायित्व मणिदीपसाद्यम् ह्रीकारस्य। तस्य प्रकाश अनितरसाधारणमहातिशयवत्त्वेन अनर्धत्व मावेदयित । तदुपासकस्य निरवधिकमहत्त्वापादकह्रींकार वाच्यतया तत्प्रकाशकेत्यर्थ । तथा च निरन्तरनमोऽपाकर जेन स्वेष्टपदार्थापादनेन च सुख्ययतीति फलितोऽर्थ ॥ ॐ ह्रीकारमणिटीपाचिषे नम ॥

द्वीकारतकशारिका । तारयति फलाथिन स्वारूढान् पतनादे रक्षतीति तक , तस्य शारिका पिङ्गतुण्डनेत्रचरणा शारिका अभ्यासातिशयेन मनुष्यभाषायामपि भाषते । भूतभविष्यद्वर्तमानलोकयात्रापरिज्ञात्री सती शुभाशुभफल प्राप्ति च स्वभाषया वदति । अस्य बीजस्य वान्यार्थतया तत्सबन्धिनी सती वेदवाचा सर्व प्रकाशयतीत्यर्थ ।। ॐ हींकारतकशारिकायै नम ।।

## हींकारपेटकमणिहींकारादर्शिबिम्बिता। हींकारकोशासिलता हींकारास्थाननर्नकी॥

ह्रींकारपेटकमणि । गृह्नसाधनतया ह्रींकार पेटकेन दृष्टान्तीिकयते । तस्य मणि वैद्ध्येमित्यर्थ । यथा हीरा दिमणि पेटकावी गापितोऽपि स्वकान्त्या बाह्याभ्यन्तर तस्य प्रकाशयनितरपेटकेभ्य त व्यावर्तयति, तथेदमीप बीज स्ववाचकतयेतरवर्णेभ्य निरतिशयमहिम्ना भेदयतीति भाव ॥ ॐ हींकारपेटकमणये नम'॥

ह्रींकारादर्शविम्बता। अस्य बीजस्य इतरप्रमाणानपेक्ष वेदान्तर्गततया निर्दोषत्वादादशसाम्यम्। तस्मिन् बिम्बिता प्रतिबिम्बिता, मायाप्रतिबिम्बचैतन्यस्यैव जगत्कारणतया सर्वत्र दर्पणे मुखमिव प्रतिफल्लतीति तात्पर्यार्थे ॥ ॐ ह्रींकारादर्शविम्बतायै नमः॥

ह्रींकारकोशासिलता । ह्रींकार एव कोश तस्यासिलता अतिवीर्घसङ्गिमत्यथ । सर्ववैर्यादिजनयदु खितवर्तकत्वमसि लताया इव परदेवताया अपि । तथात्रेन बहि प्रकटनायो ग्यतामादृश्येन आच्छादकापेक्षया ह्रींकारस्य वाचकशब्द तथा अर्थावारकत्वौपम्यादिसकोशतुल्यता । तथा च ह्रींकार काशे विद्यमाना असिलतेव दु खिनवारकत्वे सित भक्ताभय करीति भाव । सर्वेषामायुधिवशेषाणाम् असिपद्गुपलक्ष णम् । 'महद्भय वज्रमुद्यतम्' 'भीषास्माद्वात पवते' इत्या दिश्रुते ॥ ॐ ह्रींकारकोशासिलताये नमः ॥

ह्याँकारास्थाननतकी । ह्याँकार एव आस्थान सभामण्डप मर्वाश्रयत्वान् । तस्य नतकी नटनसबन्धभूसयोगचरणवि न्यासोपलक्षिततालानुसारिहस्ताद्यङ्गचेष्टा नर्तनम्, तत्कर्त्री नर्तकी । ह्रींकारवाच्यार्थतया मायादिसवन्धासवन्धनिमित्त कविचित्रतरकार्योत्पादनव्यापारानुकारिवकार्यविकारिस्वरूप वत्तया द्रष्टृलोकमनोष्टित्तभेदेन तीव्रमन्दमन्दनरप्रीतिरूपभ किविषयतयाभिव्यक्तानिभव्यक्तेष्टफलसाधनतया म्वकीयपु-ण्यादितारतम्येन बुद्धिशुद्धिभेदादप्रतिभातीत्यर्थ ॥ ॐ ह्रीं कारास्थाननर्तवये नम् ॥

## ह्रींकारग्रुक्तिकामुक्तामणिह्रींकारबाधिता। ह्रींकारमयसौवर्णस्तम्भविद्वमपुत्रिका॥

ह्राँकारशुक्तिकामुक्तामणि । ह्राँकार एव शुक्तिका नील पृष्ठित्रिकोणाकारा, तस्या मुक्तिकेव मुक्ताफलाभवाभित्रयज्य-माना— यथा स्वातीमहानश्रस सर्वदेशेषु मधसघात्पतज्ञल विन्दु शुक्तिकान्त पतित समुद्रदेशिवशेषे मुक्ताकारेण परिणमते, तथा मक्त्वरजस्तमोगुणात्मकह्रीबीजावच्लेदेन म नोहरवाचामगोचरसुन्दरतरपरदेवतामूर्या मर्वगतमि चै-तन्य विशिष्याभिव्यक्यते । तथा च मौक्तिकार्थिना शुक्त्य पादानवत् परदेवतासाक्षात्कारेपसूना ह्राँकारोपादानमाव इयकमिति भाव ॥ ॐ ह्राँकारश्रक्तिकामुक्तामणये नमः॥

हींकारबोधिता । सिद्धे पदार्थे इन्द्रियादिसबन्धे सति स्वत एव ज्ञानोत्पत्तिवृश्चेनाम्न ज्ञाने विधिरपेक्षित , क्रियाफ-छत्वाभावात् । तर्हि नित्यापरोक्षधमीदिज्ञानवत् श्रद्धश्रद्धा-भेद वेदैकदेशहींकारेणैव बोध्यते, अज्ञातज्ञापकत्वेन वदस्य स्वत प्रामाण्या भ्युपगमात्, परचैतन्यस्य च ज्ञायमानस्य परमानन्द्ररूपतया पुरुषार्थरूपत्वात् । अत ह्वींकारेणैव मू लमन्त्रात्मना बोधिता ज्ञापिता । हकाररेफेकाराणा व्यस्तत्व दशाया भिन्नभिन्नार्थकाना मेलने हींकारात्मना परिणामे सिबदानन्दस्वरूपश्रीतिपुरसुन्दर्या तदर्थत्वेन अद्वैतस्वरूप तया प्रतिभानात् । 'नान्योऽतोऽस्ति द्रष्टा' 'इद् सर्वे यदयमात्मा ' ' एक एव तु भूतात्मा भूते भूते व्यवस्थित । एकधा बहुधा चैव दृइयते जलचन्द्रवत् ' इत्यादिश्रुते । 'आत्मा वा अरे दृष्टव्य ' 'तद्विजिज्ञासस्व ' 'आत्मान पदयेत् ' इत्यादि छिङ्छोट्तव्यप्रत्ययानामईतार्थकतया न वि धित्वमिति सिद्धान्त ॥ ॐ हींकारबोधितायै नमः ॥

हींकारमयसौवर्णस्तम्भविद्रुमपुत्रिका । पिङ्गलपृथ्वीरेणु सुवर्णमित्युच्यते । अनुच्छिद्यमानद्रवत्वस्य नैमित्तिकत्वेऽपि तैजसान्तर प्रदीपप्रभादावदर्शनात् । पदार्थान्तरसयोगे रज तादिवद्तितेज सयोगात् भस्मभावापत्तेश्च हीरमणौ छोह्छे

क्यत्वाभाववत्त्वेऽपि पार्थिवत्ववदत्र पार्थिवत्वे बाधाभावात् । द्रवत्वस्याद्कस्वभावत्वन तत्कायपृथिव्यामपि उपलम्भोपप त्तेश्च । तद्विकार , सीवणश्चासी स्तम्भश्च । सीवर्णस्तम्भस्य नवरत्नमण्डपभारवाहित्वे सति तद्भिन्नत्वेन तद्रलकारभूतत्व स्येव गाधर्म्यस्य ह्रींकारेऽपि जगदाश्रयत्वे मति तत्कारणत्वे सति तदन्तर्भूतत्वे सति परभानन्दजनकत्वस्य सत्त्वेन ह्यांका रमय इत्यभेदोपचार प्रदीपालकारचोतनार्थ इति ज्ञातन्यम्। ह्याँकारे उपमेथे मयगब्देनोपमानाभेदकरूपनात् । तस्मिन्वि चित्रपिङ्गप्रधानरूपे तत्सबन्धितया विद्रुमपुत्रिकेव प्रतीय माना विदुमन प्रवालन कृता पुत्रिका सालभिक्तका । मौव र्णस्तम्भशब्द उपलक्षण भित्त्यादीनाम् , प्रायस्त्वदर्शनात् तदु पादान स्वत मनोज्ञस्य स्तम्भस्यातिशयदर्शनीयतायै। दुर्ल भतरप्रवालपुत्रिका स्तम्भमण्टप तत्स्वामिन तहश च प्रकृ ष्ट्रीकरोति तथा श्रीपरदेवतापि क्रुट्येतद्वीजाथतया तदव च्छित्रा सती तदादीन सर्वान भूषयति सफलीकरातीत्यथ ॥ 🦫 हींकारमयसौवर्णस्तम्भविद्वमपुत्रिकायै नमः ॥

ह्रीकारवेदोपनिषद्भीकाराध्वरदक्षिणा। ह्रीकारनन्दनारामनवकल्पकवछरी॥ ८७॥

हींकारवेदोपनिषत् । वेद्यन्ते ज्ञायन्ते सर्वे पदार्था अनेनेति वेद । जात्येकवचनम् । हींकार एव वद । ज्ञापकत्वाविशेषात् । तस्य उपनिषद्वेदान्तभाग लक्ष्यार्थी वा, तत् ब्रह्मोपनिषत्परमिति श्रुत । कर्मोपासनाज्ञानका-ण्डभेदेन चत्वाराऽपि वेदा सिप्रकारा । 'तमेत वदानुव चनेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति ' इति वाक्येन ज्ञानसाधनतया कर्मोपासनयो विनियुक्तत्वात्, 'अन्धतम प्रविशन्ति ये ऽविद्यामुपासते । ततो भूय इत्र ते तमो य उ विद्याया रता ' इति श्रुत्मा तदुभयो ससारफळकत्वेन निन्दितत्वाच, 'आत्मान चेद्विजानीयाद्यमस्मीति पुरुष । किमिच्छन् क स्य कामाय शरीरमनुसन्वरेत् ' 'आत्मकाम आप्तकाम ' इत्यादिश्रुतिभ्य अद्वैतज्ञानीत्पादकवेदभागस्योपनिषच्छब्द वाच्यस्य मोक्षफलकत्वेन फलप्रतिपादनात्तदुभयप्रतिपादक वदभागापेश्चया श्रेष्ठत्वम् , लाके साधनापेश्चया फलस्य श्रष्ठत्व नात्तमत्वप्रसिद्धे । तथा च पूर्वकाण्डद्वयार्थस्य जन्यतया तत्प्रतिपादकवेदभागस्योपनिषच्छेषत्ववत् ह्रींकारस्यापि पर-देवताप्रकाशकत्वेन तच्छेषत्वात्तस्या प्राधान्यमुक्तमिति द्रष्ट व्यम् । वेदान्तेषूपनिषच्छज्य तज्जन्यतारूपशक्यसबन्धेन प्र वर्तते । मुख्यया वृत्त्या तु ब्रह्मविद्यायामेव । तथा हि-उप

शब्द समीपदेशार्थक । ब्रह्मण्यध्यस्तमायासमीपदेशक
तत्पदार्थप्रतिबिम्बतमिवद्योपाधिकचैत-य जीवशब्दवाच्यमुप
शब्दार्थ लक्षणया प्रतिपायते । नि शब्द षद् इति पदस्य
बिशेषणम् । सन् इति पद् सदनगत्यवसादनेषु भवति ।
तथा च उपशब्दवाच्यो जीव अविद्या निहत्य त्यक्त्वा
ब्रह्मस्वरूपेण निषीदिति वर्तत इति उपनिषदित्येकोऽर्थ ।
जीव ब्रह्म स्वरूपत्वेन निगच्छिति जानातीत्यन्योऽर्थ । जीव ब्रह्मस्वरूपेण अवसीदिति परिसमाप्नोतीति तृतीयोऽथ ।
एवमुपनिषच्छब्दस्य ब्रह्मविद्यावाचकत्वेन प्रसिद्धस्य तद्वाच
कवेदभागे लक्षणवत्त्वेऽप्युपनिषच्छब्दवाच्यो भवति । तथा
च ह्रींकार एव वेद तस्य उपानषत्प्रधानभूता ब्रह्मविद्ये
तर्थ । ॐ ह्रींकारवेदोपनिषदे नम ॥

हींकाराध्वरदक्षिणा । हींकार एव अध्वर यज्ञ तस्य दक्षिणा समाप्रिसाधनम्, दक्षिणाया दत्ताया यज्ञसमाप्ति दर्शनात् । हींकारस्यापि जप यजनात्मकतया अध्वान राति गच्छतीत्यध्वर मार्गसाधक इत्यर्थ । दक्षिणापद फळवाचि ऋत्विग्व्यापाराणा दक्षिणाफळत्वदर्शनात् । हीं काराध्वरस्य हींकारजपयज्ञस्य दक्षिणा फळसाधनीभूतपुरु पार्थक्तपा । अथवा हींकाराध्वरस्य दक्षिणा पत्नी, । मखस्य दक्षिणा पत्नी 'इति वचनात्। 'ज्ञानयक्षेन तेनाहमिष्ट स्या मिति मे मिति 'इति भगवद्वचनात्। द्वींकारलक्ष्यार्थक्षान-मेव द्वींकाराध्वर ह्वींकारज्ञानयज्ञ, 'प्रधान दक्षिणा मखे ' इति वचनात् दक्षिणावत्फलभूतत्वेन प्रधानभूतेति वा। दे वतोइहोन द्रव्यत्यागो याग इत्युच्यते। त्यक्तद्रव्यस्य अग्नी प्रक्षेपा होम। ऋत्विगुदेहान वद्यामथिवभागो दक्षिणा। अ-र्थिभ्य वेदिबहिर्देहोऽर्थविभागो दानमिति तेषा भेद ॥ ॐ द्वींकाराध्वरदक्षिणायै नम ॥

द्वीकारनन्दनारामनवकल्पकवछरी। नन्दयत्यानन्दयती
ति नन्दन स चासौ आरामश्च तथा। देवेन्द्रोद्यान विचि
त्रस्वरूपतया विजातीयार्थकत्वात्। द्वीकार एव नन्दना
राम सुस्वकर्तृ विश्वामभूमि, तस्य नवा नूतना अतिकोमछे
त्यथ । कल्पयतीति कल्पका कल्पका च सा वछरी चेति
तथा । देवोद्याने विद्यमानाना वृक्षगुल्मछतातृणादीनाम्
एत्र छोकातिशायिपुष्पफछादिमन्त्वेऽपि न सर्वोत्तमताप्रसिदि । कल्पवल्ल्यास्तु यथाकमे यथासेवसुपासकना सर्वार्थप्रदानशक्तिमन्त्वेन सर्वोत्कृष्टता। तथा ब्रह्मविष्णुकद्राणा
तद्वाचकवर्णभेदानाम् अन्योन्यसबन्धतया एकत्र प्रतीयमा
नत्वेन चिरजीवित्वफछादिप्रदानेन आनन्दकतया ससारता

पशामकत्वेन च ह्रींकारस्य नन्त्रनापमा । तत्र सर्वाथप्रदा सृत्वेन कामेश्वरालिङ्कितकोमलतरसुन्दरमूत्या विशिष्टपुरुषा श्रेचतुष्ट्यकल्पनन सगुणिनर्गुणोपासकाना तद्दवतात्मना प्रा धान्येन समष्टिक्षपतया सादृश्येन नवकल्पकवस्ररीत्युन्यत इति भाव ॥ ॐ ह्रीकार्नन्दनार्गमनवकल्पकवस्र्ये नम् ॥

## हींकारहिमवद्गद्गा हींकाराणीवकौस्तुभा। हींकारमन्त्रसर्वस्वा हींकारपरसौख्यदा॥

ह्रींकारहिमवद्गङ्गा । हिमान्यस्मिन् सन्तीति हिमवान् शीतलपवेतराज । ह्रींकारस्य अमृताादसाधकतया शीत लता बोध्या । तस्माद्गङ्गेव पावनी सर्वपुरुषार्थप्रदा मन्त्रद्वतात्मनाभिव्यक्तेत्यर्थ ।। ॐ ह्रींकारहिमवद्गङ्गायै नषः ॥

हींकाराणिवकौस्तुभा । कौस्तुभ क्षीराव्धिजनमसु चतु दंशरत्नेषु यथा श्रेष्ठ सर्वाधिकप्रकाशादिगुणतया, तथा पर देवतापि अपारमहिमापिरिच्छिन्नहींकारमन्त्रवेद्यत्वेन तिन्न ष्पन्ना सती 'अत्राय पुरुष स्वय ज्योति ' इति श्रुते स्वय प्रकाशतया विद्योतत इसर्थ । अत्र कौस्तुभहृदयस्य छक्ष्मी पतित्वसर्वदेवोत्तमत्वसकळसुन्दरतमत्वगुणा इव विष्णो हीं कारार्णविविद्योतमानहींकारदेवतोपासकस्यापि नारायणाभेदेन श्रीकान्तत्वादिधर्मा स्वत एव मिध्यन्तीति कौस्तुभपदन ध्व नितमिति द्रष्टव्यम् ॥ ॐ हींकारार्णवकौस्तुभाये नम ॥

ह्रींकारमन्त्रसर्वस्वा । सर्वाणि च तानि स्वानि च धना नि अणिमाद्यष्टेश्वर्यजनकत्वादीनि तानि तथा । ह्रींकारघटि ता ह्रींकारो वा तेषा सर्वस्वा सक्छसपत् सर्वार्थसाधकश क्तिरित्यर्थ ॥ ॐ हीकारमन्त्रसर्वस्वायै नमः ॥

हींकारपरसौख्यदा । हींकारपरा हींकारमन्त्रजपपरा हींकारघटितश्रीविद्याजपपरा वा । तेषा सौख्य चतुर्विधपुर षार्थप्राप्तिजन्यानन्द तह्रदातीति तथा । हींकाराणा व्यष्टि रूपण वाच्यार्थना क्षिमूर्तीना पर सौख्य सामरस्यसुख एकी भावानन्द ददातीति वार्थ । 'यत्र नान्यत्पश्यति नान्य च्छ्रणोति नान्यद्विजानाति स भूमा । यत्रान्यत्पश्यसन्य न्छ्रणोत्सन्यद्विजानाति तद्रस्पम्' 'नाल्पे सुखमस्ति' इति, 'आनन्द ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन' इति 'यदा ह्यतेष एतस्मित्रहृश्चेऽनात्म्येऽनिरुक्तेऽनिलयनेऽभय प्रतिष्ठा विन्दते । अथ सोऽभय गतो भवति', 'विज्ञानमानन्द ब्रह्म रातिदातु परायणम्' इत्यादिबहुश्चृतिभ्य अखण्डसिद्यदा नन्दब्रह्मस्वरूपतया सैव फल भवति, अन्यक्कानाद्वयफल प्राप्तेरयोगात् । 'ब्रह्म वद ब्रह्मैव भवति' 'तरित शोकमा त्मिवत्', 'येन मामुपयान्ति ते । तषामह समुद्धर्तो मृत्यु ससारसागरात' 'ब्रह्मैव सन ब्रह्माप्यति' इत्यादिश्रतिस्मृ तिज्ञतेभ्य स्वस्क्रपप्राप्तरेव पुरुषार्थस्य प्रदातृत्व सिद्धम् ॥ ॐ द्वीकारपरसौरूयदायै नम् ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगव त्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ श्रीछिलतात्रिशतीभाष्यम् सपूर्णम् ॥

हस्य ते मयाख्यात देव्या नामशतत्रयम् । रहस्यातिरहस्यत्वाद्गोपनीय त्वया मुने ॥ शिववर्णानि नामानि श्रीदेव्या कथितानि हि । शक्तसक्षराणि नामानि कामशकथितानि च ॥ डभयाक्षरनामानि द्युभाभ्या कथितानि वै । तद्व्यैश्रीथित स्तोत्रमेतस्य सदश किम्र ॥ ३ ॥ नानेन सदश स्तोत्र श्रीदेवीप्रीतिदायकम् । लोकत्रयेऽपि कल्याण सभवेन्नात्र सशय ॥ इति हयमुखगीत स्तोत्रराज निश्चम्य प्रगलिनकलुषोऽभूचित्तपर्याप्तिमेत्य। निजगुरुमथ नत्वा कुम्भजन्मा तदुक्त पुनर्धिकरहस्य ज्ञातुमेव जगाद ॥ ५ ॥

अश्वानन महाभाग रहस्यमपि मे वद ।
शिववणीनि कान्यत्र शक्तिवणीनि कानि हि ॥
डभयोरिप वर्णीनि कानि वा वद देशिक ।
डाति एष्ट कुम्भजेन हयग्रीवोऽवद्तपुनः ॥ ७ ॥
तव गोष्य किमस्तीह साक्षाद्म्यानुशामनात ।
डद त्वितरहस्य ने वक्ष्यामि शृणु कुम्भज ॥
णतिहज्ञानमात्रेण श्रीविद्या सिद्धिदा भवेत् ।
कत्वय हहय चैव शैवो भागः प्रकीर्तिनः ॥ ९ ॥
शाक्त्यक्षराणि शेषाणि हींकार उभयात्मकः ।

एव विभागमज्ञात्वा ये विद्याजपशालिन ॥

न तेषां सिद्धिदा विद्या कल्पकाटिशतैरपि। चतुर्भि शिवचकैश्च शक्तिचकैश्च पश्चभि ॥

नवचकेश्व ससिद्ध श्रीचक शिवयावेषु । त्रिकोणमष्टकोण च दशकोणहरा तथा ॥ १२ ॥

चतुर्दशार चैतानि शक्तिचकाणि पश्च च। बिन्दुश्चाष्ट्रल पद्म पद्म षोडदापतकम् ॥ १३ ॥

चतुरश्र च चत्वारि शिवचकाण्यनुक्रमात्। त्रिकाणे बैन्दव श्लिष्ट अष्टारेष्टदलाम्बुजम् ॥

दशारयो षाडशार भूगृह भुवनाश्रके। शैवानामपि शान्ताना चऋाणा च परस्परम् ॥

अविनाभावसवन्ध यो जानाति स चक्रवित्। त्रिकोणरूपिणी शक्तिर्बिन्दुरूपपर शिव ॥

अविनाभावसवन्ध तस्माद्धिन्दुत्रिकोणयो । एव विभागमज्ञात्वा श्रीचक यः समर्चयेत् ॥ न तत्फलमवामोति ललिताम्बा न तुष्यति । ये च जानन्ति लोकऽस्मिन्श्रीविद्याचक्रवेदिनः॥

मामान्यवेदिन सर्वे विशेषज्ञोऽतिदुर्लभः। स्वयविद्याविशेषज्ञो विशेषज्ञ समर्वेयेत्॥१९॥

तस्मै देय ततो ग्राह्ममशक्तस्तस्य दापयेत्। अन्धनमः प्रविशन्ति येऽविद्या समुपासते॥

इति श्रुतिरपाहैतानविद्योपासकान्पुन । विद्यान्योपासकानेव निन्दत्याकृणिकी श्रुति ॥

अश्रुता सश्रुतासश्च यज्वानो येऽप्ययज्वनः। स्वर्थन्तो नापेक्षन्ते इन्द्रमग्निं च ये विदुः॥

सिकता इव मयन्ति रिहमिभ समुदीरिताः। अस्माल्लोकाद्मुष्माचेत्याह चारण्यकश्रुतिः॥

यस्य नो पश्चिम जन्म यदि वा शकर स्वयम्।
नेनैव लभ्यते विद्या श्रीमत्पश्चदशाक्षरी॥

इति मन्त्रेषु बहुधा विद्याया महिमोच्यते । माक्षेकहेतुविद्या तु श्रीविद्या नात्र सदायः॥

न शिल्पादिज्ञानयुक्ते विष्ठच्छब्द प्रयुज्यते । माक्षेकहेतुवित्रा मा श्रीविचैव न सशय ॥

तसाद्विद्याविदेवात्र विक्रान्विक्रानितीर्थते । स्वय विद्याविदे दद्यात्र्यापयत्तद्गुणानसुधी ॥

स्वयविद्यारहस्यज्ञो विद्यामाहात्म्यवेद्यपि । विद्याविद नार्चयेद्येत्को वा त पूजयेज्जनः॥२८॥

प्रसङ्गादिदमुक्त त प्रकृत श्रृणु कुम्भज। य कीर्तयत्मकुद्भक्त्या दिव्यनामशतत्रयम्॥

तस्य पुण्यमह वक्ष्ये शृणु त्व कुम्भसभव। रहस्यनाममाहस्रपाठे यत्फलमीरितम् ॥ ३०॥

तत्फल कोटिग्राणितमेकनामजपाद्भवेत्। कामेश्वरीकामेशाभ्या कृत नामशतत्र्रयम्॥ नान्येन तुलयेदेतत्स्तोत्रेणान्यकृतेन च । श्रिय परम्परा यस्य भावि वा चोत्तरोत्तरम् ॥ तेतैव लभ्यते चैतन्यश्चाद्रकेय प्रविश्येत ।

तंनैव लभ्यते चैतत्पश्चाच्छ्रेय परीक्षयेत्। अस्या नाम्ना त्रिशत्यास्तु महिमा केन वर्ण्यते॥

या स्वय शिवयोर्वक्रपद्माभ्या परिनिःसृता। नित्य षोडशसख्याकान्विप्रानादौ तु भोजयेत्॥

अभ्यक्तास्तिलतैलेन स्नातानुष्णेन वारिणा। अभ्यच्ये गन्धपुष्पाचै कामेश्वयीदिनामिनः॥

सूपापूपे दार्कराचै पायमै फलसयुतै । विद्याविदो विद्योषेण भोजयेत्षोडदा द्विजान् ॥

एव निलार्चन कुर्यादादौ ब्राह्मणभोजनम्। त्रिशतीनामभिः पश्चाद्वाह्मणान्कमशोऽर्चयेत्॥

तैलाभ्यङ्गादिक दत्वा विभवे सति भक्तित । शुक्कप्रतिपदारभ्य पौर्णमास्यवधि कमात्॥ दिवसे दिवसे विप्रा भोज्या विज्ञातिसख्यया। दञ्जाभि पश्चभिर्वापि त्रिभिरेकेन वा दिनै ॥

र्त्रिज्ञात्षष्टि ज्ञातविष्ठा सभोज्यास्त्रिज्ञात ऋमात्। एव य' कुकते भक्तया जन्ममध्ये सकुन्नर ॥

तस्यैव सफल जन्म मुक्तिस्तस्य करे स्थिरा। रहस्यनामसाहस्रभोजनेऽप्येवमेव हि॥ ४१॥

आदौ नित्यबर्लि कुर्यात्पश्चाद्राह्मणभोजनम् । रहस्यनामभाइस्रमहिमा यो मयोदितः॥४२॥

सक्तीकराणुरत्रैकनान्नो महिमवारिधेः। वाग्देवीरचिने नामसाहस्रे यद्यदीरितम्॥४३॥

तत्फल कोटिगुणित नाम्नोऽप्येकस्य कीर्तनात्। एतदन्यैर्जपै स्तोत्रैरर्चनैर्यत्फल भवेत्॥ ४४॥

तत्फल कोटिगुणित भवेन्नामदातत्रयात्। वाग्देवीरचितास्तोन्ने ताहको महिमा यदि॥ साक्षात्कामेशकामेशिकृतेऽस्मिन्गृश्चतामिति । मकृत्सकीर्तनादेव नाम्नामस्मिञ्शातत्रये ॥४६॥

भवेचित्तस्य पर्याप्तिन्यूनमन्यानपेक्षिणी।
न ज्ञानव्यमितोऽप्यन्यन्न जसव्य च कुम्भज॥

यद्यत्साध्यतम कार्य तत्तदर्थमिद जपेत्। नत्तत्फलमवामोति पश्चात्कार्य परीक्षयेत्॥

ये ये प्रयोगास्तन्त्रेषु तैस्तैर्यत्माध्यते फलम् । तत्सर्व सिध्यति क्षिप्र नामतिशतकीर्तनात् ॥

आयुष्कर पुष्ठिकर पुत्रद वरुयकारकम्। विद्यापद कीर्तिकर सुकवित्वप्रदायकम्॥५०॥

सर्वसपत्प्रद सर्वभोगद सर्वसौख्यदम् । सर्वाभीष्ठप्रद चैव देव्या नामशतत्रयम् ॥५१॥

एनजापपरो भ्र्यान्नान्यदिच्छेत्कदाचन । एनत्कीनेनसतुष्टा श्रीदेवी ललिनाम्बिका॥

भक्तस्य यद्यदिष्ट खात्तत्तत्पूरयते ध्रुवम्। तसात्कुम्भोद्भव मुने कीर्तय त्विमद सदा॥ नापर किंचिदपि ते बोद्धव्य नावशिष्यते। इति ते कथित स्तोब ललिताप्रीतिदायकम् ॥ नाविद्यावेदिने ब्र्यान्नाभक्ताय कदाचन। न शठाय न दुष्टाय नाविश्वासाय कहिंचित् ॥ यो ब्र्याञ्चिशतीं नाम्ना तस्यानधीं महान्भवत् । इत्याज्ञा ज्ञाकरी प्राक्ता तस्माद्गोप्यमिद त्वया॥ ललितापेरितनैव मयोक्त स्तातमुक्तमम्। रहस्यनामसाहस्रादि गाप्यमिद् मुने ॥ ५७ ॥ एवमुक्त्या इयग्रीव कुम्भज तापसोत्तमम्। स्तोबेणानन ललितां स्तुत्वा विपुरसुन्दरीम् ॥ आनन्दलहरीमग्रमानसः ममवर्तत ॥ ५९ ॥

इति श्रीलिलतात्रिशतीस्तोत्र सपूर्णम् ॥



#### ॥ श्री ॥

## ॥ नामानुक्रमणिका ॥

	<b>विश्वम्</b>		पृष्ठम्
ईकाररूपा	999	इश्वरवस्त्रभा	984
ईक्षणसृष्टाण्डकोटि	984	<b>ईश्वरार्घाङ्गश</b> रीरा	996
ईक्षित्री	988	ईश्वरोत्सर्गानलया	190
ईडिता	१९५	इषात्स्मतानना	996
ईतिबाधाविनाशिनी	290	इहाविरहिता	196
ईहगित्यविनि <b>र्दे</b> श्या	984	एकप्राभवशालिनी	990
ईप्सितार्थप्रदायिनी	999	एकभाक्तमदर्चिता	1/1
ईशताण्डवसाक्षिणी	990	<b>एकभोगा</b>	974
ईशशक्ति	981	एकरसा	968
ईशाधिदेवता	१९६	एकवीरादिस <b>से</b> व्या	960
ईशानादिबसमयी	993	एकाक्षरी	904
<b>ई</b> ।शत्री	999	एकाग्रचित्तनिध्यीता	1/2
ईशित्वाचष्टसिद्धिदा	993	<b>एकातपत्रसाम्राज्यप्रदा</b>	160
ईश्वरत्वविधायिनी	993	एकानन्दाचदाकृति	909
ईश्वरप्रेरणकरी	998	एकानेकाक्षराकृति	१७७

#### ३०२ लिखतात्रिशती

	पृष्ठम्		वृष्ठम्
एगान्तप्।जता	111	क गालिप्राणनायिका	२२४
एकाररूपा	१७५	कमनीया	169
एकैश्वर्यप्रदायिना	8/8	<b>कमलाक्षा</b>	989
एजदनेकजगदीश्वरी	9/9	कम्बुकण्ठ।	२२६
<b>एतत्त</b> दित्यनिर्देश्या	906	<b>क्रम्र</b> नियहा	१७४
एथमानप्रभा	911	करनिर्जितपछवा	२२६
एन कुटविनाशिना	9/4	करभारु	२२३
एलासुगा धचिकुरा	918	करणामृतसागरा	१७०
एवमित्यागमाबोध्या	910	कर्प्रवीरीमौरभ्यकछोछि	992
एषणार्राइताहता	968	कर्मपलप्रदा	904
कजलाचना	9 6 3	कमादिनाक्षिणी	908
कदर्पजनकापाङ्गवीक्षणा	909	कलानाथमुरी	२२३
कदर्पावद्या	909	कलावती	988
ककाररूपा	988	कलालापा	२२६
ककाराथा	२२	कलिदाषहरा	903
ककारिणी	२६४	कल्पवल्लासमभुजा	<b>२२७</b>
कचाजताम्बुदा	२२३	कल्मषञ्जी	900
कटाक्षस्या दकरुणा	२२३	कल्याणगुणशालिनी	१६७
कठिनस्तनमण्डला	२२२	कल्याणशैलनिलया	१६८
कदम्बकाननावासा	909	कल्याणा	180
कदम्बकुसुमप्रिया	909	कल्या	२२२

	नामानुकमणिका ।		३०३	
	द्वस		पृष्ठम्	
कस्त्रीतिलकाञ्चिता	22/	कामश्वरालिङ्गिताङ्गी	२६७	
कारूक्षितार्थदा	२७०	कामश्वराह्वादकरी	२६९	
कान्ता	२२५	कामेश्वरी	200	
का तिधूतजपा गलि	२२६	कारियत्रा	808	
कामकाटिनिलया	२७	कारण्यविग्रहा	२२४	
कामसजीवनी	२२५	मालह त्री	२२१	
कामितार्थदा	229	का यलोला	286	
कामेशी	२२ १	रूपटा	२४३	
कामेशोत्सगवासिनी	२६७	लकाररूपा	986	
कामेश्वरगृहेश्वरा	<b>५६९</b>	लकारारया	२३६	
कामेश्वरतप सिद्धि	२६/	लकारिणी	२७१	
कामेश्वरप्रणयिनी	२०८	लकुलेश्वरी	र४३	
कामेश्वरप्राणनाडी	३६५	लक्षकाम्बण्डनायिका	२०१	
कामेश्वरप्राणनाथा	<b>५६८</b>	लक्षणागम्या	२०२	
कामेश्वरब्रह्मविन्त्रा	२६९	लक्षणोञ्ज्वलदिन्या <b>ङ्गी</b>	400	
कामश्वरमनाहरा	२६५	लक्ष्मणाग्रजपृजिता	२४०	
कामेश्वरमन प्रिया	२६८	लक्ष्मीव।णीनिषेविता	986	
कामेश्वरमहेश्वरी	२७०	लक्ष्याथा	२०१	
कामेश्वरविमोहिनी	२६८	लमचामरहस्तश्रीशार ०	२४१	
कामेश्वरविलासिनी	२६८	ल <b>घुसिद्धि</b> दा	२३९	
कामेश्वरसुखप्रदा	२६७	लङ्घयेतराजा	२३८	

## ३०४ ललितात्रिश्ती

	रुष्रम्		वहर्म
लंबाबा	408	ल धराक्ति	२७३
लजापदसमाराध्या	२४२	ल-घसपत्समुन्नात	488
<b>ह</b> तातनु	<b>3</b> 4	ल-धसुखा	२७७
लतापूज्या	<b>५३६</b>	लब्धहर्षाभिपूरिता	२७८
ल धकामा	<b>५०</b> ५	लब्धातिशयसर्वाङ्गसौ द	र्या २७०
<b>ल</b> ॰धदेहा	२७३	ल•धाहकारदुर्गमा	२७२
ल पधी	२७१	लब्धैश्वर्यसमुन्नति	२७४
ल धनानागमस्यिति	२७६	लम्या	2 8
लब्धपति	२७६	लभ्येतरा	२४०
लब्धपापमनोदूरा	२७५	लम्बिमुक्तालताञ्चिता	२ ३
लब्धमक्तिसुलभा	२४०	लम्बोदरप्रस्	208
लब्धभोगा	२७७	लयवर्जिता	5 8
लब्धमाना	483	लयस्थित्युद्भवश्वरी	२ ३ ६
लब्धयौवनशालिनी	२७७	ललनारूपा	909
लब्धरसा	288	ललतिकालसत्पाला	२०
लब्धरागा	२७६	ललाटनयनार्चिता	२००
लब्धरूपा	२७१	ललामराजदलिका -	२०३
लब्धलीला	५७५	ललिता	१९८
लब्धवाञ्चिता	२७२	लसद्दाडिमपाटला	999
ल•धविभ्रमा	२७६	लाकिनी	999
लब्धबृद्धि	२७४	लाक्षारससवर्णाभा	२३९

	३०५		
	पृष्ठम्		पृष्ठम्
लाङ्गलायुधा	२४१	समानाधिक नर्जिता	२६२
लामालामविवर्जिता	२३८	सर्वकर्ली	२१६
लावण्यशालिनी	256	सर्पगता	२१९
लास्यदर्शनसतुष्टा	२३७	सर्वज्ञा	<b>२</b> 9५
सगहीना	२६३	सर्वेप्रपञ्चनिमात्रा	२६२
सकला	२५८	सर्वभर्ती	२१६
सकलागमसस्तुता	२५६	सर्वभूषणभूषिता	२२०
सक्लाधिष्ठानरूपा	२६१	सर्वमङ्गला	२१५
सकलेष्टदा	२६३	सर्वमाता	299
सकाररूपा	२१५	सर्वविमोहिना	296
सकाराख्या	२५५		२५७
सगुणा	२६३		२१७
सिचदान दा	२५८	सर्वसौरयदात्री	296
सत्यरूपा	२६१	सर्वेह त्रा	२१६
सदसदाश्रया	२५७	सर्वाङ्गसु दरी	२१७
सदाशिवकुटुम्बिनी	२६०	सर्वात्मिका	२१७
सद्गतिदायिनी	२५९	सर्वाधारा	२१८
सनकादिमुनिध्येया	२६०	सर्वानवद्या	२१७
सनातना	२१६	सर्वोच्णा	२१९
समरसा	२५६	सर्वावगुणवर्जिता	२१९
समाकृति	२६१	सर्वेशी	२१५
10 22 0 0			

#### ३०६ छितात्रिशती-

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
सर्वोत्तुङ्गा	२६३	हरिब्रह्मे द्रवदिता	२११
साध्या	२५९	इरिसोदरी	२३४
<b>इसग</b> ति	२२८	हर्यक्षवाहना	२१२
इसम त्रार्थरूपिणी	२३३	<b>इ</b> र्थश्वाद्यमरार्चिता	२१४
हसवाहना	२१२	हर्षप्रदा	२३२
हकाररूपा	२११	हर्षिणी	२३४
हकारार्था	२२८	<b>इ</b> लधृक्पूजिता	२११
<b>ह</b> ठात्कारहतासुरा	२३१	<b>ह</b> ल्यवर्जिता	२३१
हतदानवा	२१३	हस्रीसलास्यसतुष्टा	२३३
<b>ह</b> त्यादिपापशमनी	293	<b>हविभों</b> क्री	२३२
हयमेधसमर्चिता	२१२	हस्तिकुम्भोत्तु <del>ङ</del> ्गकुचा	२१३
<b>इ</b> यारूढासेविताड्घि	२१२	<b>इस्तिक्रात्ति</b> प्रिया <b>ङ्ग</b> ना	२१३
हय्य <b>ङ्ग</b> वीनहृदया	२३५	हाकिनी	२३१
हरप्रिया	299	हाटकाभरणोज्ज्वला	२२९
हराराध्या	२११	हादिविद्या	२१४
<b>इ</b> रिकेशसखी	२१४	हानिवृद्धिविवर्जिता	२३५
हरिगोपारुणाशुका	२३६	हानोपादाननिर्भुक्ता	२३४
हरिणेक्षणा	211	हारहारिकुचाभोगा	२३०
इरित्पतिसमाराध्या	२३१	हार्दसतमसापहा	२३३
<b>इ</b> रिदश्वादिसेविता	२१३	हालामदालसा	२१४
<b>हरिद्राकुङ्कमादि</b> ग्धा	२१४	हाहाहूहूमुखस्तुत्या	२३५

;	नामनुक्रमणिका ।		
	पृष्ठम्		वृष्ठम्
र्री	२१०	ह्रीकारभास्कररुचि	२४८
ह्रींकारकमले दिरा	२७९	ह्रींकारमणिदीपार्चि	२७०
ह्रीकारक दरासिंही	२५३	ह्रींकारम त्रसर्वस्वा	२८९
हींकारक दाङ्करिका	२४९	ह्रींकारमन्त्रा	२०६
हींकारकुण्डाग्निशिखा	२४७	ह्रींकारमयसौवर्णस्तम्भवि ०	२८३
ट्रीकारकोशासिलता	२८१	<b>ह्रींकारमूर्ति</b>	२७८
ह्रींकारिचन्त्या	२१०	र्द् <u>र</u> ीकार <b>रू</b> पा	२०५
ह्रीकारजपसुप्रीता	२०७	ह्रींकारलक्षणा	२०६
हींकारतरुमञ्जरी	२५५	<b>ह्रीकारवाच्या</b>	२०९
ह्रीकारतस्शारिका	२८०	ह्रींकारवेदोपनिषत्	२८५
<b>हींकारदीर्घिका</b> हसी	२५०	ह्रींकारवेद्या	२०९
ह्रीकारदुग् <b>घा</b> िधसुधा	२७९	<b>ह्रींकारशशिच</b> द्रिका	२४७
ह्रींकारन दनारामनवक ०	२८७	हींकार <b>ञ्जक्तिकामुक्तामणि</b>	२८२
ह्रीकारनिलया	२०५	ह्रींकारसुमनामाध्वी	२५४
<b>हींकारपञ्जरशुकी</b>	२५२	ह्रीकारसैोधशृङ्गकपोतिका	२७८
ह्रींकारपरसौरयदा	२८९	ह्रीकारहिमवद्गञ्जा	२८८
ह्रीकारपूज्या	२०९	ह्रीकाराङ्गणदीपिका	२५२
ह्रींकारपीठिका	२०९	ह्रींकारादर्शविम्बिता	२८१
ह्रींकारपेटकमणि	२८०	<b>ड्रींकारा</b> द्या	२४५
<b>ट्राॅंकारबीजा</b>	२०५	ह्रीकाराध्वरदक्षिणा	२८६
ह्रीकारबोधिता	२८३	<b>ह्</b> र्वितारार्णवकौस्तुभा	२८८

#### ३०८ लखितात्रिशती

	वृष्ठम्		पृष्ठम्
ट्रीकाराम्मोजमृङ्गिका	२५३	ह्रापदप्रिया	२०७
हींकाराम्भोदचञ्चला	२४८	ह्रापदाभिधा	२०८
द्दीकारारण्यहरिणी	२५१	ह्रीपदाराध्या	२०८
ह्रींकारावालवछरी	२५२	ह्रींमती	२०७
ह्यंकारास्थाननर्तकी	२८१	ह्रीमध्या	२४५
<b>ड्रींकारि</b> णी	२४५	ह्रीविभूषणा	२०७
<b>ह्यंकारेकपरायणा</b>	२५०	ह्रींशरीरिणी	२१०
<b>ह्यां</b> कारोद्यानकेकिनी	२५०	ह्रींशिखामणि	२४६
ह्रांगर्भा	२०८	द्रींशीला	२०८

